www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 24 ■ 16-31 अक्टूबर, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

◆ बुराइयों से कैसे लड़ें ?	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ स्वस्थ जीवनशैली : ईमानदारी	*आचार्य महाश्रमण*	5
◆ देश में व्याप्त नासूर	*कुसुम जैन*	7
◆ दहेज जरूर दीजिए	*आशीष वशिष्ठ*	8
◆ परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी या प्रांतीय भाषाएं	*प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा*	10
◆ न छीनें बूढ़े माता-पिता से उनका हक	*प्रेम नारायण गुप्ता*	12
◆ तनाव मुक्ति हेतु सकारात्मक सोच अपनायें	*जनार्दन शर्मा*	13
◆ जैव विविधता का संरक्षण जरूरी	*नरेन्द्र देवांगन*	14
◆ साँपों की बारात में जीभों की लपालप	*रामस्वरूप रावतसरे*	17
◆ वितरण में विषमता	*सुषमा जैन*	18
◆ आत्मा का गमन	*आर.जे. मौर्य*	20
◆ अणुव्रत समिति मुंबई	--	23
◆ अणुव्रत समिति उदयपुर - शाहपुरा	--	24
◆ राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति - जयपुर	--	25
◆ अणुव्रत समिति राजसमंद - आसीन्द	--	26
◆ अणुव्रत समिति गंगापुर - सूरतगढ़	--	27
◆ अणुव्रत समिति बालोतरा - देवगढ़	--	28
◆ अणुव्रत समिति सायरा - पुर - छापर	--	29
◆ अणुव्रत समिति लाडनूं - कालांवली	--	30
◆ अणुव्रत समिति भिवानी	--	31
◆ अणुव्रत समिति टिटिलागढ़ - बोरड़ा - बाड़मेर	--	32
◆ अणुव्रत समिति नागपुर - मरोली	--	33
◆ गुजरात राज्य अणुव्रत समिति - दरभंगा जिला	--	34
◆ अणुव्रत समिति बाढ़ - कमलपुर	--	35
◆ अणुव्रत समिति कोयम्बटूर - हैदराबाद	--	36

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	6
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	11
◆ काव्य	19
◆ अणुव्रत आंदोलन	37-40

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत अधिवेशन का आह्वान

चरित्र निर्माण की दिशा में गतिशील अणुव्रत आंदोलन का 61 वां वार्षिक अधिवेशन अणुव्रत आंदोलन के उद्घोषणा स्थल सरदारशहर में युवा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 9, 10, 11 अक्टूबर 2010 को समायोजित हो रहा है। अणुव्रत के इतिहास में यह पहला अवसर है जब अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी और अणुव्रत दर्शन के व्याख्याता अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ सदेह हमारे मध्य नहीं हैं, लेकिन उनकी रश्मियां हमें प्रेरणा दे रही हैं। दोनों ही महापुरुषों ने श्रमसाध्य राष्ट्रव्यापी पद-यात्राएं कर अणुव्रत विचार को जन-जन तक पहुंचाकर स्वस्थ समाज संरचना का मार्ग प्रशस्त करते हुए युगीन दिशा बोध दिया।

सातवें दशक का प्रथम अणुव्रत अधिवेशन युवा संभावनाओं से अभिप्रेरित है। इस अवसर पर हमें देखना है कि हम कहां खड़े हैं? आज सर्वत्र कार्यकर्ताओं का अभाव दिखाई दे रहा है। हमारे पास नेता हैं, पदाधिकारी हैं पर परमार्थ भाव से काम करने वाले जीवनदानी कार्यकर्ता नहीं। यही वह बिन्दु है जहां आकर आंदोलन ठहर-सा गया है। हम सभी पदाधिकारी बनना चाहते हैं, कार्यकर्ता नहीं। कार्यकर्ताओं का गहराता अकाल अणुव्रत के कार्य को प्रभावित कर रहा है। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है, जिससे उबरने के लिए समाज सेवा की दिशा में रुचिशील युवाओं को आगे लाया जाये और नई कार्यकर्ता शक्ति खड़ी की जाए।

वर्तमान में जितने कार्यकर्ता हैं, उनमें भी आपसी सामंजस्य का अभाव है। व्यक्तिगत अहं तथा पदलिप्सा कार्य को कुंठित कर रही है। वैचारिक मतभेद करणीय कार्यों की क्रियान्विति में बाधक बन रहे हैं। हमारे दायित्व बोध एवं कर्तव्यनिष्ठा में भी कमी आई है। निराशा के इस वातावरण में अणुव्रत समितियां एवं केन्द्रीय अणुव्रती संस्थान शक्तिशाली बने इस दृष्टि से हमें निम्न बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा

- सभी स्थानीय, जिला, प्रांतीय अणुव्रत समितियां सुव्यवस्थित एवं सक्रिय हों।
- प्रत्येक अणुव्रत समिति का दो वर्ष उपरांत चुनाव हो एवं सभी कार्यकर्ताओं को नेतृत्व करने का अवसर मिले। एक ही व्यक्ति वर्षों तक अध्यक्ष, मंत्री या पदाधिकारी रह अणुव्रत समिति का नेतृत्व न करें।
- अणुव्रत महासमिति के निर्देशों का पालन जागरूकता के साथ हो।
- प्रत्येक अणुव्रत समिति में अणुव्रत साहित्य हो तथा अणुव्रत वाचनालय चलाने की व्यवस्था हो।
- कार्यकर्ताओं को सम्मान की दृष्टि से आंका जाये। पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के बीच कोई भेदरेखा न हो।
- स्थानीय संघीय संस्थान, स्थानीय अणुव्रत समिति को तन-मन-धन से सहयोग करें।
- सेवाभावना, प्रामाणिकता, सहिष्णुता, विनम्रता आदि गुणों से युक्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता ही समाज का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं। अतः अणुव्रत समितियों का नेतृत्व उक्त गुणों से युक्त व्यक्तियों के हाथों में ही हो।
- अणुव्रत से जुड़ी तीनों केन्द्रीय संस्थानों के पदाधिकारी आपसी मतभेदों को भुलाकर नई शुरुआत करें और एक-दूसरे का सहयोग करते हुए अणुव्रत आंदोलन की सर्व प्रवृत्तियों के सुचारु संचालन की दिशा में अग्रगामी बनें।
- अणुव्रत की बिखरी कार्यकर्ता-शक्ति को एक सूत्र में पिरोने के लिए केन्द्रीय पदाधिकारी नियमित रूप से संगठन यात्रा करें ताकि कार्यकर्ताओं के साथ पारिवारिक सम्पर्क बने।
- चारों दिशाओं में चार अणुव्रत केन्द्रों की स्थापना हो। अणुव्रत केन्द्रों से तीनों केन्द्रीय संस्थाओं की प्रवृत्तियां उस क्षेत्र में एक साथ संचालित हों।

61 वें अणुव्रत अधिवेशन एवं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष का यही आह्वान है जिसे हम समझें और अणुव्रत के भाल पर उदित हुए नये आध्यात्मिक सूर्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के हाथों को मजबूती देते हुए उनके सपनों को साकार करने की दिशा में कूच करें।

• डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

बुराइयों से कैसे लड़ें?

आचार्य महाप्रज्ञ

महावीर का आत्मयुद्ध का संदेश मानवीय चेतना या मानवीय चिंतन के विकास का सबसे बड़ा उपक्रम है। निठल्ला बैठना, कायर होकर बैठना महावीर जैसे पराक्रमी व्यक्ति को पसंद नहीं था। पराक्रमी व्यक्ति कभी निकम्मा बैठना पसंद नहीं करता, खाली होकर बैठना पसंद नहीं करता। वह हमेशा कुछ न कुछ करता रहता है। यह आत्मयुद्ध पराक्रमी व्यक्ति ही कर सकता है। इसमें जो व्यक्ति आता है, वह स्वयं सुखी बनता है और दूसरों को भी सुख बांटता है। 'आत्मना युद्धस्व' यह अध्यात्म का महत्वपूर्ण सूत्र है। इसकी गहराई में जाना, इसको जीना अपने आपको विजयी बनाना है। इस विजय में इन्द्रिय-विजय और मनोविजय दोनों सहज उपलब्ध हो जाती है।

जो युद्ध समर भूमि में लड़ा जाता है, उसमें व्यक्ति दूसरों के जीवन के साथ खेलता है। उसमें हारने वाला तो हारता ही है, जीतने वाला भी हार जाता है। उस युद्ध से व्यक्ति स्वयं दुःखी बनता है और सारे संसार को दुःखी बना देता है। दूसरे महायुद्ध से पहले अधिक महंगाई नहीं थी, कठिनाई नहीं थी। द्वितीय महायुद्ध के बाद लोगों की कठिनाइयां बढ़ गईं, वस्तुओं के भाव यकायक बढ़ गए। महायुद्ध के बाद सारी स्थितियां बदल गईं, जीवन-निर्वाह दूभर होता चला गया। इतिहासवेत्ता जानते हैं महाभारत से पहले जो हिन्दुस्तान था, वह बहुत समृद्ध हिन्दुस्तान था। विद्या, बुद्धि, वैभव आदि से समृद्ध था, मंत्र, यंत्र, से संपन्न था। महाभारत के बाद हिन्दुस्तान का नक्शा बदल गया। महाभारत के पूर्व और महाभारत के बाद के हिन्दुस्तान में आकाश-पाताल जितना अन्तर आ गया। महाभारत युद्ध से अनेक विद्याएं लुप्त हो गई, बड़े-बड़े विद्याधर, अनेक विद्याओं के मर्मज्ञ मनुष्य समाप्त हो गए। आज अणुबम बहुत खतरनाक माना जाता है। उस समय ब्रह्मास्त्र कम खतरनाक नहीं था। एक प्रकार से मानना चाहिए महाभारत के युद्ध में शक्तियों का लोप ही नहीं हुआ, हिन्दुस्तान की आत्मा भी चली गई। युद्ध के बाद दुनिया में सुख नहीं बढ़ता है। यह एक सच्चाई है।

मनोविज्ञान में मनोरचना के अनेक प्रकार बतलाए गए हैं। इनमें से तीन प्रमुख हैं

1 अवदमन (रिप्रेशन)
2 शमन (सप्रेशन)
3 उन्नयन (सब्लिमेशन)

मनोरचना का पहला प्रकार है अवदमन। एक सामाजिक प्राणी हर कोई काम नहीं कर सकता। समाज में रहने वाला, सामाजिक जीवन जीने वाला व्यक्ति चाहे जैसा नहीं कर सकता। व्यक्ति के मन में बहुत सारी तरंगें पैदा होती हैं, अनेक प्रकार की कल्पनाएं और विचार पैदा होते हैं। किन्तु जो मन में आता है उसे वह करता नहीं है। व्यक्ति के मन में जो आए उसे वह करता चला जाए तो वह सामाजिक दृष्टि से पागल कहलाएगा। सामाजिक व्यक्ति में सहज नियंत्रण होता है। समाज का मतलब है नियंत्रण। समाज बना, साथ-साथ नियंत्रण ने भी जन्म लिया। एक व्यक्ति कुलीन परिवार का है, उस परिवार में शराब को हेय माना जाता है। व्यक्ति के मन में विचार आया मुझे शराब पीना है। मन में यह भाव आ गया किन्तु वह शराब पी नहीं सकता। वह सोचता है घर का अमुक सदस्य देख रहा है, अमुक व्यक्ति देख रहा है इसलिए शराब पीना उचित नहीं है। मन में जो भाव जगा, आकांक्षा पैदा हुई, वह पूरी नहीं हुई। वह अकेला नहीं था, उसके साथ दूसरा व्यक्ति था इसलिए उसे अपनी आकांक्षा को दबाना पड़ा। उसकी आकांक्षा समाप्त नहीं हुई। वह दमित भावना, दमित आकांक्षा स्थूल चेतना से हटकर अवचेतन जगत् में चली जाती है, अवदमित हो जाती है। एक वृत्ति का दमन हो गया, इसका मतलब है वह उस समय उस बुराई से बच गया। बचने का निमित्त चाहे कुछ बना किन्तु बचाव हो गया।

मनोविज्ञान की भाषा में आत्मशुद्ध का दूसरा प्रकार है शमन-सप्रेशन। मनुष्य में थोड़ा विवेक जाग जाता है। वह सोचता है यह काम करना अच्छा नहीं है, जुआ खेलना अच्छा नहीं है। मैंने पढ़ा है बहुत काम-वासना से भयंकर बीमारियां पैदा हो जाती हैं। इस प्रकार का विचार मनुष्य के मानस में उपजता है और वह उस बुराई से अपना बचाव करता है। अपने बचाव के लिए, आत्म-रक्षा के लिए इस प्रकार की मनोरचना की निर्मित शमन-सप्रेशन है।

आत्मयुद्ध का तीसरा प्रकार है उन्नयन-उदात्तीकरण, एक वृत्ति को उदात्त बना लेना। मन बार-बार बुरे विचारों में जा रहा था, बुरी भावनाएं जन्म ले रही

www.terapanthinfo.com

थीं। एक आलंबन मिला स्वाध्याय का। व्यक्ति ने संकल्प किया प्रतिदिन पांच घंटा स्वाध्याय में लगाना है। इस सूत्र को पकड़कर वह स्वाध्याय में लग गया। दिन भर उठने वाले बुरे विचार, बुरी कल्पनाएं बंद हो गईं। बुराई से बचने के लिए वृत्ति का रूपांतरण करना उदात्तीकरण है।

बुराई से बचने का मतलब है अपने आप से लड़ना, अपने आपसे संघर्ष करना, युद्ध करना। अध्यात्म में बुराई से निवृत्त होने के अनेक उपाय निर्दिष्ट हैं। आत्मयुद्ध के पांच प्रकार हैं संकल्प, शमन, ज्ञाता-द्रष्टा भाव, स्मरण, प्रतिक्रमण।

आत्मयुद्ध का पहला प्रकार है संकल्प। संकल्प का प्रयोग करना यानी अपनी संकल्प शक्ति को बढ़ा लेना, जिससे व्यक्ति इन्द्रियों और संवेगों के साथ लड़ सके, कषायों के साथ युद्ध कर सके। 'इयाणिं नो' अब नहीं करूंगा, यह संकल्प आत्मयुद्ध का पहला अस्त्र है। जिस व्यक्ति को यह अस्त्र प्राप्त होता है वह अपने आपको बचा सकता है।

आत्मयुद्ध का दूसरा प्रकार है शमन करना। जैसे मनोविज्ञान में दो प्रक्रियाएं निर्दिष्ट हैं वैसे ही अध्यात्म के क्षेत्र में भी दो प्रक्रियाएं है एक उपशमन की प्रक्रिया और दूसरी क्षयीकरण की प्रक्रिया। मनोविज्ञान में दबाने की प्रक्रिया बतलाई गई है। अध्यात्म के क्षेत्र में भी दबाने की प्रक्रिया मान्य है। किसी वृत्ति का एक साथ क्षय हो जाए, यह जरूरी नहीं है। उसका क्षय न हो तो कम-से-कम उसे खुला मत छोड़ो, उसका नियंत्रण करो, दबाओ। दबाने से भी वृत्ति में बड़ा अन्तर आ सकता है।

आत्मयुद्ध का तीसरा उपाय है ज्ञाता-द्रष्टा भाव। जैसे-जैसे ज्ञाता द्रष्टाभाव का विकास होगा, आत्मयुद्ध की लड़ाई तेज बन जाएगी। मैं भोक्ता नहीं हूं, मैं द्रष्टा हूं। इस चेतना का जैसे-जैसे विकास होगा, आत्मयुद्ध अधिक प्रखर बन जाएगा, विजय की संभावना प्रबल बन जाएगी।

आत्मयुद्ध का चौथा उपाय है सतत स्मृति, सतत जागरूकता। बौद्ध साहित्य का महत्वपूर्ण शब्द है स्मृति प्रस्थान। व्यक्ति को निरन्तर अपनी स्मृति रहे, वह अपने प्रति निरन्तर जागरूक रहे। वह सोचे मैं इन्द्रियां नहीं हूं, मैं मन नहीं हूं। मैं कषाय नहीं हूं। आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में इस विषय पर बहुत प्रकाश डाला है। समयसार में नीतिवाद का एक पूरा प्रकरण है मैं क्रोध नहीं हूं, मैं मान नहीं हूं, मैं माया नहीं हूं, मैं लोभ नहीं हूं, मैं यहां नहीं हूं, मैं वह नहीं हूं। नेति-नेति करते चले जाएं मैं राग नहीं हूं, मैं द्वेष नहीं हूं, मैं ईर्ष्या नहीं हूं, मैं घृणा नहीं हूं। नेति-नेति करते-करते शेष रहेगा केवल चैतन्य। मैं चैतन्य हूं, केवल चैतन्य हूं और कुछ नहीं। यह सतत स्मृति आत्मयुद्ध का एक प्रकार है। उपनिषद में नेतिवाद का विशद वर्णन है। आचारांग में भी नेतिवाद का पूरा प्रकरण है। इस नेतिवाद की सतत स्मृति अपने चैतन्य की स्मृति है।

आत्मयुद्ध का पांचवां उपाय है प्रतिक्रमण। मुड़कर देखना भी जरूरी है। प्रतिक्रमण में व्यक्ति सोचता है मैं क्या था, क्या हूं और मुझे क्या होना है, प्रतिक्रमण का अर्थ है जिस स्थिति को स्वीकारा, आत्मयुद्ध को स्वीकारा, उस भूमिका पर पहुंचकर समग्र रूप से अपना विश्लेषण करना। प्रतिक्रमण नहीं होता है तो कभी-कभी शिथिलता आ जाती है, कमजोरी आ जाती है, रसद की कमी भी हो जाती है। जब दूसरा महायुद्ध चल रहा था तब बार-बार रेडियो में एक स्वर सुनाई देता आज ब्रिटेन की सेना बड़ी बहादुरी से पीछे हटी। पीछे भी हटी किन्तु बहादुरी के साथ। यह स्वर बहुत विचित्र लगता। पूछा गया भाई, पीछे हटने में कौन-सी बहादुरी है? इसका स्पष्टीकरण दिया जाता यह भी रणनीति का एक महत्वपूर्ण अंग है। आत्मयुद्ध की लड़ाई में कभी-कभी बहादुरी से पीछे हटना भी जरूरी है और इसी का नाम प्रतिक्रमण है।

महावीर का आत्मयुद्ध का यह संदेश मानवीय चेतना या मानवीय चिंतन के विकास का सबसे बड़ा उपक्रम है। निठल्ला बैठना, कायर होकर बैठना महावीर जैसे पराक्रमी व्यक्ति को पसंद नहीं था। पराक्रमी व्यक्ति कभी निकम्मा बैठना पसंद नहीं करता, खाली होकर बैठना पसंद नहीं करता। वह हमेशा कुछ न कुछ करता रहता है। यह आत्मयुद्ध पराक्रमी व्यक्ति ही कर सकता है। इसमें जो व्यक्ति आता है, वह स्वयं सुखी बनता है और दूसरों को भी सुख बांटता है। 'आत्मना युद्धस्व' यह अध्यात्म का महत्वपूर्ण सूत्र है। इसकी गहराई में जाना, इसको जीना अपने आपको विजयी बनाना है। इस विजय में इन्द्रिय-विजय और मनोविजय दोनों सहज उपलब्ध हो जाती है।

राष्ट्र के संकट को समाधान देने वाला आंदोलन है अणुव्रत

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● **दूरभाष : 22809695**

www.terapanthinfo.com

आदमी के भीतर ईमानदारी के प्रति आस्था का भाव जागे। जिस तत्त्व के प्रति आस्था होती है, उसको जीवन में उतारना आसान हो सकता है। जिसके प्रति आस्था, श्रद्धा ही न हो, उसको जीवन में उतारना कठिन होता है। आदमी स्वयं आत्म-विश्लेषण करे कि मेरे जीवन में ईमानदारी किस सीमा तक है? हालांकि थोड़ा संघर्ष झेलना पड़ सकता है, कष्ट आ सकते हैं, किन्तु आदमी का मनोबल हो, संकल्प हो, कष्ट झेलना मंजूर कर ले पर ईमानदारी को छोड़ना मंजूर न करे। ऐसा संकल्प हर आदमी का हो जाए तो समाज का नव-निर्माण हो सकता है। समाज का कायाकल्प हो सकता है।

स्वस्थ जीवनशैली : ईमानदारी

आचार्य महाश्रमण

हम सभी जीवन जी रहे हैं। छोटे-छोटे प्राणी भी जीवन जीते हैं। एक चींटी भी जीवन जीती है। पेड़-पौधे भी जीवनयापन करते हैं। प्रश्न हो सकता है, जीवन क्या है? जीवन की परिभाषा क्या है? मैंने इस प्रश्न पर विचार किया। मेरे मस्तिष्क से मुझे जो उत्तर मिला, वह संतोषप्रद लगा। वह उत्तर यह है, जहां आत्मा और शरीर, दोनों का योग होता है, उस स्थिति को जीवन कहते हैं। जहां केवल आत्मा है, शरीर नहीं है तो वहां जीवन जैसी कोई बात नहीं है। जहां केवल शरीर है, आत्मा नहीं है वहां भी जीवन नहीं हो सकता। जैसे मृत शरीर कहीं पड़ा है, आत्मा नहीं है, यानी जीवन-लीला समाप्त हो चुकी है तो फिर जीवन शेष नहीं रहता। आत्मा और शरीर का संयोग ही जीवन है।

हम सबको जीवन प्राप्त है। हमारा प्रयास यह रहे कि हमारा जीवन सार्थक बने, सफल बने। आदमी को आदमियत का एहसास हो। इंसान में इंसानियत का जागरण हो। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों में 'मानव का दानव बन जाना ही उसकी पराजय है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मानव का मानव होना उसकी विजय है।' जीवन जीना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है कलात्मक जीवन जीना। जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है जीने की कला सीख लेना। व्यक्ति अनेक कलाओं में निष्णात बनने के बाद भी यदि जीने की कला को, धर्म की कला को नहीं सीखता है, तो मानना चाहिए उसने कुछ भी नहीं सीखा। धर्म यदि आचार में नहीं आया, व्यवहार में नहीं उतरा तो जीवन की सार्थकता में प्रश्नचिह्न लग सकता है।

धर्म के अनेक प्रकार हैं, अनेक सूत्र हैं। उनमें से एक सूत्र है ईमानदारी। ईमानदारी एक ऐसा धर्म है, जिसे हर वर्ग का आदमी स्वीकार कर सकता है। भले ही कोई आदमी आस्तिक हो, आत्मा परमात्मा, स्वर्ग-नरक को मानने वाला हो अथवा नास्तिक हो, आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक को न मानने वाला हो। दोनों के लिए ईमानदारी आवश्यक है, उपयोगी है। जो आदमी आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप को मानता हो, उसको तो ईमानदारी का फल अच्छा मिलेगा ही। उसकी आत्मा शुद्ध बनेगी। जो व्यक्ति पुण्य-पाप आदि को नहीं मानता, परलोक को नहीं मानता, उसके लिए भी ईमानदारी लाभदायी है। इस लोक के कल्याण के लिए, इस जीवन के उद्धार के लिए, समाज की भलाई के लिए भी आदमी को ईमानदारी के रास्ते पर चलना चाहिए।

ईमानदारी वह मार्ग है जिस पर चलने से व्यक्ति का भी भला होता है और समष्टि का भी भला होता है। अगर समाज में धोखाधड़ी चलती रहेगी, हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगता रहेगा तो समाज सुख से कैसे जी पाएगा? आप कल्पना करें किसान अनाज बेचता है। अगर अनाज खराब बेचेगा तो समाज का स्वास्थ्य खराब हो जाएगा। एक व्यापारी माल बेचता है। खराब माल बेचेगा, मिलावटी माल बेचेगा तो समाज पर बुरा असर पड़ेगा। एक कैमिस्ट दवा बेचता है। अगर वह दवा बेचने में गड़बड़ी करेगा तो उसका नुकसान भी समाज को ही होगा। अगर

www.terapanthinfo.com

हर व्यक्ति ईमानदार है तो सुख किसको मिलेगा? समाज को ही मिलेगा। विचारक राबर्ट्सन के शब्दों में 'सफलता उन्हें पारितोषिक रूप में मिलती है जो अपने काम में ईमानदार हैं, जिन्हें अपने काम से प्यार है।'

अमेरिका का हार्वर्ड विश्वविद्यालय संसार का विख्यात संस्थान है। इस विद्यालय की व्यायामशाला बहुत प्रसिद्ध है। उसके निर्देशक प्रो. सार्जेन्ट थे। उन्होंने इसी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित वाडीटेन कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की थी। उनकी व्यायामशाला में बहुत रुचि थी, इसलिए उन्हें व्यायामशाला का निर्देशक बना दिया गया। उस समय सार्जेन्ट को केवल पांच डॉलर प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। इतने कम वेतन पर भी सार्जेन्ट प्रसन्नतापूर्वक अपना काम करता रहा। एक साल के बाद वहां एक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। सार्जेन्ट ने अपनी व्यायामशाला का स्टॉल कुछ इस ढंग से लगाया कि देखने वालों की लाइनें लग गईं। उसके स्टॉल को प्रथम पुरस्कार दिया गया। इसके साथ ही सार्जेन्ट का वेतन भी 60 डालर प्रति सप्ताह कर दिया गया। जब सार्जेन्ट से इस अप्रत्याशित प्रगति के बारे में पूछा गया तब उसने बताया 'मैं केवल 5 डॉलर प्रति सप्ताह वेतन पर काम कर रहा था। मुझे इसका दुःख या शिकायत नहीं थी। मैं ईमानदारी से अपना कार्य कर रहा था और अवसर पकड़ने के इंतजार में था। यह अवसर मुझे प्रदर्शनी के दौरान मिला और मैं बाजी मार ले गया।'

महत्त्व पैसे का नहीं, काम का होता है। ईमानदारी से किया गया काम प्रगति की ओर ले जाता है। अंग्रेजी भाषा का सूक्त है 'ऑनेस्टी इज दी बेस्ट पालिसी'। सूत्र बढ़िया है। इसको बोलना भी अच्छा है, याद करना भी अच्छा है, किन्तु सबसे ज्यादा अच्छा है, इसको जीवन में उतारना। ईमानदारी आदमी के जीवन में आ जाए, जन-जन में नैतिकता का जागरण हो, ईमानदारी के भाव विकसित हो तो आदमी अच्छा जीवन जी सकता है, समाज अच्छा बन सकता है और स्वस्थ समाज की रचना संभव हो सकती है।

आदमी के भीतर ईमानदारी के प्रति आस्था का भाव जागे। जिस तत्त्व के प्रति आस्था होती है, उसको जीवन में उतारना आसान हो सकता है। जिसके प्रति आस्था, श्रद्धा ही न हो, उसको जीवन में उतारना कठिन होता है। आदमी स्वयं आत्म-विश्लेषण करे कि मेरे जीवन में ईमानदारी किस सीमा तक है? हालांकि थोड़ा संघर्ष झेलना पड़ सकता है, कष्ट आ सकते हैं, किन्तु आदमी का मनोबल हो, संकल्प हो, कष्ट झेलना मंजूर कर ले पर ईमानदारी को छोड़ना मंजूर न करे। ऐसा संकल्प हर आदमी का हो जाए तो समाज का नव-निर्माण हो सकता है। समाज का कायाकल्प हो सकता है।

राष्ट्र चिन्तन

◆ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की कायापलट का ऐलान किया गया है। सन् 2020 में यह विश्व के सर्वश्रेष्ठ दस चिकित्सा विश्वविद्यालयों में गिना जाएगा। हालांकि यह बेहद कठिन चुनौतिपूर्ण कार्य है, लेकिन असंभव नहीं। सरकार की तरफ से हर संभव प्रयास किए जाएंगे। इस दिशा में शुरुआत कर दी गयी है तथा एम्स के प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने के लिए आई.आई.एम. अहमदाबाद के विशेषज्ञों की मदद ली जा रही है। एम्स को विश्व-स्तरीय बनाने के लिए वलियानाथन कमेटी की रिपोर्ट को अच्छी रिपोर्ट माना गया है। समिति की सिफारिशों पर अमल से एम्स में रिफॉर्म होंगे और विश्वस्तरीय बनाने में मदद मिलेगी। पी.एम. के संबोधन पर एम्स में तीखी प्रतिक्रिया है। माना जा रहा है कि इन सिफारिशों के जरिये एम्स में निजी क्षेत्र का दखल बढ़ेगा। सरकार की कोशिश है कि एम्स को और स्वायत्तता दी जाए और एम्स अपना खर्च स्वयं ही जुटाए। चिकित्सा क्षेत्र में विभिन्न किस्म के पेशेवरों की कमी भी चिंता का विषय है।

डॉ. मनमोहन सिंह, *प्रधानमंत्री*

◆ प्रधानमंत्री सहित सभी दलों और धर्मों के नेताओं द्वारा अयोध्या विवाद पर आये कोर्ट के फैसले पर लोगों से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा गया है कि इस फैसले को किसी भी पक्ष द्वारा हार-जीत से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। देश अब 1992 से काफी आगे बढ़ चुका है। खासतौर पर 1992 के बाद पैदा हुए युवाओं की सोच और नजरिया बिलकुल अलग है। हाई कोर्ट का फैसला आने में एक सप्ताह का जो समय बढ़ा उससे काफी लाभ हुआ है। इस अवधि में सभी दलों, संगठनों, नेताओं और लोगों को यह दोहराने का मौका मिल गया कि वे कोर्ट के फैंसले का सम्मान करेंगे। विवाद से जुड़े सभी पक्ष भी यही कह रहे हैं कि कोर्ट के फैसले का सम्मान करेंगे। अगर जरूरी होता तो वे अपने मामले को कानून के अनुसार आगे बढ़ाएंगे। सरकार ने एस.एम.एस. पर प्रतिबंध लगाया है जो अगले आदेश तक जारी रहेगा।

पी. चिदंबरम, *गृहमंत्री*

www.terapanthinfo.com

देश में व्याप्त नासूर

कुसुम जैन

आज राजनीति सेवा का पर्याय नहीं, एक व्यवसाय बन गया है। राजनीति के व्यवसायीकरण के रूप में हुए अवमूल्यन की एक गंभीर किन्तु रोचक कहानी है। हुआ यों कि जब हमने सत्ता प्राप्ति के बाद येन-केन-प्रकारेण कुर्सी को किसी भी प्रकार से हड़पने की कौशिश की तो अपने चारों ओर फैले अनैतिक साधनों का भरपूर उपयोग करने लगे। धीरे-धीरे ये अनैतिक माध्यम हमारे ऊपर इतने हावी हो गये कि ये सेवक के रूप में नहीं स्वामी के रूप में मंडराने लगे। **आज राजनीति जगत में अपराधी जगत के शिरोमणि ही आसन जमाये दिखते हैं। कहीं कोई भूला-भटका, साफ-सुथरी छवि का व्यक्ति नजर भी आता है तो गहराई में जाने पर हम यही पाते हैं कि वह भी इनकी ही गिरफ्त में है।**

व्यक्ति सत्य के मार्ग से क्यों भटक जाता है, यदि हम इसे मूल को खोजने का प्रयास करें तो निष्कर्ष निकलेगा जीवन में सबसे घातक है अहं को पालना, उसका पोषण करना। उच्च से उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति जब अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरी करना चाहता है तो अपने सिद्धांतों और आदर्शों को एक किनारे रख देता है। धर्म, राजनीति, साहित्य सभी क्षेत्रों के शिखर पुरुष यश की भूख की चपेट में हैं।

व्यक्ति में आत्म-सम्मान होना ही चाहिए। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी रहना चाहिए। पर यदि हम केवल अधिकारों की ही बात करें और अपने कर्त्तव्यों से मुँह मोड़ लें तो यह तो गलत ही होगा। केवल अपने को ही महान, बुद्धिमान और दूसरों को महामूर्ख समझें। अपनी सात पीढ़ियों के लिए सम्पत्ति-संग्रह की ललक सदैव बनी रहती है और व्यक्ति को जैसे ही मौका मिलता है, नैतिकता को एक ओर धकेलकर, अनैतिकता में लिप्त हो जाता है। इसी मानसिकता के कारण 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला भारत आज किस स्थिति में है, यह लिखने का विषय नहीं है, सब अच्छी तरह से जानते हैं। देश का हर नागरिक, विदेशी कर्जे के ऋण को अपने सिर पर रखे ढो रहा है।

आइये, दूसरी ओर चलें और विचार करें कि आखिर हमने ऐसी कौन-कौन-सी भूलें की, जिसके कारण हमारी यह दुर्दशा हुई। जब हम अंग्रेजी की दासता से मुक्त हुए थे, उस समय हमें अपनी पहचान वापिस मिलनी चाहिए थी? लेकिन ऐसा नहीं हुआ? क्या संस्कृत भाषा के महत्व को नकारा जा सकता है। जिस भाषा को अनिवार्य रूप से यहां के वैज्ञानिकों की भाषा होना चाहिए था, वह मात्र पंडों-पुजारियों की भाषा बनकर रह गई। हमने नैतिक शिक्षा को बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया, जो उनको संस्कारित बना सकती। यदि कहीं नैतिक शिक्षा का ढोल पीटा गया तो मात्र क्रियाकांडों की शिक्षा देकर हमने अपनी मूछों पर ताव दिया कि हमने तो बहुत बड़ा तीर मार लिया। जबकि धर्म का, नैतिक शिक्षा का पहला पाठ व्यक्ति को उसके कर्त्तव्यों, उसके दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने का होना चाहिए। इसके बिना हम नैतिकता की पहली सीढ़ी भी नहीं चढ़ सकते।

हमने शिक्षकों के चयन में भी पूर्ण सतर्कता नहीं बरती। हमने भाई-भतीजावाद के व्यामोह से त्रसित होकर ऐसे लाखों लोगों को इस महत्वपूर्ण संवेदनशील पद पर बिठा दिया जो इसके बिलकुल योग्य नहीं थे। वस्तुतः वही शिक्षक, बच्चों के माध्यम से देश का, देश के भविष्य का सही अर्थों में निर्माण कर सकता है जो पूर्ण निष्ठा से इस क्षेत्र में समर्पित हो, उसमें व्यावसायिकता का अंकुर न फूटा हो। हम शिक्षकों के लिए उच्चतर स्तर की सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पाये। अतः प्रतिभाशाली लोग इस क्षेत्र में आने से कतराने लगे। और जब कहीं नौकरी नहीं मिली तो ही 'मास्टर' की नौकरी को स्वीकार किया। इस प्रकार इस क्षेत्र में अक्षम लोगों का बाहुल्य हो गया और हमारी शिक्षा-व्यवस्था चरमरा गई।

हम कितने ही बड़े से बड़े आंकड़े क्यों न प्रस्तुत कर दें पर शिक्षा जगत में हुए ह्रास को हम झुठला नहीं सकते। आज साक्षरता के नाम पर 'सर्व शिक्षा अभियान' पर अरबों-खरबों की राशि स्वाहा हो रही है पर सफलता नगण्य है। इसका कारण देश में कैंसर की तरह पनप गया नासूर भ्रष्टाचार है। सरकारी खजाने से चला सौ रुपये नोट का दसवां भाग ही शायद सही रूप और सही कार्य में खर्च हो पाता है।

प्रश्न है? भ्रष्टाचार कहां से शुरू होता है। मेरी निजी मान्यता है कि यह ऊपर से आता है। जब हमारे राजनेता मोटी-मोटी रकमें लेकर नियुक्ति करेंगे तो जिसने एक करोड़ दिया है, उसकी निगाह हर समय सौ करोड़ इकट्ठा करने पर होंगी। उसे किसका भय होगा, वह कार्य क्यों करेगा। **आज 'रिश्वत' शब्द ही समाप्त हो गया है उसका नाम 'सेवा भत्ता' हो गया है। बिना 'सेवा भत्ता' के इस देश में अब कोई सरकारी काम हो ही नहीं सकता।** कितनी बुरी स्थिति हो गई है। क्या इसीलिए हमने आजादी हासिल की थी?

इस भ्रष्टाचार को नासूर बना देने में धर्म और राजनीति के अनैतिक गठबंधन की प्रभावशाली भूमिका है। आज राजनीति में धर्म को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे यदि कोई नेता धर्म की दुहाई देकर आम आदमी को दिग्भ्रमित करने या साम्प्रदायिकता भड़काने का प्रयास करें तो शायद लोग उसकी बातों

शेष पृष्ठ 9 पर...

www.terapanthinfo.com

कुप्रथा

दहेज जरूर दीजिए

आशीष वशिष्ठ

'प्रोवोक' अर्थात किसी को उकसाना कानून की नजर में अपराध है। **'प्रोवोक एडवरटाइजिंग'** का जो नया ट्रेंड हमारे देश में चल रहा है वो पूरे समाज पर विषम व नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। एक तरफ तो सरकार ने दहेज विरोधी अधिनियम बनाए हैं वहीं दूसरी ओर इस तरह के विज्ञापन बिना किसी रोक-टोक के प्रसारित व प्रकाशित हो रहे हैं। देखा जाए तो ये उत्पादक खुले आम सीना खोलकर कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं व पूरी सोसायटी में एक मैसेज जा रहा है कि फलां गाड़ी के बिना लड़की विदा कैसे होगी। फलां कंपनी की घड़ी या कपड़ा पहने बिना भला कोई दूल्हा-दुल्हन कैसे बन पाएगा। फलां टीवी, फ्रीज या फलां उत्पाद देकर ही बेटी के हाथ पीले करो वरना शादी ब्याह अधूरा है और जीवन रंगहीन व रसहीन है।

उपभोक्तावादी संस्कृति व प्रदर्शन ने इस समस्या को बढ़ाया है। आज साधारण से साधारण शादी पर दो से चार लाख का खर्च आता है। समाज की देखा-देखी व झूठी शान रखने के लिए माता-पिता व अभिभावक कर्ज लेकर अपनी बेटी के हाथ पीले करते हैं। लंबी-चौड़ी लिस्टे बजट बढ़ाती है। वहीं ससुराल पक्ष का मुंह भी सुरसा के समान बढ़ता ही चला जाता है। परतंत्रता काल में जहां इस बुराई की तेजी से वृद्धि हुई, वहीं स्वतंत्रता पश्चात् भी इस पर लगाम नहीं लगाई जा सकी। इतना ही नहीं यह बढ़ते भौतिकतावादी दृष्टिकोण के कारण और बढ़ती जा रही है। इसका सबसे अधिक कुप्रभाव शिक्षित मध्यम वर्ग पर पड़ रहा है। यह वर्ग उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम हैं। इसकी महत्वाकांक्षाए तेजी से बढ़ रही है। जीवन के भौतिक सुख सुविधाएं जुटाने के लिए दहेज भी एक माध्यम बनता जा रहा है। अतः इस वर्ग में दहेज की समस्या ज्यादा विकट है। बढ़ती हुई दहेज की मांग के कारण लड़कियों का विवाह एक समस्या बन गई है। शादी के दौरान तथा बाद में भी लड़कियों तथा उनके माता-पिता को अपमान सहना पड़ता है। इससे लड़कियों के मन में यह बात घर कर जाती है कि वे परिवार के लिए बोझ हैं तथा माता-पिता के लिए समस्या बन गई है। इसकी चरम परिणति कभी-कभी लड़कियों द्वारा आत्महत्याओं में होती है। इसी हीन भावना का शिकार होकर प्रतिक्रिया स्वरूप परिवार लड़की के जन्म पर खुशी न मनाकर दुखी होता है।

मन में नयी आवश्यकताओं का भाव भरने, उपभोक्ता के रूप में व्यवहार करने के लिए लोगों को सीख देने, मनुष्य के मूल्यों को बदलने और इस प्रकार सम्भावित प्राचुर्य के साथ उनके सामंजस्य में शीघ्रता लाने का विज्ञापन ही एकमात्र साधन है। परंतु वर्तमान समय में विज्ञापन अपने उद्देश्य से भटकते नजर आ रहे हैं। ऐसे विज्ञापन प्रकाशित व प्रसारित किये जा रहे हैं जिनका समाज पर काफी व्यापक असर दृष्टिगोचर हो रहा है। आज हर कोई अर्थ लाभ चाहता है, चाहे उसके लिए सामाजिक मूल्यों तथा सिद्वान्तों की कब्र ही क्यों न खोदनी पड़ जाय। इस उपभोक्तावादी युग में उत्पादनकर्ता का मूल उद्देश्य अपने उत्पाद से अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है। उत्पाद बेचने में सबसे अहम् भूमिका विज्ञापन निभाते हैं। विज्ञापन एजेंसियां मानव मनोविज्ञान को भली भांति जानती हैं व उसकी दुखती व कमजोर नस को दबाकर अपना माल बेचती हैं। उन्हें इसकी तनिक भी परवाह नहीं है कि किसी गरीब लड़की की शादी हो या न हो। चाहे दो-चार नयी नवेली दुलहनें आग लगाकर मर जाएं या मार दी जाएं। उन्हें तो बस माल बेचना है वो चाहे कैसे भी बिके। उत्पादक को तो अपने माल की बिक्री बढ़ानी है इसके लिये वो रोज नये नवेले हथकंडे खोजते व ढूंढते रहते हैं। इसी क्रम में वो कई बार इतनी भारी गलतियां कर जाते हैं कि उन्हें स्वय भी शायद इसका आभास नहीं होता है।

दिलदार दूल्हे की दमदार गाड़ी। शुभ विवाह ऑफर विवाह के शुभ अवसर पर अपनों को दें एक अनमोल उपहार। हम तुम ऑफर। लगन सीजन सेल। गुण ऐसे जो हर कुंडली से मेल खाएं.... शुभ घड़ियों को यादगार बनाएं और जीवन का एक नया नया सफ़र शुरू करे.... के साथ। एक नया रिशता, एक शुभ शुरूआत।.... आज ही घर लाइए और शादी की खुशियों में लगाइए चार चॉद। हर शादी में बजे आजादी की शहनाई। नये सफर की शुरूआत.... के साथ जस्ट मैरिड। शुभ लगन ऑफर। ये तो केवल बानगी भर है इस तरह के विज्ञापनों की भरमार देखने, पढ़ने व सुनने को प्रतिदिन मिल ही जाएगी। उत्पादनकर्ता इस तरह के विज्ञापनों के माध्यम से समाज में एक ऐसी भावना का संचार कर रहे हैं कि दहेज या शादी में भारी भरकम उपहार तो देना ही है तो फिर क्यों न आप हमारा माल ही खरीदें। इस तरह तो दहेज देने व लेने के लिए उकसाया व प्रेरित किया जा रहा है और वो भी कोई छुप-छुपाकर या चोरी छिपे नहीं बल्कि संचार के हर माध्यम से उत्पादक विज्ञापन के सभी तरीके अपना कर अपना माल बेचने में प्रयासरत हैं। विज्ञापन का असर बच्चे से लेकर बूढे सब के मस्तिष्क पर होता है। जब इस प्रकार के विज्ञापन प्रसारित व प्रकाशित होंगे तो

www.terapanthinfo.com

भविष्य में समाज की क्या तस्वीर बनेंगी इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। अभी पिछले दिनों ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सरकारी कर्मचारियों के लिए दहेज के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किये हैं और उधर ये विज्ञापन सर्वोच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों को मुंह ही चिढ़ा रहे हैं। ये दोहरी व्यवस्था व दोहरा चरित्र समाज व राष्ट्र के लिए अति खतरनाक है।

राष्ट्रीय महिला आयोग एवं नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों अनुसार प्रतिवर्ष महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की संख्या में इजाफा हो रहा है जिसमें सबसे अधिक मामले दहेज से जुड़े होते हैं। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार दहेज विवाद के कारण वर्ष 2006 में 2276 सुहागिनों ने आत्महत्या की हैं। अर्थात प्रतिदिन 6 लड़किया ससुराल वालों के तानों व प्रताडना से तंग आकर आत्महत्या करती है। **नेशनल कमीशन फार वूमेन** द्वारा जारी दहेज हत्या के आंकड़े भी भयावह तस्वीर पेश करते हैं। वर्ष 2004 से 2006 तक दहेज हत्या के 7026, 6787, 7618 मामले दर्ज किये गये हैं। आंकड़ों के अनुसार वष 2007 में लगभग 5500 दहेज हत्या और वर्ष 2008 में भी लगभग 5000 दहेज हल्या के मामले रिकार्ड हुए हैं। तस्वीर का दूसरा भयानक रूप यह है कि सैंकड़ों मामले तो दर्ज ही नहीं हो पाते हैं। विश्व की आधी दुनिया कही जाने वाली औरतों के खिलाफ चलने वाला यह सिलसिला यहीं खत्म नहीं होता है। महिला और बाल विकास मंत्रलय के हवाले से राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट में दिए गए आंकड़े इससे भी ज्यादा भयावह तस्वीर पेश करते हैं। पिछले दो दशकों में पतियों और रिशतेदारों द्वारा महिलाओं के प्रति किए अत्याचारों में 90 फीसदी का इजाफा हुआ है वहीं पुरूषों के मुकाबले स्त्रियों की घटती जनसंख्या भी चिन्ता का एका बड़ा कारण है।

दहेज निरोधक कानून के प्रभावशाली क्रियान्वयन के अभाव में दहेज की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। 1961 में दहेज प्रथा उन्मूलन के लिए कानून बनाया गया, 1975 व 1976 में संशोधन कर इसे और कठोर बनाया गया। 1985 में 'द थ्योरी प्रोबिशन' (मैन्टनेंस ऑफ लिस्ट प्रेसन्ट्स टू ब्राइड एंड ब्राइडग्रूम रूल्स) भी बनाया गया। लेकिन इसके बावजूद दहेज का दानव यहां-वहां स्वच्छंद घूम रहा है बदलती परिस्थितियों के अनुसार दहेज की परिभाषा को भी पुर्नभाषित करने की आवश्यकता है। तमाम अधिनियमों के बाद भी 27 मिनट में एक दहेज हत्या का प्रयास होता है और हर चार घंटे में एक दहेज हत्या हो जाती है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि अभी तक किसी भी सामाजिक संगठन का ध्यान उपभोक्तावादी संस्कृति के इस चालाक कारनामें की तरफ नहीं गया है सरकारी तंत्र का तो कहना ही क्या। इस संबंध में सामाजिक संगठनों व कार्यकर्ताओं को अलख जगानी पड़ेगी व उपभोक्तावादी संस्कृति के इस कुत्सित एवं घृणित प्रयास को विज्ञापित होने से पूर्व ही कुचलना होगा। वहीं सरकार को भी इस संबंध में कड़े दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए ताकि कोई भी उत्पादनकर्ता अपना माल बेचने के लिए इस तरह के 'प्रोवोकिंग विज्ञापन' जारी न कर पाएं, क्योंकि यहां सवाल केवल माल बेचने का नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों जिंदगियों से जुड़ा है। सरकार व विभिन्न एंजेसियों को इस संबंध में तत्पर प्रभावी कार्रवाई करके भारत की बेटियों को दहेज के दावानल से बचाना चाहिए।

बी-96, इंदिरा नगर,
लखनऊ-16 (उ.प्र.)

.... पृष्ठ 7 का शेष

देश में व्याप्त नासूर

को गंभीरता से न लें लेकिन जब कोई धार्मिक नेता यह कह दे कि सावधान! तुम्हारा धर्म खतरे में है तो लोगों के कान खड़े हो जाते हैं और बिना सत्यता को जानें, 'धर्म-रक्षा' के लिए हिंसक तक हो जाते हैं। इसलिए आज राजनेता अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए धार्मिक नेताओं का उपयोग करते हैं तथा बदले में उनकी सुख-समृद्धि के लिए अपने खजाने का मुँह खोल देते हैं।

आज देश में गरीबी और बेरोजगारी बढ़ रही है। गरीब और अमीर की खाई बढ़ती ही जा रही है। गरीब और अधिक गरीब और अमीर और अधिक अमीर होते जा रहे हैं। महंगाई की मार से मध्यमवर्गीय जनता भी अब परेशान हो गई है। देश में काला-बाजारी, मुनाफाखोरी, सट्टेबाजी की कृपा से महंगाई पर नियंत्रण असंभव-सा है। इनके तार उच्च स्तर के राजनेताओं से जुड़े हैं। कालेधन की समानान्तर व्यवस्था अधिक आक्रामक हो गयी है। क्योंकि इसे हमारे भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों का संरक्षण प्राप्त है।

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि विदेशी कर्ज के दिन-प्रतिदिन बढ़ते रहने का एकमात्र कारण राजनेताओं एवं अधिकारियों का विलासितापूर्ण जीवन- यापन, स्विस बैंकों में अंधाधुंध सम्पत्ति का संग्रह है। भारतीय शासकों का राज्याभिषेक ही भ्रष्टाचार के तिलक से होता है। चुनावों में पूंजीपतियों का पैसा खर्च होता है और बदले में मिलता है राजनीतिक संरक्षण। देश की आतंकवादी गतिविधियां भी किसी न किसी राजनीतिक संरक्षण से ही पनपती है। आइए, क्या आपके पास समय है इन समस्याओं पर सोचने और विचारने का। पस्त-हिम्मती को छोड़िए। देश में व्याप्त इन नासूरों को समाप्त करने का संकल्प लीजिए।

बी-5/263, यमुना विहार, दिल्ली-110053

www.terapanthinfo.com

परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी या प्रांतीय भाषाएं

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान ही हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने यह भलीभांति समझ लिया था कि सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक ऐसी कड़ी भाषा का होना आवश्यक है, जिसके माध्यम से देशवासी आपस में एक दूसरे से विचार-विमर्श कर सकें और राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित समस्याओं का समाधान ढूंढ सकें। स्पष्ट ही यह भाषा गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी नहीं हो सकती थी। सीमित दायरा होने के कारण अन्य प्रान्तीय भाषाएं भी यह स्थान ग्रहण नहीं कर सकतीं थीं। इसलिए राष्ट्रीय स्तर के लगभग सभी नेता इस बात पर सहमत थे कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाए।

अपने इस विचार को क्रियान्वित करने तथा उसे संवैधानिक स्वरूप देने के लिए ही तत्संबंधी प्रस्ताव, श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा संविधान-सभा में प्रस्तुत किया गया, जिसे सभा ने 14 सितम्बर 1949 को पारित किया। यही पारित प्रस्ताव हमारे संविधान के भाग सत्रह में 'राजभाषा' शीर्षक के अन्तर्गत विद्यमान है।

भाग सत्रह में अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत हिन्दी को राजभाषा बनाने की बात इन शब्दों में कही गयी 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। .....' संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। .... . '(2) खंड़ एक में किसी बात के होते हुए भी इस संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि के लिए संघ के इन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी, जिनके लिए ऐसे प्रारम्भ के ठीक पहले वह प्रयोग की जाती थी। .... 'परन्तु राष्ट्रपति उक्त कालावधि में आदेश द्वारा, संघ के राजकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए, अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषा का तथा भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के साथ-साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।'

संविधान के इस अनुच्छेद का प्रस्ताव किसी हड़बड़ाहट या जल्दबाजी में पारित नहीं किया गया। इसपर काफी विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। इसपर लगभग तीनसौ संशोधन के प्रस्ताव पेश किये गए। तीन दिन तक विस्तार से इनपर बहस की गयी और अन्त में दो के अतिरिक्त सभी संशोधन-प्रस्ताव वापिस ले लिये गए। इन दो में एक प्रस्ताव था कि 'हिन्दी' की जगह 'हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया जाए तथा दूसरा प्रस्ताव था कि देवनागरी की जगह फारसी लिपि रखी जाए। इन दोनों संशोधन-प्रस्तावों पर मतदान हुआ। मतदान हाथ उठाकर हुआ। प्रथम के पक्ष में केवल चार सदस्यों ने तथा दूसरे के पक्ष में बारह सदस्यों ने अपने हाथ उठाये। फलस्वरूप ये संशोधन भी गिर गए। बाद में जब श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा प्रस्तुत संवैधानिक प्रस्ताव पर मतदान हुआ तो उसके पक्ष में 312 सदस्यों ने मतदान किया। कुल सदस्य थे 324। इस प्रकार प्रबल बहुमत से संविधान-सभा ने हिन्दी को राजभाषा बनाने वाले इस अनुच्छेद का समर्थन किया।

इस अनुच्छेद के अन्तर्गत पहली कार्यवाही की गयी संविधान के अधिकृत हिन्दी अनुवाद की। इस संदर्भ में 17 सितंबर 1949 को श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने संविधान-सभा में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे सभा ने इस रूप में पारित किया 'यह संविधान-सभा सर्वसम्मति से अपने अध्यक्ष (डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद) को अधिकार देती है और उनसे निवेदन करती है कि संविधान का हिन्दी अनुवाद करवाने के लिए आवश्यक कार्यवाही करें और अपनी संविधान-सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार से उसे 26 जनवरी 1950 से पूर्व प्रकाशित करवा दें। साथ ही इस बात का भी प्रबन्ध करें कि भारत की अन्य प्रमुख भाषाओं में भी, जिन्हें वे उचित समझें, संविधान का अनुवाद करवाकर प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करें।'

संविधान-सभा के सदस्यों का यह स्पष्ट और निश्चित विचार था कि 15 वर्ष उपरान्त भारत संघ की राजभाषा हिन्दी होजाएगी और तब न्यायिक कार्य सहित सभी कार्य हिन्दी में होंगे। उस समय संविधान का हिन्दी-संस्करण ही काम में आएगा, अंग्रेजी संस्करण नहीं। इसीलिए यह प्रस्ताव पारित किया गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की सोच इससे भी आगे थी। उनका विचार था कि संविधान के हिन्दी अनुवाद को पूर्णतः प्रमाणिक बनाने के लिए उसपर भी संविधान-सभा की स्वीकृति उचित होगी। इसलिए उन्होंने तत्काल हिन्दी अनुवाद के लिए एक समिति बनाने के निर्णय की घोषणा की और संविधान-सभा के ही एक सदस्य श्री घनश्याम सिंह गुप्त को उसका अध्यक्ष घोषित किया। संविधान-सभा ने अपने अध्यक्ष के इस निर्णय को तत्काल स्वीकार कर लिया। इस समिति में सभी राज्यों के भाषा विशेषज्ञों को भी सम्मिलित किया गया।

www.terapanthinfo.com

संविधान के हिन्दी अनुवाद के लिए सर्वप्रथम उसके तकनीकी शब्दों के ऐसे हिन्दी शब्द ढूंढे गए, जो यथासम्भव अन्य भारतीय भाषाओं में एक जैसे हों, ताकि विभिन्न भाषाओं में संविधान का अनुवाद करते समय उन शब्दों में अधिक अन्तर न हो। इसके बाद संविधान का हिन्दी संस्करण तैयार किया गया। 24 जनवरी 1950 को संविधान-सभा के सदस्यों ने संविधान की तीन प्रतियों पर हस्ताक्षर करके उन तीनों को प्रमाणित किया। इनमें एक प्रति अंग्रेजी में हस्तलिखित थी, दूसरी प्रति अंग्रेजी में मुद्रित थी और तीसरी प्रति हिन्दी में हस्तलिखित थी। इस प्रकार संविधान की ये तीनों प्रतियां प्रामाणिक और वैधानिक दृष्टि से मान्य हैं।

संवैधानिक व्यवस्था के बावजूद हिन्दी आज तक भारत संघ की राजभाषा नहीं बन पायी है। वहां आज भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है ओर हिन्दी कहीं-कहीं डरी, दुबकी और झिझकी सी नजर आती है। 15 वर्ष की अवधि कभी की समाप्त हो चुकी है। संवैधानिक संशोधन द्वारा उस अवधि को समाप्त करके उसे अनिश्चित काल तक के लिए कर गया। निश्चित ही इसमें संविधान निर्माताओं का कोई दोष नहीं। उनकी नियत या निर्णय में कहीं कोई खोट नहीं था। खोट रहा उच्चपदस्थ प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनेताओं की नियत में।

प्रशासनिक अधिकारियों को अंग्रेजी में काम करने की आदत तो थी ही, साथ ही ऐसा करके उनके अहम् को सन्तुष्टि भी मिलती थी। सामान्य जनता से अलग और ऊपर बने रहने की अपनी प्रवृति को वे समाप्त करने के लिए तैयार नहीं थे। राजनेताओं का भी इसमें दोष कम नहीं रहा। अपने-अपने प्रान्तों में अपनी विशिष्टता बनाये रखने के लिए उन्होंने भाषा के आधार पर लोगों में अलगाव के भाव उत्पन्न किये। इसके लिए उन्होंने कहीं जाति या धर्म को आधार बनाया और कहीं भाषा को।

प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनेताओं द्वारा डाली गयी बाधाओं के कारण हिन्दी अब तक अपना उचित स्थान ग्रहण नहीं कर पायी है। इसमें कोई शक नहीं कि इन दिनों दक्षिण भारत सहित सम्पूर्ण देश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार काफी बढ़ा है, मगर दूसरी तरफ यह भी सच है कि जन-साधारण में यह भावना घर कर चुकी है कि बिना अंग्रेजी के ज्ञान के उनके बच्चे उच्च पद प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसीलिए इन दिनों अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षण संस्थाओं की लोकप्रियता काफी बढ़ रही है। समस्या के समाधान के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि भारत संघ में उच्च पद प्राप्त करने के लिए हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक हो। इसके साथ ही अंग्रेजी के ज्ञान की अनिवार्यता समाप्त की जाए तथा संघीय लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी या प्रान्तीय भाषाएं हों, अंग्रेजी नहीं।

10/611, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज0)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- भारत में 76 फीसदी इंटरनेट उपभोक्ता साइबर धोखाधड़ी का शिकार हो चुके हैं। खतरनाक वायरस के हमले, ऑनलाइन क्रेडिट कार्ड में घपलेबाजी और पासवर्ड चोरी होने के चलते उन्हें लाखों की चपत लग चुकी है।

- निजी अस्पतालों को गरीबों के मुफ्त इलाज का ब्यौरा अब रोज सरकार को उपलब्ध कराना होगा और सरकार यह ब्योरा अपनी वेबसाइट पर जारी करेगी। दिल्ली के 37 निजी अस्पतालों में गरीबों के इलाज की व्यवस्था लागू है। इन्हें 25 फीसदी बैड गरीबों के लिए आरक्षित रखने होंगे।

- शिक्षा का अधिकार कानून के प्रावधानों के तहत निजी विद्यालयों को अगले सत्र से पहली कक्षा में 25 फीसदी प्रवेश गरीब बच्चों को देने होंगे और ये बच्चे अमीर बच्चों के साथ ही पढ़ेंगे उनके लिए अलग से कक्षाएं नहीं लगेंगी।

- कॉमनवेल्थ गेम्स की ओपनिंग सेरेमनी देखने आए 60 हजार दर्शकों ने नेहरू स्टेडियम में और उसके आसपास करीब 20 हजार किलो कचरा छोड़ा। स्टेडियम परिसर में करीब 500 कचरे के डिब्बे रखे गए थे, लेकिन दर्शकों ने उनका कोई खास उपयोग नहीं किया। सफाई-कर्मियों ने वहां पड़ी कोल्ड-ड्रिंक और पानी की प्लास्टिक की बोतलों को साफ कर सफाई अभियान चलाया और पूरा क्षेत्र पुनः चमका दिया।

- नन्हें-मुन्नों की भीड़ में सबसे लम्बा बच्चा सिर्फ ढाई साल का है। यह होनहार है उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ शहर का का जिसका वजन 45 किलो के आसपास है। माना जा रहा है कि यह बच्चा दुनिया का सबसे लम्बा बच्चा है। हो भी क्यों न उसकी माँ श्वेतलाना सिंह एशिया की सबसे लम्बी महिला है जिनकी ऊंचाई 7 फीट 2 इंच है। फॉर्ब्स पत्रिका की 100 धनी भारतीयों की सूची में पांच महिलाएं हैं।

www.terapanthinfo.com

न छीनें बूढ़े माता-पिता से उनका हक

प्रेम नारायण गुप्ता

माता-पिता बहुत ख़ुश थे कि उनका बेटा अच्छे से सैटल हो गया है। अब तो उसने मुंबई में अपना फ्लैट भी ले लिया है और बच्चों के साथ मज़े से वहीं रह रहा है। माता-पिता अब काफ़ी बूढ़े हो गए हैं और अक्सर बीमार रहते हैं। पेंशन के जिन रुपयों से गृहस्थी चल जाती थी अब वो कम पड़ने लगे हैं क्योंकि मँहगाई, दवाएँ और फलों का खर्च बजट बिगाड़कर रख देता है।

माँ ने फोन करके बेटे को घर बुलवाया तो वो छुट्टियों में पिता की बीमारी का हाल-चाल जानने चला आया। माता-पिता बेटे को देखकर बहुत ख़ुश हुए और बहू और पोते-पोती को साथ न लाने पर नाराज़ भी हुए। आज बरसों बाद रसोई में कई चीज़ें एक साथ बनीं और बेटे को ख़ूब खिलाया-पिलाया।

बेटे ने पिता से पूछा, ''अब तो दिल्ली में प्रॉपर्टी के दाम बहुत बढ़ गए हैं। अपना मकान कितने का चल रहा है?'' ये सुनकर पिता को अच्छा नहीं लगा और वो सुना-अनसुना कर गए। अगले दिन जाते हुए बेटा बोला, ''ध्यान रखो पापा।'' माँ की आँखें आँसुओं से भीग गईं। वे सोचती रहीं कि पापा तो कुछ कर नहीं पाते और मैं भी कुछ नहीं कर पाती ऐसे में भला देखभाल होगी तो कैसे? कौन करेगा देखभाल?

प्रश्न उठता है कि क्या मात्र ध्यान रखना कहने से ही माता-पिता की देखभाल हो जाती है? बुढ़ापे में पैसों की ही नहीं सेवा की भी ज़रूरत पड़ती है। कुछ लोगों की मजबूरी हो सकती है जिसके कारण वे अपने माता-पिता के पास नहीं रह सकते अथवा उन्हें साथ नहीं रख सकते। लेकिन माता-पिता को तो उनकी ज़रूरत है। क्या बचपन में माता-पिता किसी विवशता के कारण अपने बच्चों को अपने से कभी दूर होने देते हैं?

प्रायः सभी माता-पिता बच्चों के लिए हर प्रकार के समझौते करने को तैयार रहते हैं फिर उनके बुढ़ापे में बच्चे क्यों नहीं कोई समझौता करने का प्रयास करते? कुछ लोग अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा तो नहीं कर पाते लेकिन उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक तंगी नहीं होने देते। ऐसे लोग उन लोगों से बेहतर हैं जिनके माता-पिता दाने-दाने को मोहताज हो जाते हैं लेकिन माता-पिता की सेवा करना भी तो बच्चों का ही फर्ज़ है। हम सब अपने फर्ज़ से कैसे मुँह मोड़ सकते हैं?

आज के आधुनिक शिक्षा प्राप्त तथा पाश्चात्य संस्कृति के पुजारी वैसे तो अपने बूढ़े माता-पिता को कभी पूछते नहीं लेकिन 'मदर्स डे' और 'फादर्स दिवस' पर उपहार भिजवाना नहीं भूलते। बूढ़े माता- पिता को मंहगे उपहार नहीं देखभाल और प्यार की ज़्यादा ज़रूरत है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उन्हें देखभाल की भी कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है। वास्तव में उन्हें ज़रूरत है अपने बच्चों के साथ की। बहू और पोते-पोतियों के साथ की। यदि उनकी बहू और पोते-पोतियाँ साथ होंगे तो उन्हें देखभाल की भी कोई ज़रूरत नहीं होगी अपितु वे ही उनके कामों में हाथ बंटा देंगे। परिवार का अभाव ही तो उनके दुःख और बीमारी का कारण है।

एकल परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों में रहने वाले माता-पिता और बच्चे सभी अधिक स्वस्थ रहते हैं। साथ रहना सुरक्षा ही नहीं अच्छे स्वास्थ्य का भी मूल है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो माता-पिता के साथ तो रहते हैं और उनका पर्याप्त आदर-सम्मान भी करते हैं, उनके पैर छूते हैं लेकिन अपने बच्चों को उनके पास तक फटकने नहीं देते। मात्र दिखावे के लिए आदर-सम्मान भी पर्याप्त नहीं अपितु पूर्ण रूप से अपनेपन की ज़रूरत है।

दादा-दादी अपने पोते-पोतियों के साथ घुलमिल कर रहें तभी उन्हें अच्छा लगेगा। दोनों एक दूसरे के साहचर्य से परस्पर लाभांवित भी हो सकेंगे। बच्चे थोड़े बड़े होंगे तो अपने दादा-दादी का काम करेंगे और छोटे होंगे तो उनसे अपना काम करवाएँगे जिससे दादा-दादी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यदि सचमुच अपने बूढ़े माता-पिता को स्वस्थ रखना है, उनकी सेवा करनी है तो उनसे उनके पोते-पोतियों का संसार मत छीनिये।

ए.डी.-26-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

तनाव मुक्ति हेतु सकारात्मक सोच अपनायें

जनार्दन शर्मा

बचपन में एक कहानी पढ़ी है। एक कुत्ता अपने मुंह में रोटी लिये नदी का पुल पार कर रहा था। पुल के नीचे पानी में उसने अपनी परछाई को मुंह में रोटी लिये देखकर भोंकना शुरू किया (ताकि वह रोटी भी छीन ले) लेकिन इसमें उसने अपने मुंह की रोटी ही गंवा दी। सच है लालच बुरी बला है। इसीलिये एक कविता का भाव है:

रूखा-सूखा खायकर ठंडा पानी पी,
देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।

एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार आपके हाथ में एक वस्तुत झाड़ी में रखी दो वस्तुओं के बराबर है।

वस्तुतः अत्यधिक उपभोक्तावाद एवं भौतिकवाद ने समाज में असन्तोष, अशान्ति, तनाव, क्रोध, लूट, झूठ व अपराध के साथ व्यक्ति का जीवन नैतिकताविहीन एवं मूल्य हीन बना दिया है और इससे व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट न होकर चोरी, मिलावट, आपाधापी, भ्रष्टाचार, नशाखोरी एवं कृत्रिम जीवन में लिप्त हो रहा है, जैसे-तैसे किसी भी साधन से धन व पद पाने की दौड़ में लगा है, इससे तनाव, सामाजिक एवं पारिवारिक विघटन, आपसी अविश्वास तथा कानून व्यवस्था भी चरमरा रही है। आवश्यकता इस बात कि व्यक्ति प्राप्त संसाधनों व हैसियत से सन्तुष्ट होना सीखे, अनुशासन व संयम से काम ले एवं सकारात्मक व आध्यात्मिक जीवन का सहारा ले, कहा भी है

गोधन गज धन वाजि धन और रत्न धन खान,
जब आवे सन्तोज धन, सब धन धूल समान।

कर्म करते हुये हानि-लाभ होने पर भी व्यक्ति को सकारात्मक सोच से ही शान्ति व आगे का मार्ग मिलता है। कई आविष्कारों के जनक वैज्ञानिक थॉमस एडीसन एक बार दिसम्बर सन् 1914 ई. में एक हादसे

के शिकार हुये जिसमें उनकी दस लाख डालर मूल्य की प्रयोगशाला सामग्री एवं अनुसंधान संबंधी रिकार्ड आग में स्वाहा हो गया, किन्तु उस समय 67 वर्ष की उम्र में भी एडीसन ने अपनी धारणा इन शब्दों में व्यक्ति की **'इस विनाश का भी एक महत्व' और संकेत है। हमारी अतीत की समस्त त्रुटियां जल गई, अब हम नये सिरे से शुरूआत कर सकते हैं।** तब पुनः नये हौसले के साथ उन्होंने नये आविष्कार व सृजन करके इतिहास रच डाला।

प्रसिद्ध पुस्तक 'फ्रेन्च रिवोल्युशन' के लेखक कार्लाहल के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। इनकी उक्त पुस्तक की पांडुलिपि को भूल से उनकी नौकरानी ने आग तापने के काम में ले लिया। कार्लाहल थोड़े समय के लिए निराशा में डूब गये। फिर से अपने बचे हुये उत्साह से पुनः उस पुस्तक के प्रत्येक शब्द, वाक्य व अध्याय को ज्यों का त्यों लिखकर पुनः पुस्तक प्रकाशित की, जिससे उनको प्रसिद्धि व सकारात्मक परिणाम सामने आये।

हमारे सामने यदि आधा भरा गिलास लाया जाय और हमसे प्रश्न किया जाय कि यह आधा गिलास खाली है या आधा भरा है। हमारा जबाव यदि 'आधा गिलास भरा है', होगा तो निश्चय ही वह सकारात्मक सोच व सन्तोष का संकेत है।

एक मनोवैज्ञानिक ने कुछ सफल व्यक्तियों के साक्षात्कार लेकर निष्कर्ष निकाला कि यद्यपि उनके जीवन में विरोध, बाधायें व असफलतायें तथा परेशानी आई किन्तु उन्होंने बुरे दिनों में अभाव व तनाव को दूर भगाने का सकारात्मक सोच, उत्साह व आशावादी दृष्टिकोण अपनाया, जिससे उन्हें सफलता व शान्ति मिली।

महात्मा गांधी को आजादी के संघर्ष में कई बार विरोध व परेशानियों का सामना करना पड़ता था। वे कहते थे ऐसे समय में वे श्रीकृष्ण को भागवद्गीता का सहारा लेते थे और निष्काम-कर्मयोग की सीख लेकर तनाव मुक्त हो जाते थे। उनके अहिंसात्मक आन्दोलन में कभी जनता हिंसा का सहारा लेती तो वे आन्दोलन को (विरोध के बावजूद) स्थगित कर देते थे। उनके नमक सत्याग्रह के लिये 'डांडी-मार्च' को कम लोगों ने ही समर्थन दिया, किन्तु वे चन्द साथियों के साथ कूच कर गये और आशावादी परिणाम आया-

बढ़ चले जिधर दो डग मग में
बढ़ चले कोटि डग उसी ओर।

रवीन्द्रनाथ टेगोर भी कभी निराश नहीं होते थे, वे कहते थे एकला चलो रे एकला चलो रे, ज्योति तोरि डाक शुनि कोड न आवे तवे एकला चलो रे।

महात्मा गांधी ने तनाव रहित व सकारात्मक जीवन को निम्न प्रकार महान मंच दिया है *मानवता के बिना विज्ञान, चरित्र के बिना ज्ञान, त्याग के बिना पूजा, चेतना के बिना आनंद, श्रम के बिना धन, नैतिकता रहित व्यापार और सिद्धान्त हीन राजनीति व्यर्थ है।*

सत्य सदन,
पुष्कर (अजमेर-राज.)

जैव विविधता का संरक्षण जरूरी

नरेन्द्र देवांगन

संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर वर्ष 2010 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। आम लोगों में जैव विविधता से संबंधित जानकारी और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से पूरे विश्व में जैव विविधता को लेकर विविध गतिविधियां चल रही हैं। जानकारी एवं जागरूकता बढ़ने से आम लोगों को भी इस तथ्य का अंदाजा होगा कि हम सबके लिए जैव विविधता का कितना महत्व है। एक बार इस प्रकार का ज्ञान आम लोगों के बीच फैल जाएगा तो जैव विविधता पर जो खतरा है उसे कम करने में सहायता मिलेगी और जैव विविधता के संरक्षण में इस समय जो कठिनाइयां सामने आ रही हैं वे भी कम होंगी।

पृथ्वी का जैविक धन, जैव विविधता लगभग 4 बिलियन वर्षों के विकास की देन है। इस जैविक धन की निरंतर क्षति ने मनुष्य के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा पैदा किया है। दुनिया के विकासशील देशों में जैव विविधता का क्षय आज गंभीर चिंता का विषय है। उत्तरी अमेरिका, एशिया, दक्षिणी अमेरिका तथा अफ्रीका महाद्वीपों के देश जैव विविधता संपन्न हैं जहां तमाम प्रकार के पौधों तथा जंतुओं की प्रजातियां पाई जाती हैं। विडम्बना यह है कि अशिक्षा, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, वैज्ञानिक विकास का अभाव आदि ऐसे कुछ प्रमुख कारण हैं जो इन महाद्वीपों के देशों में जैव विविधता क्षय के लिए उत्तरदायी हैं।

धरती पर उपस्थित जैव विविधता को तीन स्तरों पर पहचाना जाता है और अध्ययन किया जाता है। पहला स्तर है पारिस्थितिक तंत्र यहां पारिस्थितिक तंत्र की विविधता पर बल होता है। पारिस्थितिक तंत्र वह तंत्र है जिसमें जीवित तथा निर्जीव दोनों तत्व उपस्थित हों और जो वहां पाए जाने वाले संसाधन के बल पर चलता रहे, बशर्ते उसे सूर्य से आने वाली ऊर्जा मिलती रहे। लगातार बने रहने के लिए ऐसे किसी तंत्र में तीन प्रकार के घटक का होना आवश्यक है। पहला घटक है हरे पेड़-पौधे जो प्रकाश संश्लेषण कर सकें। दूसरा ऐसे जंतु जो हरे पेड़-पौधों अर्थात उत्पादक को खा सकें। इन्हें उपभोक्ता का नाम दिया जाता है। इनकी शृंखला हो सकती है अर्थात पहला उपभोक्ता पेड़-पौधे खाए, दूसरा उपभोक्ता पहले उपभोक्ता को खाए। आगे भी यह सिलसिला चल सकता है। तीसरा घटक है ऐसे जीव जो अपघटन कर सकें अर्थात उस तंत्र में उपस्थित कार्बनिक पदार्थ को अपघटित कर उनमें उपस्थित पौष्टिक तत्व को वापस ला सकें ताकि उनका फिर से उपयोग हो सके।

पारिस्थितिक तंत्र अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उदाहरण के लिए एक तालाब, एक झील, एक नदी या उसका एक भाग, वन आदि अलग-अलग प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र हैं। इस प्रकार पारिस्थितिक तंत्र की विविधता इस तथ्य को दर्शाती है कि कहीं भी कितने तरह के ऐसे तंत्र हैं। कारण है कि हर प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र में एक ही प्रकार के जीव नहीं होंगे। उनमें अलग-अलग प्रकार के जीव होंगे। उदाहरण के लिए तालाब में पाए जाने वाले जीव किसी वन में पाए जाने वाले जीव से अलग होंगे। किसी वन में पाए जाने वाले जीव किसी मरूस्थल में पाए जाने वाले जीव से भिन्न होंगे।

जाति स्तर पर जैव विविधता यह दर्शाती है कि किसी जगह पर जीवों की कितनी जातियां हैं। उदाहरण के लिए अगर हम वनों के विषय में विचार करें तो धरती के हर एक भाग में वनों में एक ही प्रकार के जीव नहीं होंगे। उदाहरण के लिए शीतोष्ण कटिबंध क्षेत्र के वनों की तुलना में उष्ण कटिबंधी क्षेत्र के वर्षा वन में बहुत अधिक प्रकार के जीव होंगे। अगर पर्वत शिखर पर उपस्थित वन की तुलना पहले दो प्रकार के वनों से की जाए तो वहां और भी कम प्रकार के जीव हो सकते हैं। इसी प्रकार अगर हम तालाब, झील या खेत को देखें तो जलवायु परिवर्तन के साथ उनमें उपस्थित जीवों की संख्या तथा प्रकार में अंतर मिलेगा। यदि हम किसी एक क्षेत्र की तुलना दूसरे क्षेत्र से या एक तंत्र की तुलना दूसरे पारिस्थितिक तंत्र से करें तो इस प्रकार जाति स्तर पर जैव विविधता में अंतर होगा। यही कारण है कि धरती पर कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिन्हें जैव विविधता प्रधान क्षेत्र या राष्ट्र के रूप में मान्यता मिली है।

तीसरे प्रकार की जैव विविधता होती है आनुवंशिकी के स्तर पर। यहां हम बात करते हैं उस अंतर की जो किसी एक ही जाति के अलग-अलग सदस्यों के बीच हो सकती है। उदाहरण के लिए अगर हम किन्हीं दो व्यक्तियों की तुलना करें तो उनके बीच अनेक प्रकार के अंतर हो सकते हैं। जैसे उनकी ऊंचाई, उनका रंग, उनके शरीर की रचना, आंखों की रचना, बाल का रंग तथा रूप आदि-आदि। ये सब किसी व्यक्ति की आनुवंशिकी पर निर्भर करता है। कई बार यह भी संभव है कि दो व्यक्ति या दो पशु या दो वृक्ष बिल्कुल एक जैसे दिखाई दें। परंतु अगर हम उनके शरीर में उपस्थित डीएनए का विश्लेषण करें तो हमें उनमें अंतर मिलेगा। यही कारण है कि किन्हीं भी दो व्यक्तियों या दो पौधों या दो पशुओं का डीएनए एक जैसा नहीं होता है। आजकल इस गुण का वर्गीकरण विज्ञान में और लोगों के पैतृत्व को निर्धारित करने में उपयोग भी होता है। इस प्रकार जो अंतर होता है उसी के कारण कोई भी जीव अपने को दूसरों से अलग बनाए रहता है। इस प्रकार आनुवंशिकी के स्तर पर विविधता

डीएनए में अंतर के कारण होती है और इसका विस्तार बहुत अधिक है।

'इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर' यानी आईयूसीएन हर चौथे साल पृथ्वी पर उन प्रजातियों की सूची प्रकाशित करती है जो संकट में हैं। इस सूची को 'आईयूसीएन रेड लिस्ट ऑफ थ्रेटन्ड स्पेसीज' कहा जाता है। यह रेड लिस्ट दुनिया भर में फैले हजारों वैज्ञानिकों की रिपोर्ट के आधार पर बनती है इसलिए दुनिया में जैव विविधता पर इसे सबसे प्रमाणिक और विश्वसनीय माना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बात की जाए तो दुनिया में पाए जाने वाले जीवों में से एक तिहाई लुप्त होने के कगार पर हैं और ये खतरा हर दिन बढ़ता जा रहा है। आईयूसीएन की रेड लिस्ट के अनुसार 47677 में से कुल मिलाकर 17291 जीव प्रजातियां गंभीर खतरे में हैं। इनमें से 21 प्रतिशत स्तनधारी जीव हैं, 30 प्रतिशत मेढ़कों की प्रजातियां हैं, 70 प्रतिशत पौधे हैं और 35 प्रतिशत बिना रीढ़ की हड्डी वाले यानि सांप जैसे जीव हैं। भारत के बारे में रपट में कहा गया है कि पौधों तथा वन्य जीवों की कुल 687 प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें 96 स्तनपायी, 67 पक्षी, 25 सरीसृप, 64 मछली व 217 पौध प्रजातियां शामिल हैं। यह दुनिया के उन शीर्ष दस देशों में शामिल हो गया है जहां सबसे अधिक प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में है। भारत में उड़ने वाली गिलहरी, एशियाई सिंह, काले हिरण, गेंडे, गंगा डाल्फिन, बर्फीले तेंदुए सहित अनेक जीवों को संकटग्रस्त करार दिया गया है। रपट में इस बात पर चिंता जताई गई है कि जैव विविधता के लिए 2010 के तय लक्ष्यों को हासिल नहीं किया जा सकेगा। आईयूसीएन रेड लिस्ट इकाई के प्रबंधक क्रेग हिल्टन टेलर का कहना है कि विश्व समुदाय को जैव विविधता के संकट से निपटने के लिए इस रपट का बुद्धिमता से इस्तेमाल करना चाहिए।

जैव विविधता गंभीर खतरे में है इसे आधिकारिक स्तर पर स्वीकार भी किया गया है, लेकिन औपचारिक नियमन प्रणाली के तहत लोगों के सरोकारों और ज्ञान को समाहित करने अथवा बचाए रखने की जरूरत, लोगों के ज्ञान के साथ उसके अंतर्निहित संबंध का सम्मान करने और उद्योग व व्यापारिक हितों के लिए उसके दोहन को रोकने के लिए जो कुछ भी किया जा रहा है, वह काफी कम है। भारत जैसे एक जैव विविधता वाले देश में चुनौती न सिर्फ इसकी संपदा को बचाए रखने की है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि उसका संरक्षण हो और यहां के लोगों की भलाई के काम आए।

वैज्ञानिकों के अनुसार उष्ण कटिबंधीय वनों के विनाश के कारण प्रजातियों का सामूहिक विलुप्तीकरण हो जाता है। विश्व के तीन समृद्ध जैव विविधता केंद्रों अमेजन बेसिन, कांगो द्रोणी प्रवहरण के देशों तथा दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। एक अनुमान के अनुसार निकट भविष्य में लगभग 30 हजार पादप प्रजातियां हम से अलविदा हो जाएंगी। भूस्खलन, बाढ़, सूखा, वन में लगने वाली आकस्मिक आग आदि प्राकृतिक कारणों के कारण कभी-कभार किसी प्रजाति का पूरा वंश ही समाप्त हो जाता है। कीड़ों और रोगों की चपेट में आने के कारण भी कभी-कभी कोई प्रजाति विलुप्त हो सकती है और कुछ की प्रजनन क्षमता दुर्बल होने के कारण उनकी विलुप्ति की संभावना बढ़ जाती है। कभी-कभार प्रजातियों के बीच प्राकृतिक प्रतिस्पर्धा या बदले परिवेश में अपने आपको अनुकूल न कर पाना भी प्रजातियों के विलुप्त होने का कारण बनता है। हालांकि वर्तमान में पौधों की प्रजातियां विलुप्त होने के लिए मानव निर्मित कारकों का अधिक योगदान है। तथाकथित विकास जैसे सड़कों का निर्माण, कृषि एवं उद्योगों की आवश्यकता के चलते वनों के उजड़ने के कारण भी प्रजातियों को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है।

विदेशी खरपतवारों के आक्रमण के कारण भी जैव विविधता को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। उदाहरण के लिए नील नदी की मछली, नाइल पर्च को पूर्वी अफ्रीका की विक्टोरिया झील में डाला गया तो वहां की सिलचिड मछलियों की दो सौ से अधिक प्रजातियां विलुप्त हो गईं। इसी प्रकार गेहूं के साथ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के आयतित गाजर घास तथा शोभाकारी पौधे के रूप में मैक्सिको से लाए गए लेंटाना ने भारत की जीव विविधता के लिए गंभीर चुनौती पैदा की है। अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'वर्ल्ड वाइल्ड फिनिशिंग ऑर्गेनाइजेशन' ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि 2030 तक घने जंगलों का 60 प्रतिशत भाग नष्ट हो जाएगा। वनों के कटान से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की कमी से कार्बन अधिशोषण ही वनस्पतियों व प्राकृतिक रूप से स्थापित जैव विविधता के लिए खतरा उत्पन्न करेगी। मौसम के मिजाज में होने वाला परिवर्तन ऐसा ही एक खतरा है। इसके परिणामस्वरूप हमारे देश के पश्चिमी घाट के जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियां तेजी से लुप्त हो रही हैं। एक और बात बड़े खतरे का अहसास कराती है कि एक दशक में विलुप्त प्रजातियों की संख्या पिछले एक हजार वर्ष के दौरान विलुप्त प्रजातियों की संख्या के बराबर है। जलवायु में तीव्र गति से होने वाले परिवर्तन से देश की 50 प्रतिशत जैव विविधता पर संकट है। अगर तापमान में 1.5 से 2.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होती है तो 25 प्रतिशत प्रजातियां पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। जैव विविधता जलवायु और वर्षा का कारक है जिससे पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और भूगर्भ का जल स्तर बना रहता है।

चराई शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों में जैव विविधता क्षय का एक प्रमुख कारण है। भेड़ों, बकरियों तथा अन्य शाकभक्षी पशुओं द्वारा चराई के कारण पौधों की प्रजातियों को नुकसान पहुंचता है। अति चराई के कारण पौधों का प्रकाश संश्लेषण वाला भाग नष्ट हो जाता है जिससे पौधों

की मृत्यु हो जाती है। बहुत-सी कमजोर प्रजातियां शाकभक्षी पशुओं के खुरों द्वारा कुचल दी जाती हैं। भारी चराई प्रजाति को समुदाय से ही नष्ट कर देती है जिससे जैव विविधता का क्षय होता है।

मानव गतिविधियां वन्य जीव प्रजातियों में बीमारियों को बढ़ावा देती हैं। जब कोई जानवर एक प्राकृतिक संरक्षित क्षेत्र तक सीमित होता है तब उसमें बीमारी के प्रकोप की संभावना ज्यादा होती है। दबाव में जानवर बीमारी के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य की कैद में जानवर बीमारियों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं। चिकित्सा शोध, वैज्ञानिक शोध तथा चिड़ियाघर के लिए जानवरों को पकड़ना प्रजाति के लिए खतरनाक साबित हो सकता है क्योंकि इससे इनकी संख्या में गिरावट होने की संभावना होती है जिससे ये जानवर विलुप्ति की कगार पर पहुंच सकते हैं। चिकित्सा शोध महत्वपूर्ण क्रिया है लेकिन यह संकटग्रस्त जंगली प्राइमेट्स जैसे चिम्पांजी, गोरिल्ला तथा ओरांगुटान के लिए खतरा है।

फसलों तथा पशुओं को नाशी जीवों तथा परभक्षियों से सुरक्षा ने भी बहुत-सी प्रजातियों को विलुप्ति की कगार पर पहुंचा दिया है। विष के इस्तेमाल से एक विशेष प्रजाति को नष्ट करने के प्रयास में कभी-कभी उस प्रजाति के परभक्षी भी विष के शिकार हो जाते हैं जिससे पारिस्थितिक तंत्र में खाद्य शृंखला अव्यवस्थित हो जाती है और नियंत्रित प्रजाति नाशीजीव का रूप धारण कर जैव विविधता को क्षति पहुंचाती है।

छोटे-छोटे सूक्ष्म जीव खाद्य सुरक्षा का आधार होते हैं। सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियां मिट्टी से विभिन्न पोषक तत्वों को फसलों तक पहुंचाती हैं जिससे फसल की पोषण आवश्यकताएं पूर्ण होती है। इतना ही नहीं भूमि से नाइट्रोजन को वायुमंडल में पहुंचाने की क्रिया में भी सूक्ष्म जीवों का महत्वपूर्ण योगदान है। खाद्य पदार्थों का सत्तर फीसदी हिस्सा मधुमक्खियों व तितलियों तथा तीस फीसदी चिड़ियों के परागमन से तैयार होता है। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में सूक्ष्म जीवों की अहम भूमिका है। इसलिए सृष्टि में सभी जीव-जंतुओं की अपनी महत्ता है। पृथ्वी सिर्फ 6 अरब लोगों का ही घर नहीं बल्कि 28 अरब जीव-जंतुओं की भी दुनिया है।

वैसे सरकारी स्तर पर जैव विविधता को संरक्षित करने के अनेक प्रयास किए गए हैं। वन्य प्राणि संरक्षण अधिनियम 1972, जैव विविधता अधिनियम 2002, सागर तटीय प्रबंधन क्षेत्र ड्राफ्ट नोटिफिकेशन 2008 आदि प्रावधान महत्वपूर्ण हैं। इनके साथ ही राष्ट्रीय वन नीति 1988 और राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना के तहत भी प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर जैव विविधता को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से 4.83 प्रतिशत संरक्षित हैं जिनमें 99 राष्ट्रीय उद्यान और 523 वन्य प्राणी अभ्यारण्य हैं। इनमें से 100 का विस्तार भूमि के साथ ही मृदु जल संसाधनों तक है जबकि 31 सागर-तटीय क्षेत्र हैं। देश में कुल 15 बायोस्फेयर रिजर्व हैं। यूनेस्को के 'मैन एंड बायोस्फेयर' कार्यक्रम के अंतर्गत 1971 से बायोस्फेयर रिजर्व की स्थापना के लिए विश्वव्यापी कार्यक्रम आरंभ किया गया। 2008 तक 105 देशों में 531 बायोस्फेयर रिजर्व स्थापित किए जा चुके थे जिनमें से 15 भारत में है।

बहुचर्चित बाघ परियोजना का आरंभ 1973 में कुल 9 क्षेत्रों से किया गया था, जिनकी संख्या 2006 तक बढ़कर 29 तक पहुंच गई। देश के 1.17 प्रतिशत क्षेत्र यानी 38620 वर्ग किलोमीटर में इनका विस्तार है। हाथी परियोजना का आरंभ 1991-92 से किया गया और आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, तमिलनाडु, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल में इससे संबंधित योजनाएं चलाई जा रही हैं।

स्पष्ट है कि हमारे देश में जैव विविधता की प्रचुरता है और अनेक योजनाओं द्वारा इन्हें संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पर संरक्षित करने के प्रयास में आम आदमी की भागीदारी महत्वपूर्ण है। लोगों को इस मुहिम से जोड़ने में इस क्षेत्र में शिक्षण और जन जागरूकता की आवश्यकता है। अतः इस दिशा में भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

जैव विविधता कानून 2002 व 2004 के प्रमुख प्रावधान

- भारत सरकार की पूर्व अनुमति के बगैर भारतीय आनुवंशिक सामग्री का देश के बाहर हस्तांतरण वर्जित है।
- भारत सरकार की अनुमति के बगैर जैव विविधता या संबद्ध ज्ञान पर किसी के द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकार, जैसे पेटेंट का दावा वर्जित है।
- भारतीय नागरिकों द्वारा जैव विविधता के प्रयोग और संग्रहण पर प्रतिबंध, स्थानीय समुदायों को इससे रियायत।
- जैव विविधता, तकनीक हस्तांतरण, वित्तीय लाभ, संयुक्त शोध और विकास, संयुक्त आईपीआर स्वामित्व इत्यादि से होने वाले लाभों को साझा करने के लिए कदम।
- जैव संसाधनों, पर्यावास और प्रजाति संरक्षण, परियोजनाओं के पर्यावरण प्रभाव आकलन, विभिन्न विभागों, क्षेत्रों की योजनाओं, कार्यक्रमों और नीतियों में जैव विविधता के एकीकरण आदि के सतत उपयोग और संरक्षण के लिए कदम।
- अपने प्राकृतिक संसाधनों और ज्ञान के इस्तेमाल तथा उन तक पहुंच के बदले शुल्क लेने संबंधी स्थानीय समुदायों के अधिकार के प्रावधान।
- आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों के प्रयोग पर नियमन।
- संरक्षण और लाभ के बंटवारे के लिए राष्ट्रीय, राज्य व स्थानीय स्तर पर जैव विविधता कोष का गठन।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
पोस्ट - खरोरा 493225
जिला - रायपुर (छ.ग.)

साँपों की बारात में जीभों की लपालप

रामस्वरूप रावतसरे

जनता के लिये नेतागिरी की जाती तो आज तेरे जैसे दो जून रोटी के लिये बिल बिलाते नहीं फिरते और इन तथाकथित धर्मराजों के पास करोड़ों की चल-अचल सम्पत्ति नहीं होकर गाँधी बापू की तरह एक लँगोटी होती। आज हमारे इन समाज सेवक नेताओं के सुख सुविधाओं और अधिकारों को देखें तो जनता का पैसा तो ये ही किसी ना किसी रूप में खर्च कर डालते हैं।

तनसुख ने जब अखबार देखा तो वह दंग रह गया, कि सारा विपक्ष एकजुट होकर लोक सभा में महँगाई पर ससंद को ठप्प किए हुए है। इधर सत्ता का सुख भोग रहे दल महँगाई को कम करने के रास्ते नहीं निकाल रहे हैं, वे रास्ते निकाल रहे हैं कि किस प्रकार विपक्ष को अनर्गल बहस में उलझाकर रखा जाये और जनता में यह सन्देश जाने दिया जाये कि वे तो काम करना चाहते हैं पर विपक्ष नहीं चाहता। इसलिए वह बार-बार महँगाई के मसले पर राग अलाप कर उनकी काम करने की एकाग्रता को भंग कर रहा है।

सौ करोड़ जनता की किसे चिन्ता है, चिन्ता है तो अपने पेट की और वही ये धर्माधिराज कर रहे है। तनसुख का भूखा तन और सूखा मन इससे आगे कुछ भी नहीं सोच पा रहा था क्योंकि वैसे भी महँगाई को लेकर फाका परस्ती चल रही थी। उसे नहीं सूझ रहा था कि बढ़ते खर्चों को किस प्रकार कम किया जाये।

उसी समय हरिया ने घर में कदम रखा। तनसुख को देख कर वह बोला क्या बात है इस प्रकार कैसे बैठे हो? तनसुख बोला हरिया आज हमारी उम्र लगभग पचास साल की हो गई है। बापू ने हमें जब से समझदार माना उसके बाद हमने भी समझदारी को गले लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन हमारे नेताओं द्वारा जो राजनीति की जाती है, वह किस पुराण या संविधान से संबंधित होती है और वह कितने रंगों को धारण किये होती है। यह हम आज तक नहीं समझ पाये हैं।

हरिया होऽऽऽ होऽऽऽ करके हँसा। फिर बोला तनसुख हमारे नेताओं की राजनीति गाँधी बापू की समझ में भी नहीं आई थी, जिन्होंने इन नेताओं को राजनीति का कक्का कोडका पढ़ना सिखाया था। तुम्हें क्या आयेगी। हमारे नेताओं की राजनीति जनता के लिये नहीं होती यदि कभी भूलवश ऐसा हो भी जाय तो उसमें भी ये नेता अपने लिये लाभ का पाया ढूँढ़ लेते हैं। तनसुख गडकरीजी की माने तो लालूजी व मुलायमजी और इनके साथ के नेता महँगाई को लेकर बढ़-चढ़ कर गले के दो टुकडे करने पर तुले हुए थे, पर ज्योंही कांग्रेस की ओर से सीबीआई के कदम इनकी ओर बढ़ने से रोकने का आश्वासन मिला, इन नेताओं ने अपना सुर ही बदल दिया। क्यों नहीं बदलते? यदि संसद में रह कर अपने ही लाभ की बात नहीं कर सके तो फिर धिक्कार है इनका नेतागीरी करना। यदि इनका ऐसा करना गलत मान भी लिया जावे तो, संसद में कटौती प्रस्ताव पर गडकरीजी का साथ देकर इन्हें क्या लाभ मिलता। तनसुख तपाक् से बोला जनता का तो भला होता। हरिया ने कहा तनसुख! नेतागिरी हमेशा अपने लाभ के लिये ही की जाती है। जनता के लिये नहीं। जो ये लोग कर रहे हैं।

जनता के लिये नेतागिरी की जाती तो आज तेरे जैसे दो जून रोटी के लिये बिल बिलाते नहीं फिरते और इन तथाकथित धर्मराजों के पास करोड़ों की चल-अचल सम्पत्ति नहीं होकर गाँधी बापू की तरह एक लँगोटी होती। आज हमारे इन समाज सेवक नेताओं के सुख सुविधाओं और अधिकारों को देखें तो जनता का पैसा तो ये ही किसी ना किसी रूप में खर्च कर डालते हैं। जनता के हिस्से में सिर्फ इनकी भाषण बाजी ही आती है, आती रही है। बयान बाजी को लेकर इनका कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता। ये सत्ता में रहते हैं तो भी यही कहते हैं कि हम तो जनता का भला करना चाहते हैं पर विपक्ष उसमें कोई न कोई अडंगा लगा देता है। और ये जब सत्ता से बाहर होते हैं तो यह कहते हैं कि हमने तो बहुत कुछ किया था पर विपक्ष ने सत्ता में आकर रोक दिया है।

संसद में भाजपा का साथ नहीं देने को गडकरी ने तो कुत्ते की तरह तलवे चाटने की बात कही। इसके उलट में लालू यादव व मुलायम यादव ने भी गडकरी को नोचना शुरू कर दिया। यादव समर्थक सड़कों पर हैं। जनता से जुड़े मुद्दे कहा है? किसी को चिन्ता नहीं है। सत्ता पक्ष खुश है कि ये उनके कामों में दखल नहीं देकर आपस में ही लड़ रहे हैं। ऐसे करते करते पाँच साल का सफर पूरा हो जाता है। यह है हमारे नेताओं की नेतागिरी का असली चेहरा। फिर तनसुख किसी ने सच ही कहा है 'साँपों की बारात में जीभों की ही लपालप होती है और कुछ नहीं। तनसुख तुम क्या सोच रहे हो कि ये हमारे लिये नया सवेरा लाएँगे। सुहानी सुबह तो हमें अपनी आँखें खोल कर ही देखनी होगी। यह कहता हुआ हरिया उठ कर चला गया।

चौपड़ बाजार, शाहपुरा
303103 (जयपुर राज.)

वितरण में विषमता

सुषमा जैन

भारतीय राजनीति 'जिओ और जीने दो', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'परहित सरिस धरम नहि भाई' जैसे अमूल्य और स्वर्णिम सिद्धांतों पर टिकी है, जिन्हें सभी धर्मों ने ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने सर्वमान्य कर अपनी श्रद्धा और स्वीकृति की मुहर लगाई है। यही कारण है कि राजनेताओं से यह अपेक्षा की गई है कि वे जीवन की सत्यता को समझते हुए अन्तःकरण की कोमलता से सभी वर्गों के प्रति आत्मीयता एवं संवेदनशीलता का परिचय दें, अर्जन के साथ विसर्जन की चेतना के जागरण से ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिससे सभी में सहायता एवं सहयोग के आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त हो सके, धन एवं पद के अहंकार से दूर हटकर समष्टिवादी भावना, सौम्यतापूर्ण व्यवहार एवं मैत्रीपूर्ण आचरण से सामाजिक समरसता का निर्माण करें तथा स्वार्थवादी प्रवृत्ति को त्याग कर ऐसी नीतियों का निर्माण करें जिससे सभी को आगे बढ़ने का समान अवसर प्राप्त हो सके।

परंतु हमारे राजनेता हैं कि उन्हें दो कदम आगे बढ़कर चार कदम पीछे हटने की मानो आदत-सी पड़ गई है। सत्ता प्राप्त करते ही उनकी सुविधावादी मनोवृत्ति प्रबल और निरंकुश होने लगती हैं। शासक ही शोषण का चोला धारण कर लेता है। अपने और अपने समर्थकों के लिए अलग नियम और जनता के लिए पृथक सिद्धांत। अपने लिए सारी सुख-सुविधाएं तथा जनता के लिए कुछ भी नहीं। सियासती दंगल में इन्हें कोई भी न पछाड़ सकता। दोषियों से दोस्ती भी और पीड़ितों की अगुवाई भी। इसका सीधा संबंध अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। कुछ ही स्थानों पर सत्ता और सम्पत्ति केन्द्रित होती जा रही है और शेष स्थान अभावग्रस्त हो रहा है। चौड़ी होती आर्थिक विषमता की खाई से वर्ग संघर्ष जन्म लेता दिखाई दे रहा है।

चारों ओर भय-भूख और भ्रष्टाचार का दृश्य ही परिलक्षित होता दिखाई दे रहा है। सरकार बड़े जोर-शोर से बढ़ती विकास दर एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का ढिंढोरा पीट रही है। वह आखिर इस तथ्य को क्यों नहीं स्वीकार करती कि आय की यह वृद्धि पचासों गुणा कीमतों में वृद्धि की सौगात भी साथ लाई है। आय में वृद्धि आम आदमी की नहीं होगी बल्कि बढ़ी कीमतों के बोझ से उसकी कमर जरूर टूट जायेगी। चाहे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो या कीमतों का बेतहाशा बढ़ना हो इसका पूरा-पूरा लाभ देश के उन चुनिंदा परिवारों को ही हो रहा है जो राष्ट्र के 90 संसाधनों पर कुण्डली मारे बैठे हैं। कीमतें बढ़ती हैं तो उसका लाभ इन्हीं की जेबों में जाता है, ये ही वे लोग हैं जो राजनीतिज्ञों को मोटी-मोटी थैलियां थमाकर अपने हिसाब से ही रीतियां-नीतियां बनवाते हैं। ये ही किंग मेकरों की भूमिका अदा कर रहे हैं और ये ही शक्ति-साधन सम्पन्न हैं। 125 करोड़ की आबादी वाले भारत में 1.20 लाख लोग ही देश की एक तिहाई सम्पति के मालिक है। नेताओं की वोट बैंक की राजनीति से प्रेरित आर्थिक नीतियों ने ही देश का बेड़ा गर्क करके रख दिया है। रहीसों की रहनुमाई और अरबपतियों को खरबपति बनाना इनके आचरण में शामिल हो चुका है।

यही कारण है कि एक ही देश में दो हिन्दुस्तान नजर आ रहे हैं। एक वह चमक-दमक से ओत-प्रोत इंडिया है जिसमें ग्लैमर की चकाचौंध, बेशकीमती जेवर, महंगे जूते बेशकीमती पौशाकें विलासिता के तमाम संसाधन तथा जो हराम की कमाई से इतना ऊपर उठ चुका है कि अगर इनके कुत्ते को भी छींक आ जाये तो डॉक्टरों की मौजदार पर ही हाजिरी देने लगे। दूसरी ओर 85 प्रतिशत लोगों का वह अभावग्रस्त-तनावग्रस्त हिन्दुस्तान है जिसकी तकलीफे असहनीय है। सुबह-सवेरे 4 बजे सरकारी नल की लाईन, फिर राशन की लाईन और न जाने कहां-कहां सरकारी दफ्तरों की लाईन। दिन भर की हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी रूखी-सूखी रोटी भी नदारद। कोई काम की तलाश में रेल में धक्के खा रहा है तो कोई बस में हिचकोले या फिर पैदल ही मशक्कत कर जिंदगी से दो चार हो रहा है। कोई ठंड से ठिठुर कर मर रहा है तो किसी को लू लील रही है और कोई कर्ज और मुफलिसी से तंग हो आत्महत्या कर स्वयं को धन्य मान रहा है। देश का भविष्य माने जाने वाले बच्चों की हालत तो और भी बद्तर है। या तो वे मेला देखने और खेल खेलने की उम्र में आत्महत्या जैसा घातक कदम उठा रहे हैं या फिर मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का पेट पाल रहे हैं। कूड़े के ढेर से रोटी का टुकड़ा बीनने, पालिश करते, भीख मांगते या फिर खतरनाक कारखानों में काम करते इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 5 से 14 वर्ष की आयु के बाल श्रमिकों की संख्या 1991 में बाइस

लाख तीन हजार दो सौ आठ थी। अब यदि यह आंकड़ा सवा-डेढ़ करोड़ हो गया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। कारण यही है कि ये उस दोयम दर्जे के हिन्दुस्तान के बच्चे हैं जिनके माँ-बाप इन्हें आय प्राप्ति के साधन मानने को मजबूर हैं।

जिस समाज में अशक्त और अधिक निर्बल होता जाये और शक्तिशाली और अधिक साधन-सम्पन्न, उस समाज को कभी भी विकसित होता समाज नहीं कहा जा सकता। कमजोर और वंचितों की राष्ट्र विकास में भूमिका सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ही आरक्षण व्यवस्था लागू की गई थी परन्तु राजनीतिज्ञों ने उसे वोट बैंक का हथियार बना डाला, जिस कारण न तो वह अपना मूल उद्देश्य ही हासिल कर पाई और न ही समाज में आशातीत परिवर्तन आ सका। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कांग्रेस के सन् 2009 में अपने चुनावी घोषणा पत्र में सभी वर्गों के वंचित समूहों को नौकरियों व शिक्षा में समान अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ''समान अवसर आयोग'' गठित करने की घोषणा की थी। दर्जन भर मंत्रियों को यह दायित्व सौंपा भी गया है, परन्तु उनमें परस्पर ही तालमेल नहीं है। कोई इसे सच्चर समिति के मद्देनजर अल्पसंख्यकों के चश्में से देख रहा है तो कोई इसे महत्वहीन बताकर अपना पल्ला झाड़ रहा है। पहली बात तो यही है कि यदि समान अवसर उपलब्ध कराने की दृढ़ इच्छाशक्ति ही नहीं होगी तो चाहे कितने भी आयोग बन जायें, नतीजा शून्य ही रहेगा। वैसे समाज अवसर आयोग के गठन की आवश्यकता के मूल में नेताओं की भेदभावपूर्ण नीतियां ही तो हैं। और उन्हीं दोषपूर्ण नीतियों का ही परिणाम है कि आज देश को जाति-मजहब व सम्प्रदाय के नाम पर होने वाली हिंसा को रोकने के लिए कानून बनाने की आवश्यकता पड़ गई। क्या कभी कानून के बल पर हिंसा रोकी जा सकती है, यह ठीक है कानून का भय जरूरी है परन्तु प्रायः देखा गया है कि कानून बनाने वाले ही अपनी मूंछे ऊंची रखने के लिए सबसे अधिक कानून तोड़ते हैं।

जब तक सभी राजनीतिक दल दृढ़ संकल्पित हो सम्पूर्ण देशवासियों के लिए सामाजिक न्याय का रूख नहीं अपनाते, जब तक प्रत्येक नागरिक को रोटी, कपड़ा और सिर छिपाने के लिए जगह मिलने का आश्वासन नहीं मिल जाता और जब तक जाति, धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सच्चे मायनों में वंचितों के हितार्थ कार्य नहीं होते, तब तक 'समान अवसर' की इच्छा हथेली पर सरसों जमाने जैसी ही होगी और राजनीति का मूल उद्देश्य प्राप्त नहीं हो सकेगा।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णानगर, जैन बाग, वीरनगर, सहारनपुर (उ.प्र.) 247001

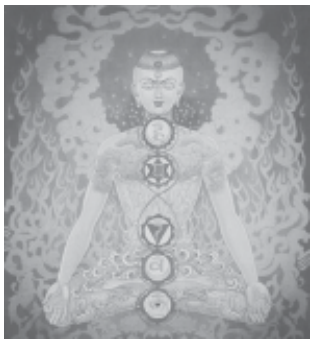

आत्म साक्षात्कार

सुबह-सवेरे
उगते हुए सूरज को देखो
और सिंदूरी आभा बिखेरते
हम से बिछुड़ते
थके-मांदे सूरज को भी
डूबते-उगते सूरज के बीच
आकाश में उगे
असंख्य तारों को देखो
चाँद को देखो
देखो टूटते तारों को भी
और जब तारों का, चाँद का
हो जाए प्रकाश क्षीण
देखो ज़मीन पर उगे लंबे-लंबे विशाल वृक्षों को
हरी-हरी पत्तियों को उनकी
फूलों की कोमल-कोमल पँखुड़ियों को
पंखुड़ियों पर फिसलने को आतुर
शबनम की बूँदों को
घास की पत्तियों की नोकों को
पत्तियों की नोक पर ठहरे जलकणों को
जलकणों में झलकते सूरज को
और जलकणों में बदलते
रंगों को देखो
जितना ये सब देख सकोगे
देख सकोगे खुद को
उतना ही
स्वयं को जान सकोगे

◆ **सीताराम गुप्ता**
ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

आत्मा का गमन

आर.जे. मौर्य

आत्मा इतना सूक्ष्म तत्त्व है कि इसके गमन की प्रक्रिया को भौतिक आँखों से नहीं देखा जा सकता, न मन-बुद्धि द्वारा इसे जाना जा सकता है और न ही वैज्ञानिकों ने अभी तक ऐसे कोई सूक्ष्म उपकरण बनाये हैं जिसके माध्यम से इसे देखा जा सके। श्री अरविन्द ऐसे ही एक महायोगी हुए हैं, जिन्होंने न केवल आत्मा को प्राप्त किया, निर्वाण की उपलब्धि की बल्कि इससे और आगे, और ऊपर भगवान के राज्य 'सत्यलोक' में पहुँचकर अतिमानस के उच्च शिखर को प्राप्त किया।

उन्होंने ऊर्ध्वलोक में स्थित 'अतिचेतना' की ऊंचाई तक आरोहण करके अधोलोक में मन-प्राण से नीचे स्थित घोर अंधकारपूर्ण जड़ निश्चेतना की अतल गहराइयों में भी गोते लगाये। एक वैज्ञानिक की भांति चप्पे-चप्पे की खोज की। चेतना के सभी अज्ञात लोकों का सर्वेक्षण और भ्रमण किया। चेतना की ऊंचाई, निचाई और विस्तार को आत्मा के फीते से नापा। उनके योग का उद्देश्य ही था मरणधर्मा शरीर का रूपांतर करके उसे दिव्यत्व और अमरत्व प्रदान करना, शरीर में नये कोषाणुओं को स्थापित करना, योग द्वारा शरीर को रोग-व्याधियों से हमेशा के लिए मुक्त करने का उपाय खोजना, मृत्यु क्यों होती है, कहाँ से आती है इस रहस्य को जानना? उन्होंने क्रम विकास के सिद्धांत और अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों के आधार पर जीवन-जगत, मृत्यु और पुनर्जन्म, आत्मा-परमात्मा, सत्य-असत्य, स्वर्ग-नरक और अमरत्व आदि की बड़ी सटीक और वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की।

अतः उनके विचारों को प्रामाणिक और सत्य मानकर हम यहाँ मृत्यु के बाद आत्मा के गमन और पुनर्जन्म की प्रक्रिया पर प्रकाश डाल रहे हैं। अधिकांश लोग यह समझते हैं कि इस पृथ्वी-लोक के अलावा और कोई लोक नहीं है अथवा सौरमंडल के नवग्रहों के बारे में कुछ जानते हैं। पृथ्वी तो सकल ब्रह्मांड का एक बहुत छोटा-सा हिस्सा है जो आँखों से दिखाई पड़ती है। परन्तु इस पार्थिव लोक से परे सूक्ष्म जगत में, अदृश्य प्राणलोक, मनोमय लोक, देवलोक, चैत्यलोक, सत्यलोक (ब्रह्मलोक), असुर लोक और निश्चेतना के अंधकारमय लोक तथा बहुत से लोक-लोकांतर हैं जिसके द्वारा जगत के सारे प्राणी यांत्रिक और अदृश्य रूप से चलायमान होते रहते हैं परन्तु इसकी कोई जानकारी उन्हें नहीं होती क्योंकि हम पूर्ण रूप से सचेतन नहीं हैं। मानव चेतना आज विकास की जिस अवस्था में है, वह अर्द्धचेतना या आंशिक चेतना है। यह विकासशील अवस्था से गुजर रही है। इसलिए अन्य लोकों की गतिविधियां हमारी पकड़ से बाहर हैं।

अन्य लोक दिखायी न देने के कारण इसीलिए कुछ लोग दृश्यमान जीवन और जगत को ही सब कुछ मानते हैं। शरीर की मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है ऐसा विश्वास करते हैं परन्तु यह धारणा सत्य नहीं है। भौतिक शरीर की मृत्यु से जीवन कभी नष्ट नहीं होता। जीवन इसके बाद भी सदा चलता रहता है। कभी वह सामने प्रकट हो जाता है और कभी परदे के पीछे अप्रकट। गीता में भी यह बात कही गई है। सच तो यह है कि हम सिर्फ भौतिक शरीर ही नहीं हैं बल्कि इसमें सूक्ष्म मन, प्राण और आत्मा का भी निवास है। ये सारे भौतिक और अभौतिक तत्त्व मिलकर जीवन को चलाते हैं। अतः श्मशान में शरीर को जला दिये जाने मात्र से मन, प्राण और आत्मा का विनाश नहीं होता बल्कि वे शरीर को त्याग कर अपने-अपने लोकों में वापस चले जाते हैं। मृत्यु सिर्फ एक पड़ाव और विश्राम है अगली यात्रा की तैयारी के लिए। जन्म और मृत्यु जीवन के विकास की एक सतत प्रक्रिया है तथा भगवान की ओर एक गुप्त आरोहण है। क्योंकि आत्मा का उद्देश्य है अपना विकास करके अंततोगत्वा भगवान को पाना और उद्गम में लौट जाना। इस परमधाम की दूरी और चढ़ाई इतनी अधिक है कि किसी एक जीवन-काल में इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि शरीर नश्वर है, क्षरण इसका स्वभाव है। यह ज्यादा समय टिक नहीं सकता इसलिए मृत्यु अनिवार्य रूप से आती है। हमारे योगी कहते हैं धरती पर मनुष्य का सौ-सवा-सौ वर्ष का लम्बा जीवन भी इस अनंत यात्रा के परिप्रेक्ष्य में एक पल या क्षुद्र चीटीं के जीवन के समान है। सिर्फ योग साधना द्वारा ही इस दूरी को कम किया जा सकता है। जब तक विकासशील चेतना अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर लेती अर्थात् हम भगवान को प्राप्त नहीं कर लेते या शरीर का रूपांतरण नहीं हो जाता तब तक मृत्यु और पुनर्जन्म अनिवार्य है। इससे भोगी और योगी कोई नहीं बच सकता।

आत्मा के गमन के बारे में जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि आत्मा और अंतरात्मा में क्या फर्क है? प्रायः अधिकांश लोग अंतरात्मा (जीवात्मा) को ही आत्मा समझते हैं परन्तु वास्तव में इन दोनों में बहुत अंतर है। विशुद्ध आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी तत्त्व है। इसका न जन्म होता है, न विकास, न मृत्यु और न पतन। यह शाश्वत और सार्वभौम है जैसा कि श्रीमद्भगवत गीता में **वासांसि जीर्णानि यथा विहाय....**(अध्याय-2/21) में और **नैनं छिदन्ति शस्त्राणि...**(अध्याय-2/22) में कहा गया है, जबकि अंतरात्मा जिसे चैत्य पुरुष या जीवात्मा कहते हैं एक विकासशील तत्त्व है, इसका लक्ष्य है बार-बार धरती पर जन्म लेकर अपनी चेतना को विकसित करना और भगवान की ओर कदम-दर-कदम आरोहण करना। तात्विक दृष्टि से जन्म और मृत्यु कुछ नहीं सिर्फ चेतना के विकास की एक अत्यंत धीमी प्रक्रिया है। श्री अरविंद कहते हैं "विशुद्ध आत्मा अजन्मा होता है,

जन्म और मृत्यु में से नहीं गुजरता, जन्म या शरीर, मन या प्राण इस अभिव्यक्त प्रकृति से स्वतंत्र होता है। यद्यपि वह इन सब को धारण करता और अवलम्ब देता है फिर भी इसमें बंधता नहीं, सीमित नहीं होता, प्रभावित नहीं होता दूसरी ओर अंतरात्मा वह है जो जन्म में उतर आता है और मृत्यु द्वारा किन्तु स्वयं उसकी मृत्यु नहीं होती क्योंकि वह अमर है एक अवस्था से अन्य अवस्था में जाता है, पृथ्वीलोक से अन्य लोकों में जाता है और पृथ्वी जीवन में वापस आता है।''

जिस प्रकार एक अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरते समय रॉकेट की शक्ति से धरती के गुरुत्वाकर्षण से ज्यों-ज्यों ऊपर की ओर गमन करता है त्यों-त्यों कैप्सूल का बाहरी हिस्सा विखंडित और भस्म होता जाता है और अंदर का महत्त्वपूर्ण मुख्य भाग अपने गंतव्य मार्ग की ओर आगे बढ़ता जाता है। लगभग उसी प्रकार हम आत्मा के गमन को भी समझ सकते हैं। आत्मा ने जिस भौतिक शरीर को धारण किया था, मृत्यु बाद उस स्थूल शरीर (अन्नमय कोष) को श्मशान में जला दिया जाता है, वह पंच तत्त्वों में विलीन हो जाता है, परन्तु इस शरीर ने अपने कर्म द्वारा जीवन भर जो अच्छे-बुरे संस्कार अर्जित किये थे उसे भस्म नहीं किया जा सकता। प्रयाण के समय जीवात्मा इसके सार तत्त्व को समेट कर अपने साथ ले जाती है। यही बीज बनता है अगले जन्म के लिए।

श्री अरविंद कहते हैं कि ''जब शरीर विघटित हो जाता है तो प्राण सत्ता, प्राण लोक में चली जाती है और वहाँ कुछ समय तक रहती है, किन्तु कुछ समय बाद प्राणिक कोष भी विलीन हो जाता है। मनोमय कोष सबसे बाद में विलीन होता है। अंत में अंतरात्मा या चैत्यपुरुष नये जन्म का समय निकट आने तक चैत्य लोक में विश्राम करने के लिये चला जाता है।'' वे पुनः आगे कहते हैं कि ''जीव चैत्य लोक में सीधे जा सकता है। किन्तु यह निर्भर करता है, प्रयाण के समय चेतना की स्थिति पर। यदि उस समय चैत्य पुरुष सामने के भाग में हो तो तत्काल उस लोक में चले जाना बिल्कुल संभव है। यह चीज मानसिक, प्राणिक और चैत्य अमरत्व पर निर्भर करती है।''

इसलिए योगी और संत-महात्मा कहते हैं कि यदि हम दिवंगत आत्मा का भला चाहते हैं, उसकी शांति चाहते हैं तो उसके लिए दुःख-शोक मनाना और रोना-तड़पना नहीं चाहिए। ऐसा करके हम उसकी यात्रा में बाधा पहुँचाकर उसे कष्ट देते हैं। जितना ही घर-परिवार के लोग, पड़ोसी और रिश्तेदार उसके लिए रोते-बिलखते हैं उतना ही अधिक देर तक उसका प्राण धरती के वायुमंडल से बंधकर छटपटाता है, मुक्त नहीं हो पाता, मनोलोक में प्रवेश नहीं कर पाता। वास्तव में रो-रोकर, शोक प्रकट कर परिवार के लोग उसके सूक्ष्म शरीर को नीचे खींचते हैं। होना यह चाहिए कि अपने मन की अशांति और व्याकुलता को शीघ्र दूर करके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से भगवान से चुपचाप प्रार्थना करनी चाहिए अथवा शांति पाठ करना चाहिए कि उसकी महायात्रा सुखद और आनन्ददायक हो। इसलिए शायद प्रसिद्ध चिंतक आचार्य रजनीश कहा करते थे कि दिवंगत आत्मा के लिए शोक नहीं जश्न मनाना चाहिए तथा यह भी कहते थे कि यदि अगला जन्म अच्छा पाना चाहते हो तो समय रहते अच्छी मृत्यु की तैयारी करो।

मनुष्य की जिस क्षण मृत्यु होती है वह क्षण बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। उस क्षण जैसी अच्छी-बुरी चेतना होती है, भावी जन्म की अवस्थाओं का निर्णय लगभग उसी समय हो जाता है। चैत्य जगत में विश्राम के लिए पहुँचने के पश्चात अंतरात्मा अपने पिछले विकास और अनुभवों के आधार पर अगले जन्म यानी भविष्य की रूपरेखा तैयार करती है और उपयुक्त समय आने पर अपने चुनाव के अनुसार जन्म लेना है, यह विश्राम काल में सुनिश्चित हो जाता है। वहीं पुरानी अमर अंतरात्मा अब अपने साथ नया शरीर, नया प्राण और नये मन को लेकर अगले विकास के लिए पुनः धरती पर आती है। फिर भी पुनर्जन्म की प्रक्रिया अत्यंत गुह्य और जटिल होती है। कोई निश्चित फार्मूला नहीं बनाया जा सकता। कर्मानुसार जितने प्राणी उतने प्रकार के पुनर्जन्म हो सकते हैं।

कुछ लोगों की धारणा है कि दुष्ट प्रकृति के मनुष्य या पापी व्यक्ति, अगले जन्म में कीड़े-मकोड़े, सांप-बिच्छू, उल्लू, कौवा, गिद्ध या सूअर आदि नीच योनियों में अथवा पशु योनियों में जन्म लेते हैं परन्तु श्री अरविंद का मानना है कि निम्न योनियों से क्रमशः विकास करके ही कोई जीव उच्च योनि-मनुष्य के रूप में जन्म लेता है। अतः एक बार मनुष्य बन जाने के बाद वह पुनः निचली योनि या पशु योनि में वापस नहीं जा सकता। यह क्रम विकास के सिद्धांत के विरुद्ध है। क्रम विकास पीछे नहीं आगे जाता है। हाँ, यह अलग बात है कि एक दुष्ट और अपराधी व्यक्ति, हिंसक और व्यभिचारी व्यक्ति अपने दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप बतौर सजा के किसी दुष्ट परिवार में या खराब वातावरण में और खराब परिस्थितियों में जन्म ले या विकृत स्वभाव का हो या वह भयंकर गरीबी और अभाव से जूझे या शारीरिक रूप से अपंग हो और उसकी आगे की प्रगति अवरुद्ध हो जाए अथवा वह रोग-व्याधियों से सदा पीड़ित रहे आदि-आदि। मनुष्य योनि में रहते हुए ही वह अपने कर्मों की सजा भुगतता है ताकि उसका उसे एहसास हो और अपने को सुधारे, आगे बढ़े। पशु या निचली योनि में बुद्धि का विकास न होने से वह अपने कर्मफल को समझ नहीं सकता। कर्मफल का सिद्धांत मनुष्यों पर ही लागू होता है पशु-पक्षियों पर नहीं। श्री अरविंद कहते हैं, एक बार मानवीय चेतना पा लेने के बाद अंतरात्मा कभी निम्न पशु चेतना की ओर नहीं मुड़ सकती, वनस्पति और क्षुद्र जीवों कीड़े-मकोड़ों की तो बात ही नहीं उठती।

एच-104, हर्ष विहार रिट्रीट, अपोजिट मैदा मिल, भोपाल-2

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष

गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन

एवं

समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

मनुष्य बनकर मनुष्यता बचाई जा सकती है

अणुव्रत समिति मुम्बई

स्वस्थ समाज संरचना के स्वप्न को साकार करने की दिशा में अणुव्रत समिति मुंबई और आस-पास के उपनगरों की उपसमितियां अणुव्रत आंदोलन को पूरी तन्मयता से आगे बढ़ाने में प्रयासरत हैं। वार्षिक साधारण सभा में अर्जुन बाफना अध्यक्ष पद पर चुने गये। इस अवसर पर स्व. पृथ्वीराज कच्छारा व राजमल डूंगरवाल को उनके कार्यों के संदर्भ में विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय सेवाओं के लिए प्रकाश कोठारी, ख्याली कोठारी, राजेन्द्र मुणोत, सोहनलाल सिंघवी, सुनील संचेती, नरेन्द्र तातेड़, कंचन बम्ब व ललिता जोगड़ को कार्यकर्ता सम्मान प्रदान किया गया।

● शाहपुर स्थित मानस मंदिर के रमणीय श्रद्धा स्थल पर 100 कार्यकर्ताओं के साथ पर्यटन सह-प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। संस्था अध्यक्ष ने सदस्यों से अणुव्रत कार्यों हेतु प्रतिदिन 10 रुपए विसर्जन का आह्वान किया। लगभग 60 व्यक्तियों ने तत्काल दो वर्ष तक निश्चित राशि विसर्जन करने का संकल्प स्वीकार किया।

● इस वर्ष अणुव्रत समिति ने मुंबई सोसायटी एक्ट के अंतर्गत रजिस्ट्रेशन करवा लिया। एनजीओ के रूप में आयकर में राहत हेतु सुविधा का प्रस्ताव संबंधित कागजात अधिकारी को सौंप दिये। समिति ने अपनी एक वेब-साइट रजिस्टर्ड करवा ली हैं, जो अणुव्रत समिति मुंबई की गतिविधियों का संपूर्ण ब्यौरा उपलब्ध करवाएगी। मुम्बई से 250 किमी. लम्बी शिर्डी अणुव्रत पैदल यात्रा आयोजित हुई। रास्ते भर अणुव्रत के पेम्फलेट वितरित कर जन-जागरण अभियान चलाया गया। चेम्बूर स्थित घाटला विलेज के जल्लोस मंडल द्वारा पदयात्रियों को अणुव्रतों के संदेश युक्त टी-शर्ट दी गयी।

● मुम्बई विश्वविद्यालय परिसर में एन.सी.सी. के सैकड़ों छात्रों के बीच अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन।

● 20 विद्यालयों के 80 बच्चों के बीच ईस्माइल युसूफ कॉलेज जोगेश्वरी के सहयोग से ''पर्यावरण और हम'' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन। इसमें एक अपंग विद्यार्थी ने अपने पैरों से चित्र बनाया। ईस्माइल युसूफ कॉलेज के सहयोग से छात्र-छात्राओं के मध्य अणुव्रत विषय पर आधारित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें 25 कॉलेजों 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसी कॉलेज के प्रांगण में 26 स्कूलों के 72 बच्चों की निबंध प्रतियोगिता करवाई गयी। मुंबई के अनेकों राष्ट्रीय स्तरीय दैनिक अखबारों में अणुव्रत से संबंधित लेखों का प्रकाशन हुआ। 11 उपसमितियों के गठन के उपरांत अणुव्रत समिति मुंबई ने इनकी गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध की।

● नवी मुंबई नेरूल स्थित आचार्य तुलसी उद्यान में त्रिदिवसीय मेगा प्रेक्षाध्यान व योग साधना शिविर लगाया गया। 20-25 किमी. दूर से भी प्रतिभागियों ने शिविर का लाभ लिया। 1000 से 1500 प्रतिभागियों ने समण सिद्धप्रज्ञ के निर्देशन में अभ्यास किया। इस कार्यक्रम को तेयुप, नेरूल, वाशी व समस्त नवी मुंबई की तेयुप तथा अणुव्रत समिति व महिला मंडल के कार्यकर्ताओं व दानदाताओं ने अर्थ-सहयोग देकर सफल बनाया। प्रथम कदम के रूप में अणुव्रत प्रचेता प्रशिक्षण अभियान शुरू किया।

● दक्षिण मुंबई में राजस्थान प्रतिभा सम्मान समारोह में सहभागिता। 20 नये आजीवन सदस्य बनाए तथा अणुव्रत आचार संहिता कार्ड का प्रकाशन हुआ। मध्य मुंबई में उपसमिति द्वारा हजारों व्यक्तियों को पानी बचाओ, बिजली बचाओ एवं पृथ्वी बचाओ के संदेश एसएमएस द्वारा प्रेषित कर जनजागरण किया। पश्चिम मुंबई-1 में सांताक्रुत में स्कूली बच्चों के लिए अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता आयोजित की। उत्तर मुंबई-1 में पर्यावरण बचाओ अभियान चलाकर पौध रोपण कार्यक्रम शुरू किया।

● थाना क्षेत्र में भी अणुव्रत उपसमितियों द्वारा वृक्षारोपण कार्य हुआ। ''कैसे सोचें'', ''परिवार के साथ कैसे रहें'' पुस्तकों का सरकारी संस्थाओं व अधिकारियों में वितरण हुआ। नई मुंबई एवं रायगढ़ में प्रेक्षाध्यान शिविर लगाकर अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता को बढ़ाया गया। अणुव्रत समिति मुंबई अपने सक्षम नेतृत्व में अणुव्रत आंदोलन को उत्तरोत्तर आगे बढ़ा रही है।

परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म

अणुव्रत समिति उदयपुर

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी अणुव्रत समिति उदयपुर ने मानव सेवा, पशु सेवा, प्रेम, सद्भाव एवं भ्रातृभाव हेतु अपने वार्षिक लक्ष्यानुसार श्रेष्ठतम उपलब्धियां संस्थाध्यक्ष गणेश डागलिया एवं उनकी टीम के रचनात्मक एवं सकारात्मक नेतृत्व में अर्जन, सर्जन और विसर्जन किया है। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

● अक्टूबर 2009 में प्रदेश समिति के निर्देशानुसार दीपावली पर्व प्रदूषण मुक्त मनाने हेतु अनुरोध किया गया।

● 6 नवंबर 09 को जिला कलेक्टर को पीछोला झील से जल आपूर्ति न कर इसकी शोभा बनाए रखने का आग्रह किया गया। 22 नवंबर 09 को अणुव्रत दर्शन को प्रतिपादित करने हेतु साध्वी कंचनप्रभा के सान्निध्य में तथा बीका भाई ट्रस्ट एवं महावीर इंटरनेशनल के सम्मानित सदस्य की उपस्थिति में प्रतिपादित किया गया।

● 17 जनवरी 2010 को एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 340 रोगी लाभान्वित हुए।

● 4 फरवरी 2010 को जिला कलेक्टर उदयपुर के विकास कार्यों में सहभागिता हेतु समिति को सम्मानित किया गया। 14 फरवरी 2010 को उदयपुर सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में डायबीटिज एवं ब्लड प्रेशर जांच शिविर डॉ. देवेन्द्र धोधावत पूर्व निदेशक पश्चिमी सांस्कृतिक केन्द्र के मुख्य आतिथ्य में संपादित हुआ।

● 7 मार्च, 10 को नशामुक्ति, भ्रष्टाचार विरोध एवं पर्यावरण जागरूकता के संदर्भ में आयोजित रैली अणुव्रत समिति, नारायण सेवा संस्थान, दो नर्सिंग कॉलेज, तुलसी निकेतन, हीरो होण्डा आदि संस्थानों के 500 सदस्यों ने रैली में भाग लिया।

● 3 अप्रैल, 10 को बोहरा समुदाय के धर्मगुरु सैय्यदना साहब के 99वें जन्म दिवस पर पुष्पहार से शोभा यात्रा का स्वागत। 18 अप्रैल, 10 साध्वी सुमनकुमारी के नेतृत्व में सेक्टर-11 में अणुव्रत नियमों पर गोष्ठी।

● 9 मई,10 आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर शोक सभा का आयोजन एवं श्रद्धांजलि दी गयी। 30 मई,10 को निःशुल्क मधुमेह, मोटापा, थायराईड जांच शिविर डॉ. डी. सी. शर्मा एवं डॉ. शोभालाल ओदिच्य के सान्निध्य में विज्ञान भवन में आयोजन। 169 रोगी लाभान्वित हुए।

● 12 जून, 10 को अणुव्रत समिति, एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा एवं पशुपालन उदयपुर द्वारा पशुओं की चिकित्सा हेतु शिविर। 30 जून, 10 अणुव्रत समिति, विज्ञान समिति एवं महावीर इंटरनेशनल के तत्वावधान में रा.उ.प्रा. वि. घणोली में डॉ. डी.पी. सिंह एवं अन्य चिकित्सकों द्वारा 224 रोगी लाभान्वित हुए। 4 जुलाई, 10 को अच्छी वर्षा हेतु फतहसागर पाल पर यज्ञ कराया गया। 10 जुलाई, 10 आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिवस को चार दिवसीय कार्यक्रम के रूप में मनाया गया। प्रथम दिवस 1008 मरीजों को खाद्य-सामग्री बांटी गयी। द्वितीय दिवस 41 लोगों ने रक्तदान किया। 11 जुलाई, 10 को केन्द्रीय जेल में 111 पौधों का रोपण किया गया। 16 जुलाई, 10 को 12000 विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तिकाएं बांटी गयी। 400 अभ्यास पुस्तिकाएं पिछड़े इलाके कोटड़ा में भेजी गयी। 25 जुलाई, 10 को गुरु पूर्णिमा पर नीमच माता पहाड़ी पर 50 फलदार वृक्ष लगाए गए। 30 जुलाई, 10 को अणुव्रत समिति द्वारा केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी का उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में चांदी से निर्मित गणेशजी, पगड़ी, शॉल, उपरड़ा आदि ओढ़ाकर अध्यक्ष गणेश डागलिया ने स्वागत किया और अणुव्रत समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

● अणुव्रत समिति, उदयपुर के समस्त सम्मानित सदस्यगण विविध क्षेत्रों के निष्णात एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व हैं जो श्रद्धा, विश्वास एवं समर्पण के साथ मानव समाज की सेवा में प्रेम, स्नेह, करुणा, सौहार्द, सहृदयता तथा संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रहे हैं। ये सभी कार्यक्रम संस्था अध्यक्ष गणेश डागलिया के कुशल नेतृत्व में किये गये।

अणुव्रत समिति शाहपुरा

● क्षेत्र में मतदाताओं के बीच चुनाव-शुद्धि परिपत्र का वितरण कराया एवं स्वस्थ मतदान हेतु प्रेरित किया।

● नगर के तमाम बुद्धिजीवियों और प्रबुद्ध लोगों के बीच 'लोकतंत्र व चुनाव' विषय पर साहित्य का वितरण कराया।

● नगरवासियों के बीच अणुव्रत आचार संहिता के फोल्डर एवं पोस्टर बंटवा कर क्षेत्रवासियों को अणुव्रत आंदोलन के साथ जुड़ने को प्रेरित किया और इस हेतु जनसंपर्क अभियान चलाया गया।

● समाज व्यसन मुक्त हो और नशे से दूर रहे, इसी विचार को लोगों तक प्रचारित और प्रसारित करने की दृष्टि से तम्बाकू दिवस पर एक उद्देश्यपूर्ण आलेख का प्रकाशन किया।

● लोगों को अणुव्रत साहित्य के पठन-पाठन पर बल दिया ताकि अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत की अवधारणा से और अणुव्रत आंदोलन से जोड़ा जाए।

सुधार का मूलबीज है अनुशासन

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के 9 अगस्त 2010 को संपन्न हुए वार्षिक अधिवेशन और नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री संपत शामसुखा के नेतृत्व में राजस्थान के विभिन्न संभागों में कार्यरत अणुव्रत समितियों की सक्रियता और गतिशीलता बनाए रखने एवं उनसे निरंतर संपर्क हेतु तुरत-फुरत संगठन यात्राएं आयोजित कीं। इस दौरान कार्यसमिति सदस्यों के साथ प्रथम फेज की संगठन यात्रा का श्रीगणेश किया गया। उनकी पहली संगठन यात्रा प्रभावी रही। इस यात्रा से उत्साहित होकर 4 सितंबर 2009 को द्वितीय फेज की यात्रा पर चल पड़े। 5 सितंबर, 6 सितंबर 2009 को तीसरा फेज, 10 सितंबर 2009 को चौथा फेज 6 सितंबर 2009 व पांचवां फेज की यात्रा 19 सितंबर, 21 सितंबर 2009 छठा फेज, सातवां फेज। इसी तरह कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ 4 नवंबर 2009 तक की संगठन यात्रा कर राजस्थान क्षेत्र की लगभग सभी अणुव्रत समितियों से संपर्क कर अणुव्रत आंदोलन में तेजस्विता लाने का कार्य किया।

इन संगठन यात्राओं के दौरान जगह-जगह अणुव्रत सदस्यता अभियान चलाया और नये-नये लोगों से अणुव्रत संकल्प-पत्र भरवाए गए। इनके नेतृत्व में अणुव्रत आचार संहिता के कलेण्डरों का प्रकाशन करवाया गया। जिन्हें विभिन्न स्थानों पर तथा स्कूलों में पहुंचाए गए। विभिन्न स्कूलों में अणुव्रत विद्यार्थी आचार संहिता बोर्ड़ बनवाकर लगवाए गए। श्रीडूंगरगढ़ में 15 मार्च 2010 को भ्रष्टाचार रैली का भव्य आयोजन करवाया गया।

अणुव्रत समिति सरदारशहर के वार्षिक अधिवेशन व चुनाव में सहभागिता देते हुए चुनाव संपन्न करवाया गया। 1 जनवरी 2010 को प्रज्ञा भारती भीलवाड़ा में 'बिखरते परिवार बढ़ती हिंसा' और 19 अप्रैल 2010 को ''स्वस्थ समाज संरचना में अणुव्रत की भूमिका'' पर संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

अणुव्रत आंदोलन को सुव्यवस्थित गति देने की दिशा में पड़िहारा और भीलवाड़ा में अणुव्रत प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। अणुव्रत महिला शिक्षण महाविद्यालय विनयपुरम् के वार्षिकोत्सव में सहभागिता देकर उनकी गतिविधियों से सीखने का भी प्रयास रहा। शाहपुरा (भीलवाड़ा) में अणुव्रत समिति के गठन में सहयोग देकर वहां लोगों में अणुव्रत के प्रति पुनर्जागरण किया गया।

राजस्थान के नगर पालिका चुनावों में चुनाव शुद्धि पेम्फ्लेट बंटवा कर मतदाताओं को स्वस्थ मतदान के लिए प्रोत्साहित किया उत्तरोत्तर जिसका अच्छा प्रभाव रहा और मतदाताओं द्वारा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के इस कार्यक्रम को खूब सराहा गया।

इसके अलावा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति ने अणुव्रत के सदस्यों को समय-समय पर एसएमएस के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता बनाए रखी। अणुव्रत पाक्षिक पत्रिका ग्राहक, प्रचार-प्रसार में सहभागिता भी निरंतर दी जा रही है।

पर्यावरण शुद्धि एवं नशामुक्ति

अणुव्रत समिति जयपुर

अणुव्रत समिति जयपुर ने आलोच्य वर्ष में पर्यावरण शुद्धि के अंतर्गत एक विद्यालय को पौधरोपण एवं उसके रख-रखाव का पूरा उत्तरदायित्व निभाया है। स्थानीय विद्यालयों एवं सार्वजनिक संस्थानों आदि स्थानों पर पर्यावरण बचाओ, पानी बचाओ, पृथ्वी बचाओ एवं बिजली बचाओ के स्टीकर लगाकर जन जागरण किया गया।

स्थानीय प्रेम निकेतन विद्यालय में जीवन में अनुशासित जीवन कैसे जीएं विषय पर परिचर्चा एवं बच्चों को खाद्य-सामग्री उपलब्ध करवायी। स्थानीय विद्यालयों में बच्चों और शिक्षकों के बीच अणुव्रत आचार संहिता के पोस्टर द्वारा उन्हें उनके दायित्वों से रूबरू करवाया गया। समिति ने अणुविभा परिसर में अणुव्रत आंदोलन के अंतर्गत नैतिक शिक्षण की कार्यशाला आयोजित की। जिससे प्रतिभागियों को स्वयं एहसास हो कि जीवन में क्या अच्छा है क्या बुरा है।

समिति ने विभिन्न स्कूलों में नशामुक्ति अभियान चलाकर विद्यार्थियों को नशे से होने वाली हानियों की जानकारियां दी गयी। नशा और अपराध मुक्ति के लिए एक ही तत्त्व है जागरूकता। इस दौरान विद्यालय हेतु दो कम्प्यूटर, अलमीरा एवं वाटर कूलर भी दिए गए।

प्रेम निकेतन में बच्चों को पोशाक व कम्बलों का वितरण तथा 400 बच्चों को भोजन उपलब्ध करवाया गया। इस हेतु बिमल बैद का सौजन्य रहा।

दो विकलांग व्यक्तियों के लिए ज्ञान चोरड़िया के सौजन्य से जयपुर फुट की व्यवस्था की गयी तथा निर्मला सुराणा के सौजन्य से रोगियों के लिए अस्पताल में बैड भी उपलब्ध करवाए गए।

प्रेम निकेतन विद्यालय में ही बच्चों को खाद्य-सामग्री का भी वितरण करवाया जाता रहा है। चुनाव शुद्धि की दिशा में जयपुर नगर की महापौर ज्योति खण्डेलवाल को भ्रष्टाचार के विरोध में ज्ञापन दिया गया। अणुव्रत समिति जयपुर अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है।

स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ समाज

अणुव्रत समिति राजसमंद

अच्छी से अच्छी व्यवस्था बिना अनुशासन और गतिशीलता के लड़खड़ा जाती है। इसीलिए सर्वप्रथम संगठन की एकजुटता और सक्रियता आवश्यक है। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति का वार्षिक अधिवेशन राजसमंद में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश भर की अधिकांशतः अणुव्रत समितियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में समीक्षा करने के साथ-साथ भीलवाड़ा के संपतमल शामसुखा को अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इस दौरान राजसमंद के अणुव्रत कार्यकर्ताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई गयी तथा कार्यकर्ताओं को अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों में तेजस्विता लाने हेतु कांकरोली एवं राजनगर की संघीय एवं सार्वजनिक सभाओं से सहयोग लेने हेतु निवेदन किया गया।

मुनि सुरेशकुमार हरनावा के सान्निध्य में भिक्षु बोधिस्थल राजसमंद में अणुव्रत चेतना दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि होमियोपैथी चिकित्सा, शिक्षाविद् एवं साहित्यकार बालकृष्ण उपस्थित हुए।

अणुव्रत समिति राजसमंद ने 5 सितंबर 2009 से 11 सितंबर 2009 तक अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का सफल कार्यक्रम साधु-साध्वियों के सान्निध्य में तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में चलाया। जिसमें साम्प्रदायिक सौहार्द, अहिंसा, अणुव्रत प्रेरणा, पर्यावरण शुद्धि, नशामुक्ति, अनुशासन दिवस एवं जीवन विज्ञान दिवस के आयोजन हुए। नशामुक्ति दिवस जिला कारावास राजसमंद में साध्वी कांतियशा एवं सुमनयशा के सान्निध्य में आयोजित किया गया। समिति के अध्यक्ष जीतमल कच्छारा ने इस आयोजन की सफलता हेतु कारावास में बंद कैदियों के बीच कार्यक्रम आयोजित करवाया। फलस्वरूप लगभग 125 कैदियों ने नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प किया।

21 मई 2010 को गांधी सेवा सदन राजसमंद के महाप्रज्ञ भवन में प्रज्ञा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोक गमन पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी। जिसमें विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और राजस्थान परिषद् के अनेक साहित्यकार लेखक और कवियों के साथ-साथ अनेकानेक गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्यश्री को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत समिति के मंत्री मदनलाल धोका ने एवं आभार ज्ञापन जीवन मादरेचा ने किया।

अणुव्रत को जीवन में उतारें

अणुव्रत समिति आसीन्द

अणुव्रत समिति आसीन्द द्वारा वर्ष 2009-2010 में विविध कार्य संपादित किये गये। विवरण निम्न प्रकार हैं

- समिति द्वारा अणुव्रती बनो अभियान के अंतर्गत 30 अणुव्रत परिवार एवं 40 सदस्यों को अणुव्रत आंदोलन से जोड़ा गया।
- कार्यसमिति के सदस्य डॉ. गिरधारी विश्वास के द्वारा अमूल्य वोट का अधिकारी कौन? के पांच हजार पेम्फ्लेट छपवाकर संपूर्ण नगर में वितरण।
- ग्राम बागा बा का खेड़ा में अणुव्रत पार्क के द्वार का निर्माण तथा लोहे की फाटक लगवाई गई एवं वृक्षारोपण कराया गया।
- अणुव्रत पार्क बागा बा का खेड़ा में जिला प्रमुख के कोटे से हैण्डपम्प लगवाया गया।
- भ्रष्टाचार विरोध दिवस 9 मार्च, 2010 को आदर्श विद्या मंदिर में तथा 10 मार्च 2010 बी.डी.ओ. की अध्यक्षता में उ.प्रा.वि. बड़ा खेड़ा में आयोजित किया गया। इसमें स्कूल केन्द्र के सभी शिक्षक उपस्थित थे। समूह चर्चा का आयोजन हुआ।
- अणुव्रत पार्क में पूर्व अध्यक्ष कल्याणमल गोखरू, सत्यनारायण सेन एवं तेजमल बलाई ने 30 जुलाई 2010 को वृक्षारोपण किया। पूर्व में लगाये गये सभी पेड़ जीवित हैं।
- पार्क में वृक्षों की सुरक्षा के लिए चार हजार ईंटें प्राप्त की जिसमें सुभाष जैन का प्रमुख सहयोग रहा।
- व्यसनमुक्ति के संकल्प-पत्र भरवाये गये, कुल 31 व्यक्तियों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।
- अणुव्रत ग्राम बागा बा का खेड़ा के राजकीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं को सोहनलाल, शांतिलाल बड़ौला के सौजन्य से विद्यालयी गणवेश उपलब्ध करायी गयी।
- रा.प्रा.वि. बागा बा का खेड़ा में विद्यालय में सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कराई गयी। प्रधानाचार्य के निवेदन पर यह कार्य संपादित हुआ। डॉ. विश्वास ने इसमें सहयोग किया।
- अणुव्रत ग्राम बागा बा का खेड़ा की तीन छात्राओं ने विद्यालय छोड़ दिया था उन्हें सहयोग कर पुनः आसीन्द स्थित विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया।
- मुनि सुरेशकुमार हरनावां के सान्निध्य में अणुव्रत समिति आसीन्द के चुनाव 4 अगस्त 2010 को सम्पन्न करवाये गये। जिसमें आगामी दो वर्ष हेतु नोरतनमल कांठेड़ को अध्यक्ष एवं रवि रांका को मंत्री बनाया गया।

अणुव्रत बदलेगा युग की धारा

अणुव्रत समिति गंगापुर

अणुव्रत समिति गंगापुर ने वर्ष भर में अणुव्रत की विभिन्न प्रवृत्तियों के माध्यम से कार्यक्रमों का संचालन किया। समिति की सक्रियता बनाये रखने के लिए नियमित कार्यसमिति की बैठकें आयोजित की जाती रही हैं। चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत पोस्टर्स एवं पेम्फ्लेट्स का वितरण किया गया। जन जागृति करते हुए स्वस्थ मतदान का वातावरण बनाया। स्थानीय स्तर पर व्यसनमुक्ति के लिए निबंध प्रतियोगिता और प्रतिभागियों के बीच संबंधित प्रचार-प्रसार सामग्री लोगों को भेंट की गई।

अणुव्रत आचार संहिता के कार्यान्वयन हेतु विद्यार्थियों के लिए एवं शिक्षकों के लिए अणुव्रत के कार्यक्रम कर नगर व क्षेत्र के 8 चयनित शिक्षकों तथा 10 प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मान-पत्र, मोमेन्टो और साहित्य भेंट किया गया।

कार्यक्रमों की श्रृंखला के बीच अणुव्रत समिति द्वारा देवरमण भवन में अध्यक्ष मांगीलाल शर्मा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गयी। प्रकाश बोलिया नये सत्र के लिए सर्व सम्मति से अध्यक्ष घोषित किये गये। अणुव्रत ग्राम मैलोनी में अहिंसा प्रशिक्षण शिक्षक संसद के मंत्री मदनलाल कावड़िया के सान्निध्य में आयोजित किया। सितंबर 2009 में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का कार्यक्रम अलग-अलग विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से सफलतापूर्वक मनाया गया। सभी प्रतियोगिताओं में जगदीश बैरवा व आनंदीलाल हिरण की प्रमुख भूमिका रही।

नवंबर 2009 को समिति ने 45 विद्यालयों में चंद्रसिंह, अशोक कुमार कोठारी उद्योगपति भीलवाड़ा के सौजन्य से गणवेश वितरण करवाया। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा, मनोहर बाफना, शंकरलाल पीतलिया, संस्था संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण, मांगीलाल शर्मा, प्रकाश बोलिया सहित नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। इस अवसर पर अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की 10 महिलाओं को अर्धमूल्य पर सिलाई मशीनें दी गयी।

अणुव्रत समिति गंगापुर ने मैलोनी ग्राम को अणुव्रतमय बनाने की दिशा में गांव के पुनरुद्धार हेतु अनेकों प्रवृत्तियां शुरू कर रखी हैं, जिनका परिणाम सकारात्मक रूप से उभर कर आ रहा है। इसके साथ-साथ कबीर नगर में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का भी संचालन किया गया। मैलोनी ग्राम में ध्यान-योग, एक्यूप्रेशर सेवा रोजगार की दृष्टि से मोमबत्ती-अगरबत्ती बनाने का प्रशिक्षण तथा सिलाई केन्द्र चलाए जा रहे हैं जिसमें 400 महिलाएं प्रशिक्षणरत हैं। यहां वृक्षारोपण, जीवन विज्ञान जैसी प्रवृत्तियों को चलाकर अणुव्रत की अवधारणा को साकार किया जा रहा है।

जीवन में विकृति घोलते हैं व्यसन

अणुव्रत समिति सूरतगढ़

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए नशीले पदार्थों से होने वाले दुष्परिणामों आदि के बारे में बाल पीढ़ी को जागरूक एवं अवगत करना अत्यन्त जरूरी है। अणुव्रत समिति सूरतगढ़ ने अपने क्षेत्र में आठ विभिन्न विद्यालयों के 3000 विद्यार्थियों के मध्य नशामुक्ति तथा जीवन विज्ञान कार्यक्रम आयोजित किए गये। विद्यार्थियों और शिक्षकों को अणुव्रत की प्रचार-प्रसार सामग्री आवंटित की गयी।

इसके अतिरिक्त अन्य विद्यालयों के 1000 विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान पुस्तिका वितरण कर स्वस्थ जीवन शैली की प्रेरणा दी। चरित्र निर्माण अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है। शहर के 8 विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए अणुव्रत के 3 बाई 5 फीट के पोस्टर लगवा कर उन्हें जीवन में संयममय होने की एक वैचारिक क्रांति का प्रयास किया।

अणुव्रत समिति सूरतगढ़ के प्रयास और कार्य दिशा से प्रभावित हो व्यापार-मंडल सूरतगढ़ ने राशि 50,000 रु. के सहयोग से राजकीय महाविद्यालय में जीवन विज्ञान का संचालन करवाया। इस हेतु व्याख्याता भी उपलब्ध करवाए गए। राजकीय विद्यालय के बी.ए. के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के छात्रों के बीच जीवन विज्ञान की लिखित परीक्षा आयोजित की गयी और उन्हें पारितोषिक आदि से प्रोत्साहित किया गया।

राजस्थान में हुए चुनाव के दिनों में अणुव्रत समिति सूरतगढ़ ने स्वस्थ तथा भयमुक्त चुनाव हेतु मतदाताओं को जागरूक करने के लिए शहर में मतदाता जागरण रैली निकाली। समिति ने अपनी गतिशीलता बनाए रखने के लिए और लोगों में अणुव्रत आंदोलन के प्रति उत्साह बनाने हेतु नियमित बैठकों का क्रम रखा। समिति ने वार्षिक चुनाव में डॉ. एस.के. सिंह का निर्विरोध निर्वाचन कर अणुव्रत आंदोलन को और गति देने की दिशा में नये सदस्यों को जोड़ने हेतु संपर्क अभियान चलाया। अणुव्रत दिवस एवं अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह हर्षोल्लास से मनाया गया। समिति के मंत्री अनिल रांका को उनके कार्यों को देखते हुए तेरापंथ आंचलिक समिति श्रीगंगानगर द्वारा सम्मानित किया गया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा भी सूरतगढ़ अणुव्रत समिति को राजसमंद में आयोजित अधिवेशन में सम्मानित किया गया।

अणुव्रत समिति बालोतरा

● समिति ने वर्ष 2009-11 सत्र हेतु चुनाव/मनाव दिनांक 25-08-2009 को तेरापंथ भवन में संपन्न कराया गया। आगामी दो वर्ष हेतु ओमप्रकाश बांठिया को अध्यक्ष बनाया गया।

● रक्षाबंधन पर्व पर नगर कारागृह में कैदियों को समिति की बहिनों ने राखी बांधी। साध्वी मधुस्मिता ने सभी कैदियों को नशे से दूर रहने का आह्वान किया गया।

● अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 96वां जन्मदिवस ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में साध्वी मधुस्मिता के सान्निध्य एवं जी.एल. नाहर की उपस्थिति में मनाया गया।

● दीपावली पर जरूरतमंद परिवारों को सभी सदस्यों के सहयोग से सहायता राशि एवं मिष्ठान वितरण किया।

● मर्यादा महोत्सव पर अणुव्रत संकल्प अभियान के तहत विद्यार्थी, व्यापारी-कर्मचारी एवं सभी वर्गीय अणुव्रत आचार संहिता के संकल्प पत्र भरवाए गए।

● समिति द्वारा स्वाईन फ्लू रोकथाम के बैनर अस्पतालों में लगाये गये।

● अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह शहर के विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोग से पूर्ण रूप से मनाया गया।

● समिति द्वारा इस वर्ष अणुव्रत सेवा सम्मान रतनलाल शर्मा विधिवेत्ता एवं साहित्यकार बालोतरा निवासी को दिया गया।

● 60वें वार्षिक अधिवेशन में अणुव्रत समिति बालोतरा के पांच प्रतिभागियों ने भाग लिया।

● अणुव्रत समिति द्वारा जन चेतना कार्यक्रम चुनाव शुद्धि जागरूकता अभियान के तहत शहर के प्रमुख मार्गों पर पोस्टर एवं होर्डिंग बोर्ड लगवाये गये।

● अणुव्रत समिति बालोतरा के तत्वावधान में 12 से 17 जुलाई 2010 तक मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में क्रमशः नवकार विद्या मंदिर, मौलाना अब्दुल कलाम, जैसमल भीमराज गोलेच्छा, मदर टेरेसा स्कूल, इंडियन पब्लिक स्कूल, मेहताबदेवी मिश्रीमल रा.मा.वि., भगवान महावीर रा.बा.वि. एवं संत लिखमाराम रा.उ.प्रा.वि. आठ स्कूलों में नशामुक्ति एवं अणुव्रती बनने हेतु कार्यक्रम चलाए गए एवं लगभग 3000 बच्चों एवं शिक्षकों ने संकल्प स्वीकार किए।

● अणुव्रत समिति बालोतरा के अध्यक्ष ओमप्रकाश बांठिया को राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय समरसता पुरस्कार राष्ट्रीय स्वतंत्रता मंच, नई दिल्ली सीबीआई के पूर्व महानिदेशक जोगिन्दर सिंह द्वारा प्रदान किया गया। इसी श्रृंखला में स्व. राजीव गांधी की जन्मतिथि पर राष्ट्रीय समरसता कांग्रेस द्वारा राजीव गांधी समरसता सम्मान निर्वाचन आयोग के पूर्व मुख्य आयुक्त जी.वी. कृष्णमूर्ति द्वारा प्रदान किया गया।

● आलोच्य वर्ष में समिति द्वारा जिन स्कूलों में जो कार्यक्रम करवाये गये, उन स्कूलों में अणुव्रत आचार संहिता की तस्वीरें भेंट की गयी एवं उन्हें मुख्य स्थानों पर लगवाया।

अणुव्रत समिति देवगढ़

● अणुव्रत महासमिति के वार्षिक अधिवेशन में समिति के प्रतिनिधियों की सक्रिय संभागिता रही।

● साध्वी शांताकुमारी 'गंगाशहर' के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह व शेषकाल में स्कूलों के तकरीबन तीन हजार छात्र-छात्राओं से संपर्क कर 600 विद्यार्थी संकल्प-पत्र भरवाए गए। सप्ताह के कार्यक्रमों में जी.एल. नाहर, सम्पत सामसुखा, संचय जैन आदि ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

● देवगढ़-मदारिया तहसील क्षेत्र की दूरभाष निर्देशिका का समिति के अध्यक्ष प्रकाश चन्द्र मेहता द्वारा संकलन, संपादन का कार्य किया गया। उक्त निर्देशिका का प्रथम व अंतिम पृष्ठ का विमोचन साध्वी कंचनकुमारी के सान्निध्य में कराया गया।

● केन्द्र द्वारा निर्देशित दशम अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता का राजसमंद जिला स्तरीय आयोजन देवगढ़ में हुआ। इसमें 160 छात्र-छात्राएं राजसमंद जिले से सम्मिलित हुए। एक दिन के कार्यक्रम की पूर्ण व्यवस्था समिति ने की। मुख्य अतिथि मदनलाल धोका कांकरोली, जीतमल कच्छारा रहे।

● ''अणुव्रत व हमारा जीवन'' विषयक सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन। इसमें विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि काजी देवगढ़ थे।

● मुस्लिम भाइयों के 'ईदु-उल-फितर' जुलूस का सभा भवन में आगमन। मंत्री राजेन्द्रकुमार सेठिया द्वारा स्वागत। सान्निध्य मुनि संजयकुमार दिवेर का रहा।

● अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कुमार एम. रांका ने संगठन यात्रा क्रम में दो बार समिति की गतिविधियों में शामिल होकर उनका उत्साहवर्द्धन किया। देवगढवासी निर्मल एम. रांका की उपस्थिति से अभिभूत हो जोश के साथ कार्यक्रम में लग गये।

● अणुव्रत समिति देवगढ़ व तेरापंथी सभा देवगढ़ के अध्यक्ष प्रकाश चन्द्र मेहता का कार्य अणुव्रत आंदोलन की तेजस्विता हेतु सराहनीय व प्रशंसनीय रहा।

● अणुव्रत महासमिति से समय-समय पर प्राप्त त्रैमासिक कार्यक्रम एवं सभी निर्देशों को कार्यान्वित कर अणुव्रत की प्रवृत्तियों को गति देने की दिशा में उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का क्रम जारी रहा।

अगर देश में जनतंत्र को सुरक्षित रखना है और गरीबों को ऊपर उठाना है, तो समाज में एक के बाद एक अंकुश लगाने होंगे। सेना पर अंकुश रहना चाहिए सिविल (नागरिक-शासन) का, सरकार पर अंकुश चाहिए जनता का और जनता पर अंकुश चाहिए नैतिक मूल्यों का। अणुव्रत के माध्यम से जनता का अंकुश सरकार पर आयेगा और नैतिक मूल्यों का अंकुश जनता का होगा।

महात्मा गांधी

अणुव्रत समिति सायरा

● आलोच्य वर्ष में अणुव्रत समिति सायरा ने अणुव्रत पाक्षिक के 235 वार्षिक, 19 त्रैवार्षिक कुल 254 ग्राहक बनाए। 1 अप्रैल 2010 से 29 जुलाई 2010 तक 63 वार्षिक, 4 त्रैवार्षिक एवं 1 दसवर्षीय अर्थात साढ़े तीन माह में 68 सदस्य बनाए हैं।

● क्षेत्र के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में काम्बा (भाणपुरा) व ढिकोड़ा में अणुव्रत परीक्षा व जीवन विज्ञान कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 6, 7, 8 के 40-40 विद्यार्थियों को अणुव्रत विज्ञ, विशारद के लिए संबंधित शिक्षकों को यह कार्य सौंपा गया।

● अणुव्रत समिति द्वारा लगभग 15 वर्षों से जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत की परीक्षाए आयोजित करायी जा रही हैं। इस कार्य को आगे बढ़ाने के क्रम में राजेन्द्र गोरवाड़ा विभिन्न विद्यालयों में इस प्रवृति को चला रहे हैं। इस प्रवृत्ति को बाबूलाल कावड़िया का बराबर सहयोग प्राप्त है।

● अणुव्रत आचार संहिता के प्रचार-प्रसार हेतु सेरा प्रांत के लगभग 25-30 गावों के बस-स्टैंडों पर बड़े-बड़े साईज के बोर्ड लगवाए गए।

● क्षेत्र में लगभग 110 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को अणुव्रत नियम एवं उनसे प्रेरित चित्र आदि का वितरण किया गया।

● प्रांत में संतों के चातुर्मास के समय अणुव्रत संगोष्ठियों का नियमित उपक्रम चलाया गया।

● अणुव्रत प्रशिक्षण शिविर में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष समय-समय पर पहुंच कर आयोजित गतिविधियों में सम्मिलित हुए।

● अणुव्रत समिति स्थानीय सभा के सहयोग से क्षेत्र में शादी-विवाह एवं अन्य समारोहों को पूरी सादगी और निर्देशित नियमों के तहत ही मनाया जाता है। उक्त नियमों की पालना की जा रही है।

● विद्यालयों में साधु-संतों एवं साध्वियों के सान्निध्य में पर्यावरण संरक्षण का विशेष कार्यक्रम चलाया गया।

● सायरा के चारों विद्यालयों में लगभग 400 विद्यार्थियों और प्रधानचार्यों की अगुवाई में परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गोरवाड़ा के संयोजन में एक विशाल रैली आयोजित की गयी।

अणुव्रत समिति पुर

● 2 अक्टूबर 2009 को महात्मा गांधी जयंती अणुव्रत सद्भावना समारोह के रूप में मनायी गयी। विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अणुव्रत आचार संहिता को स्वीकार कर उसके सभी नियमों पर अपना विश्वास जताया।

● अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के सभी निर्धारित दिवस मुनि दर्शन कुमार एवं मुनि पारसकुमार के सान्निध्य में आयोजित हुए। 50 कार्यकर्ताओं की भागीदारी के साथ बैरवा बस्ती के 300 भाई-बहनों ने अणुव्रत विचारों से प्रभावित हो व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प स्वीकारा।

● 24 सितंबर 09 को अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पुर में मुनि पारसकुमार के सान्निध्य में एक शिविर आयोजित हुआ। इसमें कक्षा 6 से 12वीं के 54 छात्रों ने भाग लेकर अणुव्रत आचार संहिता स्वीकार की एवं अहिंसा के प्रयोग सीखे। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी नाथूलाल खोईवाल ने विशेष रूप से भाग लिया।

● समिति ने तेरापंथी सभा पुर के कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयासों से पुर के समस्त विद्यालयों में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का संयुक्त रूप से संचालन किया।

● समिति एवं रा.बा.उ.मा. विद्यालय प्रबंधन के संयुक्त प्रयास से पर्यावरण शुद्धि दिवस मनाया गया और 120 नये पौधे लगाए गए।

● अणुव्रत प्रचार-प्रसार सामग्री पुर के 10 विद्यालयों में वितरित की गयी। 203 छात्र-छात्राओं ने अणुव्रत विज्ञ एवं विशारद परीक्षाएं दीं और सभी उत्तीर्ण संभागियों को तेरापंथी सभा की ओर से पुरस्कृत किया गया।

● पुर के सभी विद्यालयों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रमों में 3245 विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्त जीवन शैली जीने की बात स्वीकारी।

● अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली द्वारा प्रेषित अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य समिति ने अपने क्षेत्र में वितरित किया। अणुव्रत पाक्षिक की ग्राहक संख्या-वृद्धि में भी सहभागिता निभायी।

अणुव्रत समिति छापर

● क्षेत्र के विद्यालयों में संगीत, चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का क्रम रहा। इसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

● अणुव्रत की गतिविधियों में तेजस्विता आये, इस हेतु मुनि आलोककुमार के सान्निध्य में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के साथ छापर में बैठक आयोजित की गयी। इसमें अणुव्रत आंदोलन की सक्रियता पर परिचर्चा रखी गयी।

● छापर के छः विद्यालयों के 'छात्र-छात्राओं' और समाज के गणमान्य व्यक्तियों को शामिल कर मुनि आलोककुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन भव्य रूप में किया गया।

● उद्बोधन सप्ताह कार्यक्रम का समापन पूरे प्रचार-प्रसार के साथ हुआ। इसमें अनेक स्कूलों के प्रधानाध्यापक चयनित विद्यार्थी एवं गांव के सम्माननीय अतिथियों ने भाग लिया। मुनि अक्षयकुमार ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

● क्षेत्र में अणुव्रत कार्यक्रमों की प्रगतिशीलता में अणुव्रत समिति के पदाधिकारी धर्मप्रकाश बैद, रणजीत सिंह दूगड़, हुकमाराम बरवड़ तथा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, विनोद नाहटा एवं अहिंसा प्रशिक्षक विनोद पासवान का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत समिति लाडनूं

● सितंबर 09 में 'अणुव्रत सुलेख प्रतियोगिता' कक्षा 8वीं तक के विद्यार्थियों के लेखन सुधार एवं विकास के लिए अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में आयोजित हुई। बच्चों को पुरस्कृत किया गया। 12 सितंबर 09 को युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन और विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

● 13-14 अक्टूबर 09 को अणुव्रत महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में द्विदिवसीय राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आयोजन। इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों के 115 लेखकों ने भाग लिया।

● 15 अक्टूबर 09 को प्रधानाध्यापकों की एक गोष्ठी आयोजित हुई। नगर के विभिन्न स्कूलों के 20 प्रधानाध्यापकों ने इस गोष्ठी में भाग लेकर शिक्षा के विकास पर चिंतन किया।

● 3 जनवरी 2010 को जैविभा परिसर में श्री ओमप्रकाश सोनी को आगामी दो वर्ष हेतु अणुव्रत समिति लाडनूं के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। 17 जनवरी, 10 को डॉ. त्रिपाठी के नेतृत्व में ग्राम डाबड़ी में चुनाव शुद्धि पेम्फ्लेट बांटे गये एवं उन्हें स्वस्थ मतदान हेतु जाग्रत किया गया। 29 जनवरी, 10 को स्थानीय केसर देवी स्कूल में ''भ्रष्टाचार बनाम शिष्टाचार'' विषयक अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 30 जनवरी, 2010 को ''गांधी आज भी प्रासंगिक हैं'' विषयक अणुव्रत वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन लाड मनोहर बाल निकेतन स्कूल में किया गया। विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

● 15 फरवरी, 10 को साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन।

● समिति द्वारा ग्राम डाबड़ी में भ्रष्टाचार निवारण गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। लोगों को भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी गयी। इसी क्रम में 7 मार्च, 10 को राधेश्याम शर्मा की अध्यक्षता में भ्रष्टाचार निरोधक अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन। 8 मार्च, 10 को उपखंड अधिकारी को भ्रष्टाचार के विरोध में समिति के कार्यकर्ताओं ने ज्ञापन दिया। 14 मार्च को अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन। वक्ताओं ने भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाने का आह्वान किया।

● 3-4 अप्रैल, 10 को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में ''तुलसी विचार दर्शन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता'' का आयोजन। छात्रों को पुरस्कृत किया गया। 11 अप्रैल, 10 को ऋषभ द्वार में साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन।

● 13 मई, 2010 को जैन विश्व भारती में नगर के लेखकों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ। उपस्थित लेखकों ने अपने लेखन में अणुव्रत को समाहित करने पर बल दिया। संयोजन डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

सभी कार्यक्रमों में अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत समिति कालांवली

● अणुव्रत समिति कालावांली के संयुक्त तत्वावधान में अणुव्रत आचार-संहिता के 11 नियमों की विस्तृत व्याख्या संभागियों को समझाई गयी और उन्हें अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार करने के संकल्प करवाए गये।

● समिति ने विभिन्न स्रोतों से पुस्तकों का संग्रह कर एक लाइब्रेरी का गठन किया। अणुव्रत की गहन जानकारी से पाठकों को अवगत करवाया गया।

● समिति ने स्थानीय स्तर पर नशे की आदतों से ग्रस्त लोगों को नशामुक्त जीवनशैली जीने के लिए उनकी स्वस्थता हेतु डॉ. धर्मेन्द्र सिंह साई की निगरानी में उपचार किया गया। इस शिविर की सफलता में लालमन गोयल, रूली राम जैन, कश्मीरलाल का सहयोग रहा।

● 5 सितंबर से 11 सितंबर 09 को अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का भव्य कार्यक्रम नई मंडी, मॉडल टाऊन में लाला सीताराम दीवानचंद की कोठी में साध्वियों के सान्निध्य में तथा क्षेत्र के विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सातों दिन के कार्यक्रम आयोजित हुए।

● अणुव्रत समिति कालांवांली ने स्थानीय, सार्वजनिक एवं सामाजिक संस्थानों के सहयोग से भ्रष्टाचार मिटाओ - देश बचाओ कार्यक्रम चलाया। स्थानीय सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों/अधिकारियों को भ्रष्टाचार के पोस्टर बांटकर अनुरोध किया गया कि वे न ही किसी से रिश्वत लें और न ही दें। तथा ईमानदारी और सेवा भावना से लोगों के कार्य करें।

● अणुव्रत समिति विकास परिषद् शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय विद्यालयों, आवासीय मुहल्लों तथा चौराहों पर नुक्कड़ नाटक आयोजित कराए गए। क्षेत्र के लोगों को पानी बचाओ, पर्यावरण बचाओ, पृथ्वी बचाओ एवं बिजली बचाओ अभियान चलाकर जागरूक किया गया। इन कार्यक्रमों में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एवं रैलियां भी निकाली गयी।

अणुव्रत लोक-जीवन में व्याप्त मानवीय दुर्बलताओं को परिष्कृत कर स्वस्थ जीवन जीने की दिशा देता है। अणुव्रत ने जाति, प्रांत, भाषा, धर्म, रंग और लिंग आदि भेदजनक सीमाओं में सिमटे हुए धर्म को विस्तार के लिए व्यापक धरातल दिया। उसने धर्म के नाम पर चलने वाली स्वार्थसिद्धि पर प्रहार किया और परमार्थ तत्त्व को खोजने का दृष्टिकोण दिया।

आचार्य तुलसी

अणुव्रत समिति भिवानी

आज के संदर्भ में चहुंओर व्याप्त हिंसा, हत्याएं, बलात्कार एवं ऐसे ही अन्य बढ़ते अपराधों में नशीले पदार्थों का सबसे बड़ा हाथ रहा है। नशे की लत किसी भी मोड़ से शुरू हो उसका अंत भयानक ही होता है। आधुनिकता के नाम पर नशे की संस्कृति युवा पीढ़ी को जिन अंधी सुरंगों में धकेल रही है वहां स्वस्थ जीवन नहीं नारकीय जीवन नजर आता है। अणुव्रत समिति भिवानी ने अपने क्षेत्र में नशामुक्ति चेतना जागरण अभियान का संचालन किया।

● 9 फरवरी 2010 को अणुव्रत समिति भिवानी ने लायंस क्लब तोशाम के संयुक्त तत्वावधान में मिलकर लिटिल हार्ट कान्वेंट स्कूल में निशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया। इसमें मरीजों को निःशुल्क दवाइयां वितरित की गयी। चिकित्सीय सेवा के इस क्रम में लायंस क्लब तोशाम एवं मनोहरी देवी शिक्षण संस्थान के साथ मिलकर नेत्र जांच एवं चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर में नेत्र रोग से पीड़ित 450 मरीजों की जांच की गयी। इनमें से 50 मरीजों की आंखों की शल्य चिकित्सा की गयी। क्षेत्र के किशनलाल जालान राजकीय नेत्र चिकित्सालय में ऑपरेशन की व्यवस्था की गयी और उन्हें निःशुल्क दवाइयां वितरित की गयी। धनाना गांव में भी एक चिकित्सा शिविर आयोजित कर गांव के 310 रोगियों की जांच-पड़ताल की गयी। 80 मरीजों की ई.सी.जी. करवाई गयी तथा 150 मरीजों को जांच के उपरांत उन्हें निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया।

● 10 जनवरी 2010 को एक कार्यक्रम चलाकर अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र सांजरवास के छात्र-छात्राओं के साथ बैठक आयोजित की जिसमें नशीले मादक पदार्थों के विरुद्ध रैली निकालकर स्वर बुलंद किया। राजकीय कन्या उच्च विद्यालय सांजरवास में ही नशामुक्ति जीवन शैली अपनाने हेतु अनुरोध किया गया। अणुव्रत आचार संहिता में उल्लिखित नियमों को जीवन में धारण करने से बच्चे अनेक बुराइयों से दूर हो जाएंगे, यह जानकारी दी गयी। क्योंकि व्यक्ति का चरित्र निर्माण प्रबल बनाना ही अणुव्रत का प्रमुख घोष है। विद्यार्थियों को अणुव्रत नियमों से परिचित कराया गया। इसी कार्यक्रम की दूसरी कड़ी थी कन्या भ्रूण-हत्या। इस जघन्य अपराध को रोकने के लिए भी अणुव्रत समिति भिवानी सजग रूप से कार्य कर रही है। इस अनैतिक कृत्य को रोकने के लिए समिति ने क्षेत्र के लोगों को भी जागरूक किया।

● 12 अप्रैल 2010 को स्वस्थ एवं स्वच्छ मतदान हेतु अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान शुरू कर क्षेत्र में चुनाव शुद्धि यात्रा का आयोजन किया गया। शहर के अनेक मुख्य स्थानों एवं चौराहों पर अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित चुनाव शुद्धि साहित्य का पुर्नमुद्रण करवाकर वितरित कराया गया।

● 22 जून 2010 को आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिवस पर बाल विद्या विहार में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में रोगियों के उपचार हेतु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। रोगियों को निःशुल्क जांच एवं दवाइयां बांटी गयी। इस अवसर पर 140 मरीजों का ईलाज, 50 मरीजों की ई.सी.जी. करवाई गयी। इनमें से 70 मरीजों की शुगर जांच कर उन्हें दवाइयां दी गयी।

● 25 जुलाई 2010 को एक विशाल हृदय रोग चिकित्सा शिविर लगाया गया। प्रेक्षा विहार में एस्कॉर्ट हृदय रोग चिकित्सा एवं अनुसंधान नई दिल्ली के सहयोग से सैकड़ों मरीजों की ईको-कार्डियोग्राफी एवं ई.सी.जी. जांच कर उन्हें निःशुल्क दवाइयां वितरित की गयी।

● 2 अगस्त 2010 को साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में लायंस क्लब तोशाम और अणुव्रत समिति भिवानी के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में शहर के 15 विद्यालयों के 90 बच्चों के मध्य नशामुक्ति, भ्रूणहत्या निषेध एवं पर्यावरण शुद्धि विषय पर निबंध व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 20 अगस्त 2010 को श्रीराम पाठशाला में दशम अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के 60 बच्चों ने भाग लिया। 21 अगस्त 2010 को तेरापंथ भवन में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में अणुव्रत चेतना दिवस का कार्यक्रम रखा गया। इसमें सैकड़ों लोगों ने उपस्थित होकर अणुव्रत संकल्प-पत्र भरकर अणुव्रत आचार संहिता में अपनी सहभागिता दर्ज की।

● 5 सितंबर 2010 को वैश्य मॉडल स्कूल में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में अणुव्रत प्रश्न मंच का आयोजन तथा चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इसी क्रम में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत सभी दिवसों को प्रभावी रूप से मनाया गया। सभी कार्यक्रमों में अणुव्रत समिति भिवानी के अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान एवं मार्गदर्शन रहा।

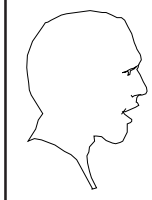

आपका मुँह
ऐश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

अणुव्रत समिति टिटिलागढ़

स्थानीय महावीर हिन्दी विद्यालय के 300 छात्र-छात्राओं एवं 12 शिक्षकों के मध्य अणुव्रत प्रचार-प्रसार सामग्री और अणुव्रत गीत के पेम्फ्लेट वितरित किए गए।

● ओम वैली विद्यालय के 200 छात्र एवं 10 शिक्षकों को अणुव्रत गीत के पेम्फ्लेट एवं प्रार्थना सभा में उपस्थित संभागीगणों को जीवन विज्ञान की 100 पुस्तिकाएं वितरित की गयी।

● स्थानीय डी.ए.वी. विद्यालय में 200 विद्यार्थियों एवं शिक्षक वर्ग को प्रार्थना सभा में 200 जीवन विज्ञान की पुस्तिकाएं तथा अणुव्रत गीत के पेम्फ्लेटों का वितरण हुआ।

● 23 सितंबर 09 को पर्यावरण एवं नशामुक्ति हेतु एक रैली का आयोजन। प्रातःकाल डी.ए.वी. स्कूल में नशामुक्ति पर संगोष्ठी एवं सायं पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में 'नुक्कड़ नाटक का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बच्चे, अभिभावक एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में सुरेन्द्र एवं गोविंद जैन का सराहनीय श्रम रहा।

● जनवरी 2010 को चार दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन। इसमें बालाघाट मंडल स्कूल के 43 शिक्षक एवं 665 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

● जीवन विज्ञान कार्यशाला तीन कक्षाओं के विद्यार्थियों की तीन सप्ताह तक महीने के प्रत्येक शनिवार को रखी गयी। इसमें 5 शिक्षक एवं 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

● फरवरी 2010 में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एवं महिला कॉलेज टिटिलागढ़ में जीवन विज्ञान की कार्यशाला आयोजित हुई। इसी माह सी.टी. स्कूल में कक्षा 6 तक के विद्यार्थियों हेतु 6 दिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ।

● जुलाई 2010 में प्रभावती पब्लिक स्कूल में 320 विद्यार्थियों एवं 10 शिक्षकों को जीवन विज्ञान विषय की प्रार्थना सभा में जानकारी दी गयी। इसी क्रम में सरस्वती शिशु मंदिर में जीवन विज्ञान कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें 320 विद्यार्थियों एवं 17 शिक्षकों ने भाग लिया।

अणुव्रत समिति बोरड़ा

अणुव्रत समिति बोरड़ा द्वारा वर्ष 2009-2010 में किये गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

● प्रतिदिन सायं 8 से 9 बजे तक संगोष्ठी चलायी जाती है। समय-समय पर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान की जानकारी दी जाती है। प्रति रविवार सामूहिक सामायिक का क्रम भी चलाया जा रहा है।

● क्षेत्र में विराजित चरित्रात्माओं का समय-समय पर दर्शन लाभ लिया जाता है। साधु-साध्वियों की रास्ते की सेवा में सक्रिय योगदन रहता है।

● राष्ट्रीय पर्वों पर स्कूली बच्चों के मध्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है एवं बच्चों को पुरस्कृत किया जाता है।

● समिति के सभी सदस्य नशामुक्त हैं। स्थानीय लोगों को भी नशामुक्त बनाने हेतु समय-समय पर अभियान चलाया गया।

● स्थानीय हिन्दू मठ में अणुव्रत समिति के तत्वावधान में मुनि भूपेन्द्रकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यक्रम रखा गया।

● क्षेत्र के स्कूल-कॉलेजों में अणुव्रत कार्यक्रम आयोजित किए गये एवं छात्रों तथा शिक्षकों को वर्गीय अणुव्रत की पालना के संकल्प कराये गये।

● प्रति वर्ष दो माह तक राहगीरों के लिए प्याऊ की व्यवस्था की जाती है।

● भूतपूर्व अध्यक्ष अर्जुनदास जैन एवं वर्तमान अध्यक्ष उमेश कुमार जैन के प्रयासों से उड़ीसा के श्रम एवं कल्याण मंत्री तथा कालाहांडी के भवानी पटना क्षेत्र के विधायक प्रदीप्त कुमार नायक को मुनि भूपेन्द्रकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत आचार संहिता से परिचित कराया गया। इस अवसर पर उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता की पालना का संकल्प किया।

● अणुव्रत समिति के तत्वावधान में एवं मुनि कमलकुमार की प्रेरणा से बोरड़ा में सभा भवन का निर्माण कार्य किया गया।

● अणुव्रत महासमिति के दिशा-निर्देशों की पालना की जाती है।

अणुव्रत समिति बाड़मेर

● आलोच्य वर्ष में समिति ने नियमित अणुव्रत गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया।

● स्थानीय अणुव्रत गतिविधियों की खबरों का राजस्थान पत्रिका एवं अन्य दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशन करवाया गया।

● पाकिस्तान सीमा से सटे गांव जैसिंधर में समणी हंसप्रज्ञा के सान्निध्य में तथा अणुव्रत प्रभारी राजेन्द्र सेठिया एवं लायंस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 800-900 छात्र-छात्राओं को अणुव्रत चेतना व नशामुक्ति कार्यक्रम आयोजित कर जन-जागरण अभियान चलाया गया।

● शिव कुटिया, धौला आकड़ा में साध्वी अमृतप्रज्ञा के सान्निध्य में कन्या भ्रूण-हत्या निषेध विषयक कार्यशाला आयोजित की गयी। महिलाओं को अणुव्रत आचार संहिता से परिचित कराया गया।

● समिति ने क्षेत्र के 6-7 विद्यालयों के करीब 800-1000 विद्यार्थियों के लिए अणुव्रत के विभिन्न विषयों को लेकर संगोष्ठी एवं अणुव्रत पोस्ट कार्ड वितरण कर चेतना जाग्रत की गयी।

● 15 वर्षों से संचालित पूरे वर्ष चलने वाले नियमित योगासन, प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम त्यौहारों पर भी नियमित रूप से चलाए गए।

मूल्यपरक शिक्षा ही जीवन विज्ञान

अणुव्रत समिति नागपुर

अणुव्रत समिति नागपुर के तत्वावधान में वर्ष 2009-2010 में निम्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संचालन हुआ

● अक्टूबर 2009 में उदासा स्थित वृद्धाश्रम में 110 स्त्री-पुरुषों को कम्बल एवं दवाइयों का वितरण किया गया। साथ ही अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन शहर के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों एवं विद्यालयों में सक्रियता के साथ मनाया गया।

● नवंबर 2009 में साध्वी कुंदनरेखा के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 120 स्त्री-पुरुष लाभान्वित हुए। प्रेक्षा प्रशिक्षक अरविंद जोहरापुरकर एवं डॉ. हेमलता जोहरापुरकर का मार्गदर्शन रहा।

● दिसंबर 2009 में समणी सत्यप्रज्ञा के सान्निध्य में सात दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित हुआ।

● जनवरी 2010 में उदासा (नागपुर) के आश्रमशाला में 400 छात्रों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

● फरवरी 2009 में श्रेयस विद्यालय, ज्ञान विकास विद्यालय, गजानन विद्यालय में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान शिविर आयोजित हुआ।

● मार्च 2010 में पंचवटी वृद्धाश्रम नागपुर में औषधि एवं खाद्य-सामग्री वितरण की व्यवस्था की गयी।

● समिति के तत्वावधान में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान निरंतरता से संचालित हो रहा है।

● आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। अध्यक्षता डॉ. भागचंद जैन 'भास्कर' ने की थी।

● ज्ञान विकास विद्यालय नागपुर में छात्रों के लिए पेयजल हेतु राशि 10,000 रु. की व्यवस्था की गयी।

● सभी कार्यों में डॉ. आर.आर. भंडारी, निर्मलकुमार नखत, सुशील बोथरा, एन.आर. ठोंबरे, डॉ. हेमलता जोहरापुरकर, सुनील नायक, बाला साहेब सरोंदे, प्रेमलता सेठिया, अरुण नखत, पुष्पा गलेड एवं मालू की सक्रिय भागीदारी रही।

अणुव्रत समिति के सभी सदस्यों ने लाडनूं में संयुक्त रूप से इकट्ठे होकर आचार्य महाप्रज्ञ एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की सेवा में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

दोष स्वीकारना अहिंसा है

अणुव्रत समिति मरोली

अणुव्रत पाक्षिक अधिक से अधिक लोग पढ़े, क्योंकि यह अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत है। इस हेतु समिति ने अपने क्षेत्र में पाक्षिक के लिए 100 से अधिक ग्राहक बनवा कर पाठकों को उत्साहित किया। विज्ञापन भी कुछ अल्पसंख्या में जुटाए गए। साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान योग केन्द्र का विधिवत शुभारंभ हुआ, जो नियमित रूप से चल रहा है।

2 अक्टूबर गांधी जयंती दिवस को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में कस्तूरबा सेवा आश्रम मरोली में एक विशाल कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय एवं अहिंसा प्रशिक्षण में उपस्थित जनमेदिनी को अवगत करवाया गया। आचार्य श्री तुलसी के जन्मदिवस को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया तथा अहिंसा रैली निकाली गयी। इस अवसर पर लोगों ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प स्वीकार किया।

प्राकृतिक आपदा के समय प्लेग, चिकनगुनिया एवं स्वाइन फ्लू जैसी संक्रामक बीमारी या बाढ़ आदि के समय अणुव्रती कार्यकर्ता तन, मन, धन एवं सेवाभाव से समर्पित रहे। देश में आम चुनाव के दौरान अणुव्रत समिति मरोली द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर वृहद अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाकर जनता के बीच संबंधित पेम्फ्लेट बांटे एवं अनेक सभाएं आयोजित कर जन-जागृति अभियान चलाया गया।

अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में बीदासर में आयोजित प्रेक्षा शिविर में मरोली से प्रेक्षाप्राध्यापक सुरेश चंद्र देसाई ने अपनी उपस्थिति दी। समणी ज्योतिप्रज्ञा के सान्निध्य में अणुव्रत चेतना दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ के जन्म दिवस पर सर्वधर्म समभाव एवं मानवीय एकता विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की जिसमें समाज के गणमान्य नागरिकों तथा प्रबुद्ध लोगों ने शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

अणुव्रत कार्यक्रमों की श्रृंखला में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उत्साहपूर्ण एवं प्रभावी ढंग से आयोजित हुआ।

अणुव्रत समिति मरोली आगामी दिनों में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ करने जा रही है। इसका केन्द्र कस्तूरबा सेवाश्रम मरोली प्रशिक्षण केन्द्र होगा। इस हेतु आश्रम की प्रमुख ट्रस्टी एवं महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती उषा बेन गोकाणी ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। अणुव्रत समिति मरोली अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अधिक गतिशीलता और सक्रियता से आगे बढ़ रही है।

सदाचार से ही मिटेगा भ्रष्टाचार

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति

अणुव्रत आंदोलन निःस्वार्थ भाव से नैतिकता के प्रचार-प्रसार का निरंतर कार्य कर रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए गुजरात राज्य अणुव्रत समिति अपने क्षेत्र में पूर्ण सक्रियता से कार्य कर रही है। समिति द्वारा लगभग एक हजार व्यक्तियों से अणुव्रती बनो अभियान के अंतर्गत अणुव्रत आचार संहिता के फार्म भरवाए गए। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह कार्यक्रमों के आयोजन हेतु लगभग 30 जगह डिसा, भुज, बोरड़ा आदि स्थानों पर पेम्फ्लेट बंटवाए गये। क्षेत्र में विराजित साध्वियों के सान्निध्य में अणुव्रत के प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान पर प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित हुई।

5 सितंबर 2009 से 11 सितंबर 2009 तक अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का कार्यक्रम मनाया गया। सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर भायंदर के मेयर और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। अहिंसा दिवस पर गुजरात विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं यंग लीडर समाचार पत्र के संपादक ने अपनी उपस्थिति दी। नशामुक्ति प्रदर्शनी का विशेष आयोजन एवं जीवन विज्ञान दिवस पर क्षेत्र के 700 विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत नियम स्वीकार किए। 'व्यसनमुक्त हो सारा देश' के नारे से गिरधरनगर से तेरापंथ भवन तक 11 सितंबर 2009 को एक व्यसनमुक्ति रैली आयोजित हुई। इसी क्रम में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन धूमधाम से मनाया गया।

25 अक्टूबर 2010 को साध्वी अणिमाश्री के सान्निध्य में नैतिक मूल्यों के विकास का आंदोलन अणुव्रत पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई। 2 जनवरी 2010 को आयोजित समिति के वार्षिक चुनाव में जवेरीलाल संकलेचा को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। 1 मार्च 2010 को साध्वी कंचनप्रभा के सान्निध्य में अणुव्रत स्थापना दिवस का आयोजन हुआ। 5 मार्च 2010 को वक्त है शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार से लड़ने का बैनर का लोकार्पण गुजरात के राज्यपाल महामहिम डॉ. कमला से करवाया। समिति द्वारा गुजरात में भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाई। 6 मार्च 2010 को भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्यक्रम आयोजित किया गया। 6 मई 2010 को मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम रखा गया। 27 जून 2010 को ''पानी बचाओ कार्यक्रम'' में मेयर कानजी ठाकोर, पद्‌मश्री डॉ. कुमारपाल भाई देसाई ने भाग लिया। पानी, बिजली, पृथ्वी बचाओ स्टीकर शहर में बड़ी संख्या में बांटे गये। इस अवसर पर साध्वी कनकरेखा के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी करकरेखा ने गुजरात राज्य निबंध प्रतियोगिता के अवसर पर कहा अणुव्रत ही युगीन समस्याओं का समाधान है। सभी कार्यक्रमों में जवेरीलाल संकलेचा का सराहनीय योगदान रहा।

अहमदाबाद

दरभंगा जिला अणुव्रत समिति

● सितंबर 09 में पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत दरभंगा जिला के बसंत, जाले, पौनद, अरैई, सढ़वारा, रमपुरा, कटका एवं सोतियां में कुल 620 पौधे लगाए गए।

● अक्टूबर 09 में कैम्ब्रिज स्कूल ऑफ एजुकेशन, टेकटार में अहिंसा सिर्फ अहिंसा क्यो? विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 51 पुरुष और 41 महिलाओं ने भाग लेकर अहिंसा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी।

● नवंबर 09 में समिति ने आचार्य तुलसी जन्मदिवस समारोह का आयोजन किया। उपप्रमुख रंजीत प्रसाद की अध्यक्षता में इस समारोह को 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया।

● फरवरी 2010 में अणुव्रत का एक दिवसीय आवासी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। कैम्ब्रिज स्कूल ऑफ एजुकेशन कमतौल में इस शिविर में विद्यार्थी और शिक्षकों की भागीदारी रही। इसमें 19 शिक्षक-शिक्षिकाओं और 342 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

● मार्च 2010 में बाल संस्कार निर्माण शिविर बाल श्रमिक विशेष विद्यालय, भरवाड़ा में लगाया गया। क्षेत्र के 9 विद्यालयों से 316 छात्र एवं 251 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

● जून 2010 में ग्राम पंचायत राज अहियारी उत्तरी अहल्या में नशामुक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत नुक्कड़ नाटक द्वारा नशामुक्त जीवन शैली अपनाने पर जनजागरण किया गया। नाटक द्वारा लोगों को नशामुक्त जीवन जीने का संदेश प्रेषित हुआ।

● 20 जून 2010 को भ्रष्टाचार का निदान विषय पर एक दिवसीय विचार गोष्ठी आयोजित हुई। जिसमें भ्रष्टाचार के विरोध में ग्राम पंचायत कमतौल में 76 पुरुष ओर 38 महिलाओं ने भाग लेकर अपने-अपने विचार रखे।

● 21 जून 2010, आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि पर सर्वधर्म कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें अनेकानेक लोगों ने भाग लेकर सांप्रदायिक सौहार्द का संकल्प लिया।

● जुलाई 2010 में पर्यावरण बचाओ के संदर्भ में कमतौल से टेकटार तक 21 प्रतिभागियों ने वृक्ष-वेष में शामिल होकर एक पद-यात्रा का आयोजन किया गया। सभी संभागियों ने टेकटार के कैम्ब्रिज स्कूल में इकट्‌ठे होकर पर्यावरण संरक्षण पर एक परिचर्चा का शुभारंभ किया।

अणुव्रत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य त्रैकालिक होता है सामयिक नहीं होता। नैतिकता, चरित्र भी त्रैकालिक है। अगर हमारी धार्मिक धारणा बदल जाये तो काफी परिवर्तन हो सकता है। अनैतिक आचरण करने वाले व्यक्ति का अगला जन्म अच्छा नहीं होता अगर धर्म में यह धारणा प्रमुख बन जाये और आराधना की बातें गौण हो जायें तो नैतिकता के लिए नया क्षेत्र खुल सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ

समाज सेवा ही सबसे बड़ी सेवा

अणुव्रत समिति बाढ़

अणुव्रत समिति बाढ़ (बिहार) के तत्वावधान में अणुव्रत शिक्षक संसद पटना जिला ग्रामीण तथा अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बाढ़ के सहयोग से विगत वर्ष महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की आयोजना हुई, विविरण निम्न प्रकार है

● विगत वर्ष पूरे जनपद में अणुव्रत सप्ताह का सोल्लास आयोजन हुआ, जिसमें स्थानीय एस.बी.आर. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ब्रज भूषण शर्मा का सराहनीय सहयोग रहा।

● नवंबर 2009 में निःशुल्क चिकित्सा व दवा वितरण का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें स्थानीय चिकित्सकों के सहयोग से दो सौ निर्धन वर्ग के लोगों को दवाइयां बांटी गयी। इसमें डॉ. सियाराम सिंह एवं डॉ. अंजेश कुमार शिशु रोग विशेषज्ञ का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

● जनवरी 2010 में स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा गरीबों को गर्म कपड़े वितरित किए गए। इसमें समिति के जिला सचिव राजेश कुमार राजू का सराहनीय सहयोग रहा।

● फरवरी-मार्च-अप्रैल 2010 इन तीन महीनों में सघन रूप से दहेज और आडम्बरमुक्त शादियों की प्रेरणा हेतु जन जागरण अभियान चलाया गया। इसमें अन्य स्थानीय लोगों सहित डॉ. अशोक कुमार सिंह स्थानीय ग्रामीण शाखा अणुव्रत समिति अचुआरा के सचिव हेमंतकुमार का सराहनीय सहयोग रहा।

● जून-जुलाई 2010 में व्यसनमुक्ति अभियान चलाया गया तथा भ्रष्टाचार के विरोध में रैलियां निकाली गयी। अणुव्रत आंदोलन तथा अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यों के लिए नागालैण्ड के महामहिम राज्यपाल निखिल कुमार ने अणुव्रत कार्यकर्ता प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' को सम्मानित किया।

● अगस्त 2010 में अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता तथा नैतिक जागरण विषयक लेख लेखन प्रतियोगिता विद्यालयों में आयोजित की गयी। जिसमें 10 विद्यालयों के सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया। सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार ज्ञानदीप स्कूल बाढ़ को प्राप्त हुआ।

● सितंबर 2010 में अणुव्रत आंदोलन एवं अहिंसा प्रशिक्षण कार्यों के अवलोकनार्थ भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बाढ़ पधारे तथा अणुव्रत आंदोलन के प्रति अपना पूर्ण समर्थन जताया। इस कार्यक्रम में वर्ष भर जिन कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक कार्य किया उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ सेवा सम्मान प्रदान किया गया। इनमें राणा शत्रुघ्न सिंह, रविरंजन कुमार, राजेश राहू, गौरव कुमार, नीलम सिन्हा, रंजनारानी गुप्ता राज, रीन्टू कुमार आदि प्रमुख हैं। सभी कार्यक्रम राजेश कुमार सिंह राजू के संयोजन एवं अणुव्रत समिति बाढ़ जिला इकाई बिहार के तत्वावधान में हुए।

अणुव्रत समिति कमलपुर

अणुव्रत समिति कमलपुर (सुपौल-बिहार) ने वर्ष 2009-2010 में अणुव्रत आंदोलन को गति देने हेतु निम्न कार्य किये

● क्षेत्र में हिंसा, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा इत्यादि के खिलाफ आवाज उठाने हेतु नेपाल एवं सुपौल की सार्वजनिक संस्थाओं के साथ मिलकर कार्यक्रम का आयोजन।

● 15 अगस्त 2009 को राष्ट्रीय पर्व पर शराब, गुटखा, तंबाकू, सिगरेट सेवन के बढ़ते प्रचलन को रोकने हेतु अभियान चलाया गया और व्यसनमुक्ति का संकल्प करवाया गया।

● सितंबर 2009 में निर्धन छात्रों के सहायतार्थ, भ्रूणहत्या निषेध, महिला शोषण रोकने हेतु चेतना जागरण का काम किया।

● 2 अक्टूबर 2009 को गांधी जयंती पर युवा एवं बुद्धिजीवियों हेतु शिविर आयोजित कर चेतना जागरण का काम किया। इसमें छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर कुटीर उद्योग, गो-सेवा, औषधीय पौधे लगाने का संकल्प किया गया।

● नवंबर 2009 को नेपाल एवं सुपौल जिला के विभिन्न शिक्षाविद् एवं युवाओं हेतु संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बलात्कार, अपहरण और व्याप्त विषमता को अहिंसक तरीके से रोकने के उपाय खोजे गये।

● दिसंबर 2009 में किसानों को गौमूत्र, प्राकृतिक खाद द्वारा खेती करने के उपाय सुझाए गए।

● जनवरी 2010 में नववर्ष पर भ्रणहत्या निषेध, व्यसनमुक्ति, घरेलू हिंसा, नशाखोरी आदि बुराइयों को दूर करने के लिए भावी कार्यक्रम बनाए गए।

● फरवरी 2010 में खाद्य-पदार्थों में मिलावट एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई गयी।

● मार्च 2010 में अहिंसक समाज निर्माण की दिशा में कारगर कदम उठाये गए।

● अप्रैल 2010 में पर्यावरण शुद्धि अभियान के तहत पानी बचाओ, पृथ्वी बचाओ, बिजली बचाओ जनजागृति अभियान चलाया गया।

● मई 2010 में क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में अणुव्रत आचार संहिता का प्रचार-प्रसार किया गया।

● जून 2010 में आचार्य महाप्रज्ञ के आकस्मिक निधन पर स्मृति सभा का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी एवं उनके बताये गये रास्तों पर चलने का संकल्प लिया गया।

● जुलाई 2010 में महिला एवं पुरुषों के मध्य शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर वार्षिक कार्यक्रमों की भी समीक्षा गयी एवं अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने के क्रम में भावी कार्य-योजना बनायी गयी।

अणुव्रत समिति कोयम्बटूर

● नवंबर 2009 में अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता के क्रम में क्षेत्र के प्रमुख लोगों को आमंत्रित कर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के पूर्व चांसलर डॉ. कोलेंडावेलु, गांधी ग्राम विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चांसलर डॉ. मार्कण्डेय उपस्थित हुए। इस अवसर पर चिन्मय मिशन की प्रमुख कार्यकर्ता डॉ. मीरा कृष्णन्, राजस्थानी संघ के अध्यक्ष गुलाब पेटना, अचलमल सेमलानी तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने शामिल हो बैठक को सफल बनाया। उक्त बैठक में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री निर्मल एम. रांका ने उपस्थित होकर सभी को मिलजुलकर दक्षिण भारत में अणुव्रत की गूंज को पुनः तेजस्विता का आह्वान किया। संचालन नरेन्द्र एम. रांका ने किया।

● दिसंबर 2009 में अणुव्रत समिति कोयम्बटूर ने स्थानीय कारावास के महानिदेशक से मुलाकात कर कैदियों को अणुव्रत आचार संहिता की जानकारी दी और इसकी अवधारणा के अनुरूप चलने का आह्वान किया। कैदियों में नैतिकता और जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता आवश्यक है क्योंकि वे भी हमारे समाज के अंग हैं। इस हेतु भावी कार्यक्रम तैयार किया गया।

● 4 से 8 मार्च 2010 दक्षिणांचल में ''नैतिक पुस्तक मेला'' का भव्य आयोजन किया गया। मेले में 30 पुस्तक विक्रेताओं और देश की प्रमुख संस्थाओं ने भाग लिया। पुस्तक मेले का उद्घाटन क्षेत्र के विख्यात व्यक्तित्व कृष्णराज वानव रायर, अध्यक्ष भारतीय विद्या भवन ने किया। अध्यक्षता अवनाशी लिंगम विश्वविद्यालय के भूतपूर्व चांसलर ने की। विशेष अतिथि प्यारेलाल पीतलिया ने मेले हेतु 50,000 रु. दिए। संचालन मधु बांठिया, ज्योत्सना रांका व सुश्री पटेल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन नरेन्द्र रांका ने किया। इसी क्रम में 7 मार्च को ईरोड से समागत समणीजी के सान्निध्य में कपिल सिंघवी की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। इसमें 75 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम की योजना में संपतकुमार, प्रेमचंद सुराणा आदि का सहयोग रहा। 8 मार्च को समापन कार्यक्रम में माला कातरेला, कामिनी, विनो अरुण, गुलाब मेहता ने विचार रखे।

● 21 मार्च 2010 को अहिंसक समाज रचना के क्रम में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने तिरुपुर में तेरापंथी सभागार का उद्घाटन करते हुए कहा हिंसामुक्त समाज के लिए शांति का वातावरण अपेक्षित है। समणी निदेशिका परिमलप्रज्ञा ने हिंसामुक्त समाज निर्माण पर जोर दिया। तिरूपुर सभा के अध्यक्ष कमलेश भादानी ने स्वागत किया। संचालन अलका भंडारी ने किया और धन्यवाद राजकुमार भंडारी ने ज्ञापित किया।

● जून 2010 में आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन पर सभा भवन में शोक सभा रखी गयी। समिति के अध्यक्ष प्रो. वेदागिरि गणेशन, अविनाशी लिंगम यूनिवर्सिटी कोयम्बटूर के पूर्व चांसलर प्रो. कोलेंडावेलु आदि विशिष्ट व्यक्तियों ने आचार्यश्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। गांधी ग्राम यूनिवर्सिटी के पूर्व चांसलर प्रो. मार्कण्डेय उपस्थित थे। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के सलाहकार सम्पतकुमार, नरेन्द्र रांका, पतंजलि योग पीठ के हरिचरण चतुर्वेदी, पब्लिक प्रोविडेंट फंड कोयम्बटूर के जयशंकर बाबू आदि ने आचार्यश्री के अवदानों पर अपने विचार रखे।

● जुलाई 2010 में किकाणी स्कूल के प्रांगण में बेटी बचाओ संस्था के साथ मिलकर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम की उपस्थिति एवं साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में अणुव्रत संगोष्ठी आयोजित हुई। साध्वीश्री ने समिति द्वारा प्रकाशित की जा रही मासिक पत्रिका 'अणुव्रतम' का उल्लेख किया। डॉ. कलाम की प्रेरणा से कई कॉलेजों एवं संस्थाओं ने 70 जरूरतमंद विद्यार्थियों को उच्च-स्तरीय पढ़ाई के लिए गोद लिया।

● कोयम्बटूर के नेहरू विद्यालय में बच्चों में संस्कार निर्माण व चरित्र निर्माण हेतु कई उपक्रम चलाए गए। इस अवसर पर साध्वी पूनमप्रभा ने शिक्षक एवं विद्यार्थियों को अणुव्रत के वर्गीय नियमों से परिचित करवाया। डॉ. गणेशन ने भी अपने विचार रखे।

● दक्षिण भारत में अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार हेतु तमिल भाषा में ''अणुव्रतम'' मासिक का प्रकाशन अणुव्रत आंदोलन को गति दे रहा है।

अणुव्रत समिति हैदराबाद

● महावीर जयंती पर विकालांगों की सहायतार्थ निःशुल्क जांच चिकित्सा शिविर का आयोजन।

● 2 अक्टूबर 2009 राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख एवं ईसाई समाज के लोगों ने पारस्परिक सौहार्द का परिचय दिया।

● निर्मला बैद एवं हनुमानमल बैद द्वारा क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों में अणुव्रत नियमों की जानकारी हेतु कार्यक्रमों की आयोजना की गयी।

● पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत पानी बचाओ, बिजली बचाओ, पृथ्वी बचाओ आदि के आयोजन।

● विद्यालयों में नशामुक्ति एवं पर्यावरण बचाओ की दिशा में अणुव्रत समिति के तत्वावधान में विविध कार्यक्रमों की आयोजना।

● लायंस क्लब के सहयोग से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन।

● विद्यालयों में जीवन विज्ञान कार्यक्रमों की आयोजना।

● क्षेत्र के स्कूल-कॉलेजों में अणुव्रत परीक्षाओं की आयोजना।

शांति के लिए जरूरी है भावात्मक विकास : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 26 सितम्बर। अणुव्रत समिति सरदारशहर के तत्वावधान में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रथम दिवस ''पर्यावरण दिवस'' के रूप में मनाया गया। आचार्य महाश्रमण ने पानी के दुरुपयोग न करने की प्रेरणा देते हुए नैतिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास को अन्य विकासों के साथ जरूरी बताया। उन्होंने पर्यावरण शुद्धि के लिए पोलीथिन की थैलियों के प्रयोग से बचने पर बल दिया।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मुख्य वक्ता बीकानेर से समागत डॉ. एम.जी. बुडानिया, लिछुराम पुनिया ने भी सभा को संबोधित किया। समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी ने स्वागत भाषण दिया। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन मनीष पटावरी ने किया। अतिथियों का सम्मान बिमलकुमार नाहटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन राजूदेवी चौहान ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस

27 सितंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के दूसरे दिन जीवन विज्ञान दिवस पर भावात्मक विकास की शिक्षा दी। भावात्मक विकास के अभाव में शांति प्राप्त नहीं हो सकती है। शांति और सुख का आधार है भावशुद्धि। उन्होंने कहा बौद्धिक विकास अच्छा है। समाधान बुद्धि से होता है। शुद्ध बुद्धि कामधेनु के समान है। अशुद्ध बुद्धि समस्या उत्पन्न करने वाली होती है, जीवन विज्ञान बुद्धि के साथ शुद्धि की उपयोगिता पर ध्यान खिंचता है। उन्होंने जीवन विज्ञान को प्रेक्षाध्यान और अणुव्रत का मिलाजुला रूप बताया।

जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने कहा जीवन विज्ञान के द्वारा आनन्दपूर्ण जीवन जीने का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त होता है। मुख्य वक्ता ओ.पी. बोहरा, बजरंग जैन ने भी अपने विचार रखे। मुनि नीरजकुमार ने गीत का संगान किया। मुख्य अतिथियों का अणुव्रत समिति सरदारशहर द्वारा साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। संचालन संपतराम सुराणा ने किया।

28 सितंबर। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तीसरे दिन ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में विशेष वक्ता के रूप में बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल, बालकृष्ण कौशिक, भरत गौड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत पापों से बचने का संदेश देता है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने हेतु संयम का संदेश दिया। जब आचार्य महाप्रज्ञ के पास अहिंसा यात्रा के दौरान गुजरात में हिन्दू, मुस्लिम बैठते थे और उनको शांति का संदेश दिया जाता था तो ऐसा लगता, मानो एक पिता अपने बच्चों को समझा रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा जो लोग सत्ता में आयें वे सेवा करने के उद्देश्य से आयें और जनता की सेवा करने का ही मुख्य उद्देश्य उनके सामने रहे। एक व्यक्ति व्यापार करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य वस्तु का वितरण कर सेवा करने का भाव होना चाहिए। दूसरा है परिवार के भरण-पोषण के लिए धन अर्जन करना। जहां केवल धन अर्जन ही मुख्य बन जाता है और सेवा दूसरा तो वहां फिर अणुव्रत भी रोने लग जाता है। इसी तरह एक शिक्षक का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में अच्छे संस्कार देना, डॉक्टर का मुख्य उद्देश्य रोगी की सेवा करना, एक वकील का मुख्य उद्देश्य ईमानदारी के साथ न्याय करना अणुव्रत यही संदेश देता है। सेवा करने वाले व्यक्ति में नाम, ख्याति की भावना न रहे केवल सेवा की भावना रहे, तो उसके जीवन में अणुव्रत अवतरित होता है, फिर चाहे वह किसी भी जाति-संप्रदाय को मानने वाला व्यक्ति हो।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने भी अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल ने ''सौंप दिया इस जीवन का अब भार तुम्हारे हाथों में'' गीत का संगान करते हुए अपने विचार रखे। मुख्य अतिथियों का स्वागत बिमलकुमार नाहटा, रावतमल सैनी ने मोमेंटो एवं साहित्य द्वारा किया संचालन सपना लूणिया ने किया।

29 सितंबर। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चतुर्थ दिवस ''साम्प्रदायिक सौहार्द'' दिवस पर विभिन्न धर्मगुरुओं ने जुटकर देश में अमन, चैन बनाए रखने का संदेश दिया। जैन, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम आदि धर्मों के गुरुओं ने देश की जनता से आह्वान किया कि अयोध्या पर कोर्ट का फैसला कुछ भी आये, देश में शांति रहनी चाहिए। देश में मंदिर, मस्जिद जरूरी नहीं बल्कि जरूरी है मुल्क में शांति रहे। सभी धर्मगुरुओं ने अणुव्रत समिति सरदारशहर द्वारा आयोजित ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' को आज के लिए सबसे ज्यादा जरूरी बताया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा भारत एक ऐसा देश है जहां पर अनेकता, भिन्नता देखने को मिलती है। यहां पर अनेक जातियों के लोग विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोग हैं। अनेक संप्रदाय हैं। इस अनेकता में भी एकता नजर आती है, क्योंकि हम सब पहले भारतीय हैं, मानव हैं। हाथ की अंगुलियां अलग-अलग आकार की होती हैं, पर सब एक ही हाथ से जुड़ी हुई होती हैं। जब सब मिलकर कार्य करती है तभी कार्य सफल होता है। वैसे ही संप्रदाय अलग-अलग हो सकते हैं पर सभी एक धर्म अहिंसा मानव धर्म से जुड़े हुए हैं। सभी प्राणियों में अहिंसा का विकास होना चाहिए। जहां अहिंसा, अनुकंपा और दया की चेतना है, वहां प्रेम रहता है, अनुकंपा, अहिंसा की चेतना मानव-मानव में जाग जाये तो सांप्रदायिक सौहार्द संभव हो जायेगा।

इस्लाम धर्म के प्रतिनिधि मौलवी इब्राहीम ने कहा धर्म के नाम पर आज जो नफरत फैलाई जा रही है, वह सियासत का कार्य है, मजहब का नहीं। धर्म इंसानियत सिखाता है, मुल्क से मोहब्बत करना सिखाता है। अयोध्या में राम मंदिर बने या न बने, पर मुल्क में शांति बनी रहनी चाहिए।

मुंबई से समागत बौद्ध धर्म के भदंत राहुल बोधि ने कहा कि धर्म मैत्री, शांति और प्रेम का वातावरण निर्माण करता है, पर कुछ लोग जो गलत मतलब निकालकर भय का वातावरण फैलाते हैं, द्वेष के भाव पैदा करते हैं और समाज को लड़ाने का कार्य करते हैं। वे इंसानियत के दुश्मन हैं।

मुंबई से समागत ईसाई धर्म के फादर माइकल रिजोरिया ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने सांप्रदायिक सौहार्द का दीप जलाया। आज हमें उनका स्मरण करते हुए अणुव्रत का एक नियम स्वीकार करें। हम स्वयं शांति रखें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा अणुव्रत सर्व संप्रदायों के प्रति सद्भाव रखने की प्रेरणा देता है। सौहार्द की अपेक्षा हमेशा रहती है। प्रारंभ में मीनाक्षी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अतिथियों का मोमेंटो एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन राजू देवी चौहान ने किया।

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में सरदारशहर में विविध कार्यक्रम

सरदारशहर, १५ सितम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अनेक विद्यालयों के छात्र तथा अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र टमकोर के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा 'विद्या विनय के द्वारा शोभित होती है। अध्यात्म विद्या से विनय भाव का विकास होता है। यदि विद्यार्थी के जीवन में विद्या, विनय और विवेक की त्रिवेणी स्थापित हो जाती है तो उसके जीवन में पवित्रता आ सकती है। अणुव्रत शिक्षक संसद के कार्यकर्ता अहिंसा प्रशिक्षण के कार्य में संलग्न हैं। विद्यार्थियों के निर्माण की ओर ध्यान देना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।'

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र टमकोर के छात्रों ने गीत का संगान किया। लाडनूं महिला मण्डल ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं की प्रस्तुति दी। नगरपालिकाध्यक्ष बच्छराज नाहटा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष कमल खटेड़, जैविभा मान्य विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक डूंगरमलजी बागरेचा आदि ने गुरुदेव तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष लाडनूं में मनाने की प्रार्थना की। मुनि कुमारश्रमण एवं मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने विचार रखे।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने लाडनूंवासियों की प्रार्थना को समयोचित बताते हुए कहा 'जैन विश्वभारती कामधेनु है। उसे दुह कर उसके दूध से अपने शरीर को पुष्ट बनाकर आप पूरे देश की यात्रा करें, अच्छा काम करें।' भानुकुमार नाहटा ने छापरवासियों की प्रार्थना को सशक्त स्वर में प्रस्तुत किया। जंवरीमल बैंगानी आदि ने बीदासर चातुर्मास की प्रार्थना की। गांधी सेवा सदन राजसमन्द की ओर से डूंगरसिंह कर्णावट ने अपनी प्रार्थना रखी। इस अवसर पर आचार्यवर ने दायित्व प्राप्ति दिवस (आचार्य पदारोहण दिवस) वैशाख शुक्ला १०, वि.सं. २०६८ को गांधी सेवा सदन राजसमन्द में आयोजित करने की घोषणा की।

विकास महोत्सव

१६ सितम्बर २०१०, भाद्रव शुक्ला नवमी का पावन दिन। विकास महोत्सव की स्थापना दिवस पर आचार्य महाश्रमण ने कहा 'आज हम धर्मसंघ के १७वें विकास महोत्सव को मना रहे हैं। आज मुझे उन दोनों गुरुओं आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का स्मरण हो रहा है। विकास महोत्सव के साथ उन दोनों का योग है। गुरुदेव तुलसी के समय से हम इसे मनाते आ रहे हैं। विकास महोत्सव आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन की फलश्रुति है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा हस्ताक्षरित पत्र इस विकास महोत्सव का आधार है।

आचार्य महाश्रमण ने परिपत्र का वाचन करते हुए कहा विकास की दृष्टि से इस परिपत्र में बहुत गरिमापूर्ण दिशा-दर्शन है। इस परिपत्र को विकास का आधार पत्र माना जा सकता है। हमारे धर्मसंघ में मर्यादा और अनुशासन का सर्वाधिक महत्त्व रहा है और वह होना भी चाहिए। इन दोनों के साथ विकास का क्रम भी चलते रहना चाहिए। सम्यक ज्ञान, सम्यक श्रद्धा, सम्यक आचार, सम्यक वीर्य, स्वाध्याय, ध्यान और परोपकार का क्रम चलता रहे।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा गुरुदेव तुलसी के चरणों में मुझे शिक्षा मिली। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ तो मैंने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। उनके शासनकाल में मेन्युअल तैयार किया गया, जिसका नाम 'अनुशासन संहिता' रखा गया। आचार्यवर ने उसे संघ में लागू कर दिया। अनुशासन संहिता भी हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनेक प्रश्नों का उत्तर इससे प्राप्त किया जा सकता है। संघ की व्यवस्थाओं के बारे में इससे जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

आज के कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के सारगर्भित वक्तव्य हुए। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने **'महाप्रज्ञ ने कहा'** का ३९वां भाग पूज्य आचार्यवर को उपहृत किया। इस भाग का पुरोवाक आचार्य महाश्रमण ने लिखा है। पुस्तक अशोककुमार चोपड़ा (गंगाशहर-अहमदाबाद) के सौजन्य से प्रकाशित है। इस अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान गंगाशहर द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'प्रस्तव' का विमोचन हुआ। शुभू पटवा ने 'प्रस्तव' के संदर्भ में विशद जानकारी दी। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष सुमेरमल दफ्तरी, संपादक आसकरण पारख आदि ने स्मारिका की प्रथम प्रति पूज्यवर को उपहृत की।

भीखमचन्द नखत ने अणुव्रत शिक्षक संसद के हितैषी सहयोग योजना से जुड़ने वाले महानुभावों के सहमति पत्र समर्पित किए। अखिल भारतीय महिला मण्डल की ओर से सूरजदेवी बरड़िया ने 'श्राविका गौरव' अलंकरण के लिए सायरदेवी बैंगानी तथा प्रतिभा पुरस्कार के लिए कल्पना जैन के नाम की घोषणा की। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

चुनाव चयन

● अणुव्रत समिति राजसमंद

अध्यक्ष	:	श्री ललित कुमार बडोला
उपाध्यक्ष	:	श्री फतहलाल गुर्जर अनोखा
		श्री जीवन प्रकाश मादरेचा
मंत्री	:	श्री मदनलाल धोका
संयुक्त मंत्री	:	श्री दिनेश चन्द्र कावड़िया
		श्री महेश चन्द्र टुकलिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री चतर सूर्या
संगठन मंत्री	:	श्री विनोद बोहरा
सदस्य	:	श्री दुर्गा शंकर यादव (मधु), कांकरोली
		श्री मदनलाल मादरेचा, राजसमन्द
		श्री आबिद अली, राजसमन्द
		श्रीमती लाड़ मेहता, राजनगर
		श्रीमती मंजू वागरेचा, कांकरोली
पदेन सदस्य	:	अध्यक्ष-भिक्षु बोधि स्थल, राजसमंद
		अध्यक्ष-तेरापंथी सभा, कांकरोली
		अध्यक्षा-महिला मंडल, राजसमंद
		अध्यक्षा-महिला मंडल, कांकरोली
संरक्षक	:	श्री बाल कृष्ण गर्ग (बालक)
		श्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट
		श्री जीतमल कच्छारा

www.terapanthinfo.com

अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली-दिल्ली में द्विदिवसीय अहिंसा समवाय अणुव्रत कार्यशाला

भोगवाद के लिए हिंसा बनी साधन : मुनि महेन्द्रकुमार

नई दिल्ली, 25 सितंबर। अणुव्रत महासमिति एवं अध्यात्म साधना केन्द्र की संयुक्त भागीदारिता में आयोजित अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली में द्विदिवसीय अहिंसा समवाय अणुव्रत कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने कहा--कई समस्याएं जीवन में ऐसी हैं, जिनका संबंध हमारी मानवीय दुर्बलताओं से है। संस्कारों के कारण व्यक्ति हिंसा, झूठ, कपट, अत्याचार की तरफ प्रवृत होता है। हमारे संस्कारों के परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ होगी तभी समाज व्यवस्था में परिवर्तन होगा। मानवीय दुर्बलताएं संस्कारों के कारण हैं। इनके शोधन के लिए उन प्रक्रियाओं को खोजना होगा जिससे संस्कार रूपांतरित हो सके। इसके लिए शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा ही हम समस्याओं के मूल तत्व तक पहुंच सकते हैं। शिक्षा के द्वारा हम व्यक्ति में संस्कारों और चरित्र का निर्माण कर सकते हैं। इसके लिए अध्यापकों की चेतना में परिवर्तन होना चाहिए।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने कहा--संस्कारहीनता के कारण ही आज नई पीढ़ी उच्छृंखल एवं हिंसक बन रही है। माता-पिता का यह दायित्व है कि वे बराबर ध्यान दें कि संतान में कैसे संस्कार आ रहे हैं जो भविष्य को प्रभावित करेंगे। आज माता-पिता की उपेक्षा के कारण ही नई पीढ़ी गलत मार्ग पर जा रही है और घर-परिवार-राष्ट्र हिंसाग्रस्त हो रहे हैं। परिवारों में आपसी सामंजस्य लाने के लिए अहिंसा प्रशिक्षण आवश्यक है। बिना सामंजस्य एवं सहिष्णुता के अहिंसा संभव नहीं है यही अणुव्रत का दर्शन है। आज व्यक्ति भ्रांति में जी रहा है और स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता पनप रही है जिससे घरेलू हिंसा का दंश घर-घर पहुंच रहा है।

'हिंसा के बढ़ते तेवर, घरेलू हिंसा तथा अहिंसा प्रशिक्षण' विषय की प्रस्तुति करते हुए विश्व मानव मूल्य संघ के महामंत्री एवं भारत सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार प्रो. सोमदत्त दीक्षित ने कहा--अहिंसा से बड़ा धर्म हो ही नहीं सकता। आज परिवारों में हिंसा बढ़ रही है, परिजन एक-दूसरे को मार रहे हैं। यह चिंतनीय स्थिति है। इसका मुख्य कारण संस्कारों का बिखरना और भोगवाद का हावी होना है। आचरण पहला चरण है व्यक्ति, समाज, राष्ट्र निर्माण का और आचरण बनता है संस्कारों से। वर्तमान में हम सभी अनैतिक आचरण में लिप्त हैं। क्या बड़ा और आदर्श पुरुष वही है जो भ्रष्ट आचरण करे, धूम्रपान करे, शराब पीएं? आज नैतिकता शराब में घुल गई है, जिस कारण हिंसा का प्रतिशत बढ़ा है। नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण हमारे मस्तिष्क में नकारात्मक भावों का जन्म हो रहा है और मनुष्य के मस्तिष्क में हिंसा जन्म ले रही है।

पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं भारतीय संस्कृति संस्थान के संस्थापक डॉ. धर्मपाल मैनी ने कहा--व्यक्ति का पहला कार्य है अपने आप को जानें कि स्वयं के लिए तथा समाज के लिए मुझे क्या करना है। यह अहसास होते ही हमारा मनुष्यत्व जाग जायेगा और हम सद्आचरण, अहिंसा, सत्य की तरफ लौट जायेंगे। मीडिया जिस विषाक्त वातावरण का प्रचार कर रहा है उससे व्यक्ति - समाज टूट रहा है, संस्कार बिखर रहे हैं और संस्कृति नष्ट हो रही है। बिखरते संस्कार और तेजी से विकृत हो रही संस्कृति ने घरेलू हिंसा को मुखर कर दिया है।

स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पांडेय ने विषय प्रस्तुति वक्तव्य में कहा--हिंसा के विविध रूप हैं। हिंसा के इन रूपों में युद्ध, आतंकवाद, शोषण, द्वेष को पहचान कर हम अहिंसा का अनुशीलन करें और ऐसी परिस्थिति बनाएं, जिससे मानवता का उदय हो।

योग विशेषज्ञ डॉ. सूरजमोहन ठाकुर ने कहा--जब मनुष्य में अहिंसा की भावना प्रतिष्ठापित हो जाती है तो हिंसक भी हिंसा त्याग देता है। अध्यात्म साधना केन्द्र के निदेशक स्वामी धर्मानंद ने योग का व्यावहारिक प्रशिक्षण देते हुए कहा--हमारी शक्ति जागनी चाहिए और शक्ति को जगाने के लिए आवश्यक है मन को नियंत्रित करना। संकल्पशक्ति के द्वारा हम ध्यान की तरफ प्रवृत्त होते हैं और ध्यान हमारे मन को नियंत्रित करता है, जिससे हिंसा के भाव टूटते हैं।

दूरदर्शन के पूर्व निदेशक मधुकर लेले ने हिंसा बढ़ने के कारणों की चर्चा करते हुए कहा-- असीमित भोगवाद के लिए आज हिंसा को साधन बनाया जा रहा है। क्रोध-ईर्ष्या-द्वेष ये सभी हिंसा की प्रवृत्तियां हैं, जिनका विस्तार तेजी से हुआ है। आज मीडिया स्वतंत्रता के नाम पर जो दिखा रहा है वह स्वच्छंदता है और उससे हिंसा को उद्दीपन मिल रहा है।

द्विदिवसीय कार्यशाला में चार सत्र हुए जिनका संयोजन डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने करते हुए कहा-- नर्सरी एवं प्राइमरी कक्षाओं से हिंसा के प्रतीक खिलौनों को हटाना होगा तभी बालपीढ़ी की सोच सकारात्मक बनेगी और अहिंसा सर्वत्र फैलेगी।

कार्यशाला में प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार, मुनि अमृतकुमार, प्रो. सोमदत्त दीक्षित, डॉ. धर्मपाल मैनी, कैप्टन चंद्रमोहन व्यास, डॉ. एम.एम. बजाज, डॉ. सूरजमोहन ठाकुर, डॉ. अंजू, स्वामी धर्मानंद, मधुकर लेले, पत्रकार डॉ. शुभंकर बनर्जी, पत्रकार राकेश श्रीवास्तव, पर्यावरणविद् प्रभुनारायण, ईश्वरदयाल बंसल, बाल साहित्यकार रजनीकांत शुक्ल, लक्ष्मीदास महामंत्री हरिजन सेवक संघ, सुखबीर सिंह सैनी, डॉ. बी.एन. पांडेय, शिक्षिका पुष्पा शर्मा की प्रमुख उपस्थिति रही। कार्यशाला में 65 व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है–नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2.	श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3.	श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4.	श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5.	श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6.	श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2.	श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
3.	श्री जसराज बुरड़	जसोल	4.	श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर
5.	श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता	6.	श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव
7.	श्री रूपचंद सुराना	गुवाहाटी	8.	श्री मूलचंद पारख (वैरायटी हॉल)	ऊंटी

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2.	श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3.	श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4.	श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5.	श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6.	श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7.	श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा	8.	श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
9.	श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर	10.	श्री सुबोध कोठारी	गुवाहाटी
11.	श्री जयसिंह कुंडलिया	सिलीगुडी	11.	श्री राजेन्द्र सेठिया	गंगाशहर
12.	श्री सी.एल. सरावगी	झांसी			

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

www.terapanthinfo.com